

सामान्य हिन्दी

संधि

⇒ परिचय

संधि शब्द का हम बहुत पहले से सुनते आए हैं, जो कहीं इतिहास में राजाओं या राज्यों के मध्य प्रयुक्त होती थी, तो कहीं युद्ध में। वहाँ भी संधि का अर्थ मिलान अर्थात् दो राजाओं, राज्यों के एक साथ मिलने का द्योतक था।

हिन्दी में भी संधि को इसी प्रकार परन्तु थोड़ी भिनता के साथ प्रयोग किया जाता है। यहाँ राजा या राज्य नहीं वरन् दो शब्दों के जोड़ या मिलान को संधि कहते हैं।

⇒ परिभाषा

दो वर्णों के परस्पर योग या मेल से जिस विकार का जन्म हो, उस विकार को 'संधि' कहते हैं। अर्थात् जब दो वर्ण परस्पर मिलकर कोई विकार या नए अर्थ की रचना करे उसे 'संधि' कहा जाता है।

ठीक इसी प्रकार वर्ण या अक्षर के मिलावट को समझकर वर्ण को पृथक करते हुए पदों का पृथक करने की प्रक्रिया 'संधि-विच्छेद' कहलाती है अर्थात् संधि से निर्मित शब्दों को उनके पहले के रूप में तोड़ना 'संधि-विच्छेद' होता है।

संधि में पहले शब्द का अंतिम अक्षर तथा दूसरे शब्द के प्रथम अक्षर का मेल होता है।

जैसे— सम् + हार = संहार

तत् + हित = तद्धित] इसे संधि कहते हैं।

च्छेद = पद् + छेद

तल्लीन = तत् + लीन } शब्दों को उनके पूर्व रूप में तोड़ा गया है अर्थात् 'संधि-विच्छेद' हुआ

शब्द निर्माण में उपसर्ग, समास तथा प्रत्यय की भाँति संधि का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। हालांकि संधि द्वारा संयुक्त शब्द लिखने की परम्परा हिन्दी की नहीं वरन् संस्कृत का चलन है। चूंकि संस्कृत के बहुत से पद व तत्सम हिन्दी में सम्मिलित हो गए; अतः संस्कृत के संधि संबंधी नियमों को हिन्दी व्याकरण में ग्रहण किया गया।

⇒ संधि के प्रकार

वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद होते हैं—

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है—“जब दो स्वरों के परस्पर योग वा मेल से जो विकार या शब्द के रूप में बदलाव आए, उसे 'स्वरसंधि' कहा है।”

जैसे— भोजन + आलय = भोजनालय

[यहाँ स्वर अ + आ का मेल हुआ; अतः स्वर संधि है।]

स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं—

(क) दीर्घ स्वर संधि	(ख) गुण स्वर संधि	(ग) वृद्धि संधि
(घ) यण स्वर संधि	(इ) अयादि स्वर संधि	
स्वर संधि		

दीर्घ स्वर संधि	गुण स्वर संधि	वृद्धि स्वर संधि	यण स्वर संधि	अयादि स्वर संधि
--------------------	------------------	---------------------	-----------------	--------------------

⇒ (क) दीर्घ स्वर संधि

दो समान वर्ण स्वर के योग या मेल से दीर्घ स्वर संधि बनती है अर्थात् पहले शब्द के अन्तिम वर्ण में यदि हस्त या दीर्घ स्वर आए तब शब्द के पहले वर्ण में यदि समान वर्ण हो, तो दोनों के मेल से दीर्घ स्वर बनता है। इसे 'दीर्घ स्वर संधि' कहते हैं।

नियम— अगर प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ' तथा 'ऋ' हो और दूसरे शब्द को प्रथम वर्ण में यदि समान वर्ण ('अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ') का हस्त या दीर्घ ('आ, ई, ऊ, ऋ') हो जाता है।

जैसे—

अ + अ = आ, अ + आ = आ, आ + अ = आ, आ + आ = आ

इ + इ = ई, इ + ई = ई, ई + इ = ई, ई + ई = ई

उ + उ = ऊ, उ + ऊ = ऊ, ऊ + उ = ऊ, ऊ + ऊ = ऊ

$\text{ऋ} + \text{ऋ} = \text{ऋ}$

उदाहरण— अन्न + अभाव = अन्नाभाव

गिरि + ईश = गिरीश

पितृ + ऋण = पितृण

इसी प्रकार

[P. N.] + शब्द जोड़ना है

[अ + अ = आ]

[इ + इ = ई]

[ऋ + ऋ = ऋ]

⇒ (ख) गुण स्वर संधि

यदि पहले शब्द के अन्तिम वर्ण में 'अ' या 'आ' हो तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ हो, तो इनके मेल से उत्पन्न विकार को 'गुण स्वर संधि' कहते हैं।

नियम— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ई' या 'ई' आए तो मेल के पश्चात् 'ए' हो जाएगा। इसी प्रकार 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' का ओ तथा 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' आए तो 'अर्' हो जाता है।

जैसे—

अ + इ = ए, अ + ई = ए, आ + इ = ए, आ + ई = ए

अ + उ = ओ, अ + ऊ = ओ, आ + उ = ओ, आ + ऊ = ओ

अ + ऋ = अर्, आ + ऋ = अर्

उदाहरण— देव + ईश = देवेश अ + ई = ए

महा + उत्सव = महोत्सव आ + उ = ओ

महा + ऋषि = महर्षि आ + ऋ = अर्

इसी प्रकार

[P. N.]

⇒ (ग) वृद्धि स्वर संधि

यदि पहले शब्द के अन्तिम वर्ण में 'अ' या 'आ' के बाद दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में यदि ए, ऐ, ओ और औ' आए तो इनके मेल से उत्पन्न विकार को 'वृद्धि स्वर संधि' कहते हैं। अर्थात् वृद्धि हो जाती है।

नियम— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए, तो वहाँ उनके स्थान पर 'ए' हो जाता है। इसी प्रकार 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो 'औ' हो जाता है।

जैसे— अ + ए = ए, अ + ऐ = ऐ, आ + ए = ए, औ + ऐ = ऐ

अ + ओ = ओ, अ + औ = औ, आ + ओ, आ + औ = औ

उदाहरण— नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य [अ + ऐ = ए]

महा + औषध = महौषध [आ + औ = औ]

सदा + एव = सदैव [आ + ए = ए]

⇒ यण स्वर संधि

यदि प्रथम शब्द के अन्त में इ, ई, उ, ऊ और 'ऋ' हो तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में कोई भिन्न स्वर आए, तो इनके मेल से उत्पन्न विकार को 'यण स्वर संधि' कहते हैं।

नियम— यदि इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद भिन्न स्वर हों, तो 'इ-ई' के स्थान पर य, या, यु, यू, ये, यै, यो और यौ हो जाता है तथा 'उ-ऊ' के स्थान पर

पर व, वा, वि, वी, वे, वो, वौ हो जाता है। इसी प्रकार 'ऋ' का र, ए रे, ऐ हो जाता है।

जैसे— इ + अ = य, इ + आ = या, इ + उ = यु, इ + ऊ = यू, इ + ए = ये,

ई + अ = य, ई + आ = या, ई + उ = यु, ई + ऊ = यू, ई + ऐ = यै,

उ + अ = व, उ + आ = वा, उ + उ = वि, उ + ई = वी, उ + ऊ = वू, उ + ए = वे

ऋ + अ = र, ऋ + आ = रा, ऋ + उ = रे, ऋ + ऊ = रू

उदाहरण— अति + ऊष्म = अत्यूष्म [इ + ऊ = यू]

गुरु + ओदन = गुर्वोदन [उ + ओ = वो]

पितृ + आदेश = पित्रादेश [ऋ + आ = रा]

इसी प्रकार

⇒ (इ) अयादि स्वर संधि

यदि प्रथम शब्द के अन्तिम वर्ण में ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण कोई भिन्न स्वर हों तो इनके मेल से उत्पन्न विकार को 'अयादि स्वर संधि' कहते हैं।

नियम— यदि प्रथम शब्द के अन्त में ए, ऐ, ओ, औ हो तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में भिन्न स्वर हों तो इनके स्थान पर क्रमशः 'अय्', 'आय्', अब तथा 'आव्', हो जाता है।

जैसे— ए + अ = अय्, ए + आ = आय्, ओ + अ = अव्, औ + अ = आव्

ऐ + ई = आर्यों, ओ + ई = आवी, औ + उ = आवु, औ + ई = आवी

उदाहरण—

नै + इका = नायिका

[ऐ + इ = नायि]

पो + इत्र = पवित्र

[ओ + इ = अवि]

नौ + इक = नाविक

[औ + इ = आवि]

भौ + इनी = भाविनी

[औ + इ = आविं]

भौ + उक = भावुक

[औ + उ = आवु]

इसी प्रकार

⇒ हिन्दी में ये शब्द रूढ़ माने जाते हैं अतः ए संधि प्रकरण में नहीं आते हैं।

2. व्यंजन संधि

व्यंजन से व्यंजन या स्वर के योग से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को 'व्यंजन संधि' कहते हैं।

अर्थात् यदि शब्द का अंतिम वर्ण व्यंजन हो तथा दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण व्यंजन या स्वर हो तो उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे

रोजगार पब्लिकेशन

'व्यंजन संधि' की संज्ञा दी गई है। व्यंजन संधि को संस्कृत में 'हल् संधि' भी कहते हैं।

जैसे— चित् + मय = चिन्मय

जगत् + ईश = जगदीश

सत् + धर्म = सद्धर्म

यहाँ व्यंजन वर्ण के बाद व्यंजन और स्वर वर्ण के मेल से विकार हुआ, अतः यह 'व्यंजन संधि' है।

❖ व्यंजन का वास्तविक रूप 'हलंत' होता है।

व्यंजन संधि संबंधी नियम

व्यंजन संबंधी कुछ नियम बताए गए हैं, जिनके अभ्यास से व्यंजन-संधि संबंधी त्रुटि दूर किया जा सकता है।

⇒ नियम- (i)- क्, च्, ट्, त्, प् वर्ग संबंधी

यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण में क्, च्, ट्, त्, प् हो तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में इनमें से किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ) अथवा य, र, ल, व हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर इसी वर्ग का तृतीय वर्ण क्रमशः ग, ज, झ, द, ब् हो जाएगा।

उदाहरण - दिक् + विजय = दिविजय [क् + व = ग → क वर्ग]

षट् → रिपु = षट्टिपु [ट् + र = द → ट वर्ग]

भगवत् + भजन = भगवद्भजन [त् + भ = द → त वर्ग]

सत् + भावना = सद्भावना [त् + भ = द → त वर्ग]

सत् + गुण = सद्गुण [त् + ग = द → त वर्ग]

इसी प्रकार

⇒ नियम - (ii) क्, च्, ट्, त्, प् वर्ग के पंचम वर्ण संबंधी

यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण में क्, च्, ट्, त्, प् के बाद दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण 'न' या 'म' हो, तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर इनके ही वर्ग अर्थात् स्वयं के वर्ग का पंचम वर्ण [झ्, झ, ण्, न्, म्] हो जाता है।

उदाहरण -

उत् + मत् = उन्मत् [त् + म = न → त वर्ग]

षट् + मुख = षण्मुख [ट् + म = ण् → ट वर्ग]

तत् + मय = तन्मय [त् + म = न् → त वर्ग]

इसी प्रकार →

⇒ नियम- (iii) 'त्-द्' संबंधी

यहाँ 'त्-द्' संबंधी कुछ नियम बताए गए हैं, जिससे 'त्' या 'द्' के संबंधी संधि नियम का स्पष्टीकरण हो सकेगा—

[अ] यदि 'त्' या 'द्' के पश्चात् 'च' या 'छ' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'च्' हो जाएगा—

उदाहरण- उत् + चरित् = उच्चरित् [त् + च = च्]

जगत् + छाया = जगच्छाया [त् + छ = च्]

[P. N]

[आ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त्' या 'द्' के बाद 'ज' अथवा 'झ' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'ज्' हो जाएगा—

उदाहरण-

जगत् + जननी = जगज्जननी [त् + ज = ज्]

विपद् + जाल = विपज्जाल [द् + ज = ज्]

सत् + जन = सज्जन [त् + ज = ज्]

उत् + ज्वल = उज्ज्वल [त् + ज = ज्]

उत् + झटिल = उज्ज्वटिल [त् + झ = झ्]

उत् + झटिका = उज्ज्वटिका [त् + झ = झ्]

[इ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त् - द्' के बाद 'ट' या 'ट्' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'ट्' हो जाएगा—

उदाहरण-

सत् + टीका = सट्टीका/ सट्टीका [त् + ट = ट्]

तत् + टीका = तट्टीका/ तट्टीका [त् + ट = ट्]

वृहत् + टीका = वृहट्टीका/ वृहट्टीका [त् + ट = ट्]

मित् + टी = मिट्टी/ मिट्टी [त् + ट = ट्]

[ई] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त् - द्' के बाद 'ह' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'द्' तथा 'ह' के स्थान पर 'ध्' हो जाएगा—

उदाहरण-

उत् + हत् = उद्धत् [त् + ह = ध् + द = ध्]

पद् + हति = पद्धति [त् + ह = ध् + द = ध्]

उत् + हत् = उद्धत् [त् + ह = ध् + द = ध्]

तत् + हित् = तद्धित् [त् + ह = ध् + द = ध्]

उत् + हार = उद्धार [त् + ह = ध् + द = ध्]

उत् + हरण = उद्धरण [त् + ह = ध् + द = ध्]

[उ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त् - द्' के बाद 'ड' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'इ' हो जाएगा—

उदाहरण-

भवत् + डमरु = भवद्डमरु/ भवद्धमरु [त् + ड = इ]

उत् + डीन = उइडीन/ उइडीन [त् + ड = इ]

वृहत् + डमरु = वृहड्डमरु/ वृहड्धमरु [त् + ड = इ]

उत् + डयन = उइडयन/ उइडयन [त् + ड = इ]

[ऊ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त् - द्' के बाद 'ल' आए, तो 'त्-द्' के स्थान पर 'ल्' हो जाएगा—

उदाहरण-

शरत् + लीला = शरल्लीला [त् + ल = ल्]

उत् + लास = उल्लास [त् + ल = ल्]

उत् + लंघन = उल्लंघन [त् + ल = ल्]

तत् + लीन = तल्लीन [त् + ल = ल्]

उत् + लेख = उल्लेख [त् + ल = ल्]

❖ न् + ल = अनुनासिक के साथ 'ल' हो जाता है—

महान्+लाभ=महाल्लाभ

[न्+ल=ल् अनुनासिक]

(ऋ) यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'त्-द' के बाद 'श' आए, तो 'त्-द' का 'च' और श का 'छ' हो जाएगा अर्थात् (च्छ)

उदाहरण-

उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट

[उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट]

सत्+शोसन=सच्छाशन

[त्+श=च्छ]

उत्+श्वास=उच्छवाश

[त्+श=च्छ]

उत्+श्रेष्ठल=उच्छ्रेष्ठल

[त्+श=च्छ]

शरत्+शशि=शरच्छशि

[त्+श=च्छ]

सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र

[त्+श=च्छ]

⇒ नियम- (iv) 'म' संबंधी

[अ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'म्' के बाद 'क' से लेकर 'म' तक वर्ण आए, तो 'म्' के स्थान पर उसी वर्ण का अनुस्वार (पंचमाक्षर) हो जाएगा—

उदाहरण-

सम्+कलन=संकलन [म्+क=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+चय=संचय/ सन्चय [म्+च=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+कल्प=संकल्प [म्+क=न् या अनुस्वार बिंदु]

किम्+चित्=किंचित्/किचित् [म्+च=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+गति=संगति [म्+ग=न् या अनुस्वार बिंदु]

परम्+तु=परंतु/ परन्तु [म्+त=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+पूर्ण=सम्पूर्ण/ संपूर्ण [म्+प=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+तोष=संतोष/ सन्तोष [म्+त=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+ताप=संताप/ सन्ताप [म्+त=न् या अनुस्वार बिंदु]

पम्+चम=पंचम/ पञ्चम [म्+च=न् या अनुस्वार बिंदु]

सम्+क्रान्ति=संपर्क/ सम्पर्क [म्+क=न् या अनुस्वार बिंदु]

[आ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'म्' के बाद य, र, ल, व, श, व, स, ह आए, तो 'म्' अनुस्वार में बदल जाएगा—

उदाहरण-

सम्+यम=संयम

सम्+योग=संयोग

सम्+हार=संहार

सम्+वाद=संवाद

सम्+वेग=संवेग

सम्+रक्षक=संरक्षक

सम्+शय=संशय

सम्+लाप=संलाप

किम्+वा=किंवा

सम्+सार=संसार

सम्+विधान=संविधान

यहाँ संधि में हमने देखा कि किस तरह 'म्' के बाद य, र, ल, व, श, व, स, ह का अनुस्वार (—) हुआ।

[इ] यदि प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण 'म्' के बाद 'म' आए, तो कोई परिवर्तन नहीं होता है अर्थात् 'म्' अपने पूर्व स्थिति में ही रहता है।

• नोट - परन्तु सुविधा के लिए वर्तमान में अनुस्वार का प्रयोग करने लगे हैं।

उदाहरण-

सम्+मान=सम्मान [म्+म=पूर्ववत् स्थिति]

सम्+मति=सम्मति [म्+म=पूर्ववत् स्थिति]

सम्+मोहन=सम्मोहन [म्+म=पूर्ववत् स्थिति]

सम्+मोहित=सम्मोहित [म्+म=पूर्ववत् स्थिति]

⇒ नियम (v) 'द्य' संबंधी

यदि प्रथम शब्द के अंतिम में कोई स्वर हो तथा दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण 'छ' हो, तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाएगा—

उदाहरण-

परि+छेद=परिछेद

आ+छादन=आच्छादन

अव+छेद=अवच्छेद

वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया

छत्र+छाया=छत्रच्छाया

स्व+छंद=स्वच्छंद

अनु+छेद=अनुच्छेद

वि+छेद=विच्छेद

शाला+छादन=शालाच्छादन

तरु+छाया=तरुच्छाया

जैसा कि हम जानते हैं कि व्यंजन वर्ण का मूल रूप हलन्त में होता है, स्वर जुङकर उन्हें पूर्ण करते हैं अर्थात् स्वर के मिलने से हलन्त हट जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रथम शब्दों के हलन्त नहीं है, अर्थात् प्रत्येक में स्वर की उपस्थिति है। अतः 'छ' का 'च्छ' हो गया।

⇒ नियम (vi) ऋ, र, ष संबंधी

यदि शब्द के अन्त में ऋ, र, ष के बाद 'न' आए, भले ही बीच में कोई स्वर या व्यंजन के क वर्ग, प वर्ग, अथवा य, व, ह हो, तो 'न' का 'ण' हो जाएगा। यहाँ परिवर्तन 'न' में 'ण' के रूप में होगा।

उदाहरण-

परि+नाम=परिणाम

प्र+मान=प्रमाण

भर+अन=भरण

भूष+अन=भूषण

र+अन=रण

राम+अयन=रामायण

'न' का 'ण' हो गया।

ऋ + न = ऋण

पोष + न = पोषण

तृष्ण + ना = तृष्णा

उत्तर + अयन = उत्तरायण

प्र + अपन = प्रापण

⇒ नियम (vii) 'स' संबंधी

जब पहले शब्द के अन्त में कोई स्वर हो तथा उसके बाद 'स' आए, तो 'स' के स्थान पर 'छ' हो जाता है।

अपवाद - 'अ' और 'आ' स्वर को छोड़कर अतिरिक्त स्वर ही इस नियम के अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण -

नि + सेध = निषेध

अभि + सेक = अभिषेक

सु + सुप्त = सुसुप्त

नि + सिद्ध = निषिद्ध

युधि + स्थिर = युधिष्ठिर

सु + समा = सुसमा

अनु + संगी = अनुषंगी

वि + सम = विषम

⇒ उम्मीद है व्यंजन संबंधी नियमों के अध्यास से आप पाठकों की व्यंजन संधि संबंधी त्रुटियाँ दूर हो जाएँगी।

3. विसर्ग संधि

जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यंजन आए तथा उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

यदि पहले शब्द के अंत में विसर्ग हो तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में स्वर या व्यंजन आए तो उनके मेल से जो विकार उत्पन्न हो या जो परिवर्तन आए, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

जैसे-

नि: + चल = निश्चल

दु: + पान = दुष्पान

मन: रथ = मनोरथ

यहाँ विसर्ग और स्वर या व्यंजन के मेल से विकार उत्पन्न हुआ यही 'विसर्ग संधि' कहलाती है।

विसर्ग संधि संबंधी नियम

⇒ नियम (i)

यदि विसर्ग के बाद 'च-छ' आए, तो विसर्ग के स्थान पर 'श्' हो जाएगा। इसी प्रकार विसर्ग के बाद यदि 'ट-ठ' आए तो विसर्ग 'छ' हो जाएगा तथा विसर्ग के बाद यदि 'त-थ' आए तो वहाँ विसर्ग 'श्' अथवा 'स्' हो जाएगा—

उदाहरण-

नि: + चिंत = निश्चित

पुन: + चर्या = पुनश्चर्या

हरि: + चंद्र = हरिश्चन्द्र

दु: + चरित्र = दुश्चरित्र

नि: + छल = निश्छल विसर्ग 'च-छ' = 'श'

प्राय: + चित्त = प्रायश्चित्त

नि: + चय = निश्चय

क: + चित् = कश्चित्

नि: + छिद्र = निश्छिद्र

नि: + दुर = निष्पुर

घनु: + टंकार = घनुष्टकार विसर्ग + 'ट-ठ' = 'ष'

दु: + ट = दुष्ट

तत: + ठकार = ततष्टकार

नम: + ते = नमस्ते

नि: + तेज = निस्तेज

मन: + ताप = मनस्ताप

दु: + तर = दुस्तर विसर्ग + 'त-थ' 'स'

नि: + तार = निस्तार

वहि: + थोडन = वहिस्थोडन

दु: + थकार = दुस्थकार

⇒ नियम (ii)

यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और उसके बाद किसी व्यंजन का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आए अथवा य, र, ल, व, ह आए, तो विसर्ग 'ओ' हो जाएगा—

उदाहरण-

यश: + धरा = यशोधरा

सर: + ज = सरोज अ: + व्यंजन वर्ग वर्ण = 'ओ'

मन: + भाव = मनोभाव

पय: + धन = पयोधन

अपवाद- पुन: तथा अंत: में विसर्ग का 'र' हो जाएगा—

जैसे- पुन: + जन्म = पुनर्जन्म

अंत: + धान = अंतर्धान

अंत + अग्नि = अंतर्ग्नि

पुन: + मुद्रण = पुनर्मुद्रण

⇒ नियम (iii)

यदि विसर्ग के पहले 'अ-आ' के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो वाद कोई स्वर या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम, वर्ण आए अथवा र, ल, व, ह आए, तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाएगा—

उदाहरण-

नि: + जल = निर्जल

नि: + धन = निर्धन

नि: + विकारनी = निर्विकारनी

दु: + नीति = दुनीति

आशी: + बाद = आशीर्वाद

नि: + ईक्षण = निरीक्षण

नि: + अपराध = निरपराध

नि: + मम = निर्मम

यहाँ हमने विसर्ग के 'र' रूप में परिवर्तन का अध्ययन किया।

⇒ नियम (iv)

यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में क, ख, या प, फ आए, तो मेल में विसर्ग के स्थान पर 'ष्' हो जाएगा—

उदाहरण-

आवि: + कार = आविष्कार

बहि: + कार = बहिष्कार 'इः - उः' + क, ख, प, फ = 'ष्'

चतु: + कोण = चतुष्कोण

दु: + परिणाम = दुष्परिणाम

नि: + कारण = निष्कारण

⇒ नियम (v)

यदि विसर्ग के पहले 'इ-उ' हो तथा बाद में 'र' आए, तो मेल में 'इ-उ' के स्थान पर 'ई'- 'ऊ' हो जाएगा अर्थात् 'इ'-उ का दीर्घ हो जाएगा—

उदाहरण-

दु: + राज = दूराज 'इः'- 'उः' + र = 'ई'- 'ऊ'

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रस = नीरस

नि: + रव = नीरव

नि: + रज = नीरज

⇒ नियम (vi)

यदि विसर्ग के पहले 'अ' तथा बाद में भी 'अ' आए, तो पहले 'अ' और विसर्ग का 'ओ' या 'आ' हो जाएगा [नियम नं०-ii की तरह] तथा विसर्ग के बाद वाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थान पर लुप्ताकार (३) का चिह्न प्रयुक्त हो जाएगा—

उदाहरण-

मन: + अभिलाषा = मनोउभिलाषा

क: + अपि = कोडपि

मन: + अनुकूल = मनोउनुकूल

पंचम + अध्याय = पंचमोउध्याय

प्रथम: + अध्याय = प्रथमोउध्याय

नम: + अस्तु = नमोउस्तु

कुशल + अभिलाषी = कुशलाउभिलाषी

तथा: + अपि = तथाउपि

यश: + अभिलाषी = यशोउभिलाषी

◇ कुशलाउभिलाषी तथा 'तथाउपि' में 'आकार' अर्थात् विसर्ग के स्थान पर 'आ' हो गया।

अपवाद- यदि विसर्ग के बाद 'अ' न आकर कोई अन्य स्वर आए तो उपर्युक्त नियम नहीं लागू होगा, बस विसर्ग का लोप हो जाएगा।

जैसे—

अत: + एव = अतएव

तप: + उत्तम = तपउत्तम

सद्य: + आलस्य = सद्य आलस्य

⇒ नियम (vii)

यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'इ', 'उ' हो तथा विसर्ग के बाद श, ष, स हो, तो विसर्ग सुरक्षित यथास्थिति बना रहेगा अथवा विसर्ग के बाद के श, ष, स का द्वित्व [विसर्ग के बाद के शब्द की पुनरावृत्ति होगा] हो जाएगा—

उदाहरण—

दु: + शील = दुःशील, दुशील

नम: + शिवाय = नमः शिवाय, नमशिवाय

नि: + शंक = निः शंक, निशंक

नि: + संदेह = निःसंदेह, निसंदेह

दु: + शासन = दुःशासन, दुश्शासन

चतु: + षष्ठि = चतुःषष्ठि, चतुष्प्रष्ठि

नि: + सार = निःसार, निस्सार

हरि: + शेते = हरिः शेते, हरिश्शेते

दु: + साहस = दुःसाहस, दुस्साहस

नि: + संताप = निःसंताप, निसंताप

अपवाद- नियम नं० ii के अपवाद की भाँति पुनः एव अतः होने पर विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाएगा।

⇒ नियम (viii)

यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो [अ] तथा विसर्ग के बाद क, ख या प, फ आए, तो विसर्ग ज्यों का त्यों बना रहेगा, अर्थात् विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

उदाहरण-

मन: + कल्पित = मनःकल्पित

विलोम शब्द

हर शब्द का निश्चित अर्थ या मतलब होता है, उस अर्थ का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। विलोम शब्दों को विपरीतार्थक शब्द या अंग्रेजी में Opposite Words भी कहा जाता है।

विलोम शब्द किसी भी भाषा का परमसुख भाग होते हैं, इनकी सहायता से दो विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों के बीच अंतर करने और समझने में सहायता मिलती है, जैसे दिन का विपरीत शब्द होता है रात और नवीन का विलोम शब्द होता है पुरातन।

⇒ विलोम शब्द निर्धारित करने की विधियाँ एवं व्याकरण

हिन्दी में किसी भी शब्द का विपरीतार्थक (विलोम) शब्द बनाने के मुख्य रूप से पाँच नियम बताए गए हैं :

1. लिंग परिवर्तन द्वारा — किसी भी शब्द का मूल लिंग (Gender) बदलकर उसका विलोम शब्द तय किया जाता है; जैसे कि दिन का विलोम शब्द रात, शेर का शेरनी, राजा-रानी, बूढ़े-बुढ़िया आदि।

2. भिन्न जाति या वर्ग के शब्द द्वारा — कुछ शब्द जिनके निश्चित अर्थ एक-दूसरे के परस्पर विरोधी भाव रखते हैं; जैसे कि हार-जीत, अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य, उल्टा-सीधा, आजाद-गुलाम, विष-अमृत, अंधकार-उजाला इत्यादि।

3. उपसर्ग जोड़कर — किसी शब्द के आगे उपसर्ग लगाकर उसका विपरीत अर्थ देने वाला शब्द बनाया जाता है; जैसे कि घात-प्रतिघात, स्वस्थ-अस्वस्थ, सामान-असमान आदि।

4. उपसर्ग बदलकर — किसी भी शब्द के आगे उपसर्ग को बदलकर उस शब्द का अर्थ बदल जाता है जैसे कि उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण, इच्छा-अनिच्छा, उत्कर्ष-अपकर्ष, आदान-प्रदान आदि।

5. नज् समास (नहीं अर्थ वाले शब्द) जोड़कर — किसी शब्द के आगे ऐसे शब्द का अक्षर जोड़कर जिनका अर्थ 'नहीं' होता है, जैसे कि अंत-अनंत आदि-अनादि, सुविधाजनक-असुविधाजनक, संभव-असंभव आदि।

विलोम शब्दों से जुड़े महत्त्वपूर्ण नियम

- किसी भी शब्द का विलोम शब्द उसी श्रेणी का होगा जिसे श्रेणी का दिया गया शब्द है जैसे कि अगर कोई शब्द 'तत्सम' है तो उसका विपरीत शब्द भी 'तत्सम' ही होगा। इसी प्रकार किसी 'तद्भव' शब्द का विलोम भी 'तद्भव' ही होगा। उदाहरण के लिए स्तरी का विलोम शब्द पुरुष होगा लेकिन औरत का विलोम शब्द 'आदमी' होगा।
- किसी भी शब्द का विलोम उसके मूल के अनुसार ही होना चाहिए जैसे कि अगर कोई शब्द संज्ञा है तो उसका विलोम शब्द भी संज्ञा ही होगा। किसी विशेषण का विपरीत शब्द भी विशेषण होगा। उदाहरण के लिए खुश का विलोम दुःख होगा वही खेद का विपरीत प्रसन्न होगा।

परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विलोम शब्द

शब्द	विलोम
सपूत्र	कपूत
अंकुश	निरंकुश
अंगीकार	अस्वीकार
अंतर	बाह्य
अंशतः	पूर्णतः
अकलुष	कलुष
अकाल	सुकाल
अक्षुर	क्रूर
अगला	पिछला
अग्रज	अनुज
अग्राहा	ग्राहा
अग्रिम	अन्तिम
अचल	चल
अच्छा	बुरा
अजल	निर्जल
अज्ञ	विज्ञ
अतल	वितल
अति	अल्प
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अतुकान्त	तुकान्त
अथ	इति
अदेय	देय
अदोष	सदोष
अधम	उत्तम
अधर्म	सधर्म
अधिक	न्यून
अधुनातन	पुरातन
अनंत	अंत

	भिग	मान्य
अनभिज्ञ		
अनागत	आगत	निपुण
अनातुर	आतुर	जड़े
अनाथ	सनाथ	जड़ा
अनाहृत	आहृत	प्राप्ति
अनित्य	नित्य	स्थान
अनिष्ट	इष्ट	स्वामी
अनुकृत	विरक्त	विचार
अनुरक्ति	विरक्ति	विषय
अनुराग	विराग	विषय
अनुर्तीर्ण	उत्तीर्ण	विषय
अनुलोम	विलोम	विषय
अनैतिहासिक	ऐतिहासिक	विषय
अन्तरंग	बहिरंग	विषय
अन्यकार	प्रकाश	विषय
अपकार	उपकार	विषय
अपचार	उपचार	विषय
अपेक्षा	उपेक्षा	विषय
अपेक्षा	नगद	विषय
अपेक्षित	अनपेक्षित	विषय
अभिज्ञ	अनभिज्ञ	विषय
अध्यस्त	अनभ्यस्त	विषय
अमर	मर्त्य	विषय
अमावस्या	पूर्णिमा	विषय
अमृत	विष	विषय
अरुचि	सुरुचि	विषय
अर्थ	अनर्थ	विषय
अर्पण	ग्रहण	विषय
अर्वाचीन	प्राचीन	विषय
अत्य	अधिक	विषय
अल्पकालीन	दीर्घकालीन	विषय
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	विषय

अल्पायु	दीर्घायु
अवनत	उन्नत
अवर	प्रवर
अवरोह	आरोह
अवलम्ब	निरालम्ब
असली	नकली
अस्त	उदय
अस्ताचल	उदयाचल
अस्पृश्य	स्पृश्य
आकर्ष	विकर्ष
आकर्षण	विकर्षण
आगमन	गमन
आगामी	गत
अगामी	विगत
आग्रह	दुराग्रह
आच्छादित	अनाच्छादित
आतुर	शांत
आदत	प्रदत्त
आदर	अनादर
आदर्श	यथार्थ
आदान	प्रदान
आदि	अंत
आद्र	शुष्क
आधुनिक	प्राचीन
आध्यात्मिक	भौतिक
आय	व्यय
आरम्भ	अंत
आरोह	अवरोह
आलस्य	स्फूर्ति
आवृत	अनावृत
आशा	निराशा
आशीर्वाद	अभिशाप

रोजगार परिवर्णनेशन

आसक्त	अनाशक्त
आस्था	अनास्था
आहार	निराहार
आहार	अनाहार
आहान	विसर्जन
इच्छा	अनिच्छा
इहलोक	परलोक
ईर्ष्या	परम
ईश्वर	अनीश्वर
उग्र	सौम्य
उचित	अनुचित
उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उत्तम	अधम
उत्थान	पतन
उदार	अनुदार
उद्यमी	आलसी
उधार	नगद
उन्नति	अवनति
उपकार	अपकार
उपयुक्त	अनुपयुक्त
उपस्थित	अनुपस्थित
उपाय	निरुपाय
उर्वर	ऊसर
उषा	संध्या
एक	अनेक
एकता	अनेकता
एकांगी	सर्वांगीण
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कृतज्ञ	कृतञ्ज
कृष	स्थूल
कृष्ण	शुक्ल

क्रय	विक्रय
क्षणिक	शाश्वत
खेद	प्रसन्नता
गुप्त	प्रकट
ग्रामीण	शहरी
घात	प्रतिघात
घृणा	प्रेम
छली	निश्चल
छूट	अछूट
जंगली	पालतू
जन्म	मृत्यु
जल	थल
ठोस	तरल
दयालु	याचक
दिन	रात
दुर्लभ	सुलभ
धीर	अधीर
नख	शिख
निंदा	स्तुति
निरक्षर	साक्षर
नूतन	पुरातन
प्रत्यक्ष	परोक्ष/अप्रत्यक्ष
बंधन	मुक्ति
बालक	बालिका
मितव्य	अपव्यय
मुक	वाचाल
मोक्ष	बंधन
मौखिक	लिखित
यश	अपयश
रक्षक	भक्षक
राजा	रानी
रात	दिन

हिन्दी	स्वस्थ
लक्षण	कुलक्षण
लक्षित	अलक्षित
लगभग	पूरा
लगाव	हटाना
लचीला	कठोर
लड़ना	मिलना
लहू	पसीना
वरदान	अभिशाप
विधवा	सधवा
विधि	नियेध
वृष्टि	अनावृष्टि
शयन	जागरण
शीत	उष्ण
शुभ	अशुभ
शुक्र	आर्द्र
संक्षेप	विस्तार
संतोष	असंतोष
सक्रिय	निष्क्रिय
संगुण	निर्गुण
सज्जीव	निर्जीव
सज्जन	दुर्जन
सफल	असफल
सरस	नीरस
सुंध	दुर्घन्ध
सौभाग्य	दुर्भाग्य
स्त्री	पुरुष
स्वाधीन	पराधीन
हर्ष	शोक
अँधेरा	उजाला
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अत्यधिक	अत्यल्प

अंतरंग	बहिरी
अंधकार	प्रकाश
अधिकतम	न्यूनतम
अंदर	बाहर
अधम	उत्तम
अंदरूनी	बाहरी
अगम	सुगम
अक्षम	सक्षम
अनभिज्ञ	अभिज्ञ
अनाथ	सनाथ
अनुकूल	प्रतिकूल
अप्रज	अनुज
अनुग्रह	निग्रह, विग्रह
अज्ञ	प्रज्ञ
अनुलोम	विलोम, प्रतिलोम
अग्नि	जल
आकर्षण	विकर्षण
अंगीकार	इनकार
अमर	मर्त्य
अघ	अनघ
अमावस्या	पूर्णिमा
अमृत	विष
अर्जन	वर्जन
अर्थ	अनर्थ
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक
अलभ्य	लभ्य
अर्थी	प्रत्यर्थी
अपराह्न	पूर्वाह्न
अधिकारी	अनधिकारी
अखाद्य	खाद्य
अचर	चर
अजेय	जय

रोजगार पब्लिकेशन

अज्ञान	ज्ञान
अज्ञानी	ज्ञानी
अकर्मण्य	कर्मण्य
अनुरक्त	विरक्त
अनय	नय
अपकीर्ति	सुकीर्ति
अंत	आदि
अनित्य	नित्य
अपना	पराया
अलौकिक	लौकिक
अपमान	सम्मान
अप्रिय	प्रिय
असाधारण	साधारण
अपेक्षा	उपेक्षा
असभ्य	सभ्य
अपेक्षित	उपेक्षित
अमंगल	मंगल
अरुचि	रुचि
अशुभ	शुभ
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अल्पायु	दीर्घायु, चिरायु
अनिच्छा	इच्छा
अनुचित	उचित
अवनत	उन्नत
असमय	सुसमय
अनवसर	सुअवसर
अश्रु	हास
अभीष्ट	अनभीष्ट
अनुपस्थित	उपस्थित
अनेक	एक
अपचय	उपचय
अंडज	पिंडज

असंतुष्ट	संतुष्ट
असंतोष	संतोष
आधार	निराधार, अनाधार
आधुनिक	प्राचीन
आगामी	विगत
आत्मा	परमात्मा
आयात	निर्यात
आकाश	पाताल
आसक्त	अनासक्त, निरासक्त
अभ्यंतर	बाह्य
आजादी	गुलामी
आरोही	अवरोह
आर्य	अनार्य
अरोही	अवरोही
आगमन	गमन
आवश्यक	अनावश्यक
आवाहन	विसर्जन
आवृत	अनावृत
आध्यात्मिक	आधिभौतिक
आम	खास
आकुँचन	प्रसारण
आलस्य	स्फूर्ति
आदत्त	प्रदत्त
आरूढ	अनारूढ
आस्था	अनास्था
आज्ञा	अवज्ञा
अतिरिक्त	अनतिरिक्त
आवक	जावक
आगत	अनागत
आतप	छाया, अनातप
आवृत	अनावृत
अकेला	साथ

अनृत	ऋत, तथ्य
अपकार	उपकार
अभिमुख	विमुख
अबला	सबला
अचेत	सचेत
अतर	तत्र
अकाम	सकाम
अर्पित	गृहीत
अकर्तव्य	कर्तव्य
अपराधी	निर्दोष, निरपराध
अभिमान	निरभिमान
अप्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष
अपकर्ष	प्रकर्ष, उत्कर्ष
अप्रसन्न	प्रसन्न
अपव्यय	मितव्यय
अनुवर्ग	उर्वरा
अपूर्ण	पूर्ण
अधर्म	धर्म
अर्वाचीन	प्राचीन
आलोक	अंधकार
आय	व्यय
आमिष	निरामिष
आस्तिक	नास्तिक
इट	अनिष्ट
इधर	उधर
उत्तरायण	दक्षिणायन
इहलोक	परलोक
उत्तम	अधम
इकट्ठा	अलग
उपचार	अपचार
इच्छा	अनिच्छा
उर्वर	ऊसर

इति	अथ
उन्नयन	अवनयन
इंसाफ	गैर-इंसाफ
उपयुक्त	अनुपयुक्त
इकहरा	दुहरा
ईद	मुहरंग
उपयोगी	अनुपयोगी
उष्ण	शीत, शीतल
इश्वर	अनीश्वर, जीव
ईमानदार	बैईमान
उदास	प्रसन्न, प्रफुल्ल
उचित	अनुचित
उदित	अस्त
उच्च	निम्न
उषा	संध्या
उत्कर्ष	अपकर्ष
उपजीव्य	उपजीवी
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपकारक	अपकारक
उरुकृष्ट	निकृष्ट
उत्तर	चढाव
उत्थान	पतन
उदीची	प्रतीची
उत्साह	निरुत्साह, अनुत्साह
उपजाऊ	बंजर
उदय	अस्त
उपार्जित	स्वयंपराप्त/अनुपार्जित
उत्पत्ति	निपत्ति, अवतरण
उदात्त	अनुदात्त
उदार	अनुदार, कृपण
ऊँच	नीच
उद्यम	निरुद्यम

रोजगार पब्लिकेशन

ऊँचा	नीचा
उधार	नकद
ऊसर	उपजाऊ
उझत	विनीत
ऊर्ध्वमुख	अधोमुख
उन्नति	अवनति
ऊपर	नीचे
उन्मुख	विमुख
ऋणात्मक	धनात्मक
उन्मूलन	मूलन
एक	अनेक
उपकार	अपकार
एकता	अनेकता
उपयोग	दुरुपयोग
एडी	चोटी
उपसर्ग	प्रत्यय
एकमुखी	बहुमुखी
एकतंत्र	बहुतंत्र
उपस्थिति	अनुपस्थिति
उत्तर	दक्षिण
एकेश्वरवाद	बहुदेववाद
ऐहिक	पारलौकिक
ऐक्य	अनैक्य
ऋजु	कुटिल, वक्र
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
औचित्य	अनौचित्य
औद्धत्य	अनौद्धत्य
औदार्य	अनौदार्य
अंतर	सतत
औपचारिक	अनौपचारिक
औदत्य	अनौदात्य

कडवा	मीठा
कदु	मधु
कठिन	सरल, सहज
कीर्ति	अपकीर्ति
कृतज्ञ	कृतज्ञ
कृत्रिम	प्राकृत
कृष्ण	कंस, शुक्ल, श्वेत
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कपूत	सपूत
कृपण	उदार, दानी, दाता
कर्मण्य	अकर्मण्य
कर्कश	कोमल, मधुर, सुशील
करुण	निष्करुण, अकरुण, निष्क्रु
कसूरवार	बेकसूर
क्रय	विक्रय
कलुष	निष्कलुष
कुटिल	सरल
कुरुप	सुरूप, सुन्दर
कुसुम	वज्र
कोप	कृपा
कोमल	कठोर
कर्म	अकर्म, निष्कर्म
कपटी	निष्कपट
कर्मठ	अकर्मण्य
क्रिया	प्रतिक्रिया
कृश	स्थूल
कुख	शांत
कानूनी	गैरकानूनी
किनारा	बीच
कान्त	कांता
कुमार्ग	सुमार्ग, सन्मार्ग
कुपुत्र	सुपुत्र

	सूपत्री
कुपत्री	निष्कंटक
कंटक	मुलायम, नरम
कड़ा	पक्का
कच्चा	अधिक, ज्यादा
कम	बेशी
कमी	आराम, निष्क्रिय
काम	गोरा
काला	प्रशंसा, स्तुति
कुत्सा	ताकतवर
कमज़ोर	नाकाबिल
काबिल	सुकर्म
कुकर्म	अक्रोधी, प्रसन्न
क्रोधी	विक्रेता
क्रेता	विक्रय
क्रय	निडर
कायर	क्षमा
क्रोध	दयालु
कठोर	बिक्री
खरीद	सज्जन
खल	अखाद्य
खद्य	मुरझाना
खिलना	रीझना
खोजना	मंडन
खंडन	खोटा
खरा	गम
खुशी	नाखुश, गमगीन, दुखी
खुश	बंद
खुला	बाँधना
खोलना	बदबू
खुशबू	बदकिस्मत
खुशकिस्मत	बदनसीब
खुशनसीब	

गणन	धरा, पृथ्वी
गत	आगात
गणतंत्र	राजतंत्र
गमन	आगमन
गरल	सुधा, अमृत
गरीब	अमीर, धनी
ग्रस्त	मुक्त
गहरा	छिछला
ज्ञान	अज्ञान
ग्राम्य	शिष्ट
गुण	दोष, अवगुण
गुप्त	प्रकट
गुरु	लघु, शिष्य
गीला	सूखा
गृहस्थ	सन्यासी
गृही	त्यागी, सन्यासी
गेय	अगेय
गोचर	अगोचर, गोतीत
गरमी	सरदी
गौरव	लाघव
ग्राहाद्य	त्याज्य
गंभीर	चंचल
गाढा	पतला, तन्तु
गूढ़	प्रकट
गलत	सही
गड़बड़	सही
गौण	परमसुख प्रधान
ग्रहण	त्याग
ग्रामीण	शहरी
गाँव	शहर
ग्रास	मोक्ष
ग्राम	नगर

रोजगार प्रब्लेमेशन

गाड़ना	उखाड़ना
गन्दा	साफ
गुणी	निगुणी, दोषी
गद्य	पद्य
गोरक्षक	गोभक्षक
घात	प्रतिघात
घरेलू	बाहरी, बन्य
घर	बाहर
घटना	बढ़ना
घृणा	प्रेम
घटाव	जोड़
घटिया	बढ़िया
चड़ाव	उत्तर
चर	अचर
चल	अचल
चाह	अनचाह
चिन्मय	जड़, अचिन्मय
चिर	नवीन, अचिर
चिरंतर	नश्वर
चेतन	अचेतन
चोर	साधु
चचल	स्थिर
चतुर	मूर्ख
चाहा	अनचाहा
चालक	बेवकूफ
चुस्त	ढीला
चय	अपचय
चिकना	रुखड़ा
चाँदनी	अँधेरी
चमकदार	चमकहीन
चालू	सुस्त, बंद
चिंतत	निश्चिन्त

चपल	गंभीर
छली, छल	निश्छल
छाँह	धूप
छूत	अछूत
छाया	प्रकाश, रोशनी
क्षुद्र	महान
छेद्य	अछेद्य
छूट	कैद
क्षणिक	शाश्वत
जीव	निर्जीव
जटिल	सरल
जय	पराजय
जड़	चेतन
जल	थल
जवानी	बुद्धापा
जागरण	निद्रा
जाग्रत	सुषुप्त
जागृति	सुषुप्ति
जात	परजात
जाड़ा	गर्मी
जीवन	मरण
जोड़	घटाव
ज्योति	तम, तिमिर
ज्वार	भाटा
जंगम	स्थावर
ज्येष्ठ	कनिष्ठ
जेय	अजेय
जब	तब
जीवित	मृत
जल्लाद	देवता
जीना	मरना
जंगल	मरुभूमि

आसमान	
जमीन	सरकार
जनता	जवानी
जरा	परमात्मा
जीवात्मा	तपोमय
ज्योतिर्मय	सच
झूठ	महल
झोंपड़ी	सच्चा
झुठा	मेल, मिलाप
झगड़ा	निडर, साहसी
झरपोक	चढ़ना
झलना	संकोची
झीठ	चढ़ाव, चढ़ाई
झालवाँ	शीत
ताप	आलोक
तम	मंद
तीव्र	महान
तुक्ष	प्रकाश, ज्योति
तिमिर	सात्त्विक
तामसिक	ठोस
तरल	बृद्ध
तरुण	शिकायत
तारीफ	मधुर
तिक्त	कुँठित
तीक्ष्ण	पक्षपाती
तटस्थ	त्रुप्ति
तुषा	अत्याज्ञ
त्याज्ञ	स्वार्थी
तुकांत	खुदरा
थोक	बहुत
थोड़ा	दानव
देव	राक्षस
देवता	

देय	अदेय
दुष्ट	सज्जन
देवत्व	दानवत्व
दिन	रात
दिवा	रात्रि
दीर्घकाय	लघुकाय, कृशकाय, क्षीणकाय
देर	सबेर, जल्द
दुराचारी	सदाचारी
दंड	पुरस्कार/क्षमा
दाता	कृपण, कंजूस
दूषित	स्वच्छ
दुर्बल	सबल
दक्षिण	उत्तर, वाम
द्रुत	विलंबित
देश	परदेश, विदेश
दुर्दिन	सुदिन
देहाती	शहरी
दुर्गति	सद्गति
दुर्भाग्य	सौभाग्य
दुर्भाव	सद्भाव
दिनचर्या	रात्रिचर्या
दोषी	निर्दोष
दयालु	निर्दय
दुर्लभ	सुलभ
दृढ़	विचलित
दृश्य	अदृश्य
दोष	गुण
दूश्यकाव्य	शूरव्यकाव्य
दीर्घ	हस्त
दृदांत	शांत
धनी	निर्धन, गरीब
धर्म	अधर्म

रोजगार पब्लिकेशन

धूप	छाँह
घनवान	निर्धन, दरिद्र
नूतन	पुरातन
न्यून	अधिक
नश्वर	अनश्वर, शाश्वत
निंदा	स्तुति
नागरिक	ग्रामीण
निर्मल	मलिन
निरामिष	सामिष
निर्लज्ज	सलज्ज
निर्दोष	सदोष
निर्माण	विनाश
नगर	ग्राम
नैसर्गिक	कृत्रिम
निष्काम	सकाम
निरक्षर	साक्षर
नकली	असली
नमकहराम	नमकहलाल
नया	पुराना
नर	नारी, मादा
नवीन	प्राचीन
निगलना	उगलना
निडर	डरपोक
नित्य	अनित्य
न्याय	अन्याय
नगर	ग्रामीण
नख	शिख
नफा	नुकसान
निद्रा	जागरण
नेकी	बदी
निशीथ	मध्याह
निषिद्ध	विहित

निजी	सरकारी, सार्वजनिक
नम	शुष्क, खुशक
नराघम	नरोत्तम
नजदीक	दूर
नापाक	पाक
नद	नदी
नजरबंद	नजरमुक्त
नमाज	कलमा
नेम	कुनेम
नास्तिक	आस्तिक
निर्जीव	सजीव
निर्धक	सार्थक
निरचेष्ट	सचेष्ट
निषेध	विधि
नीरस	सरस
नैतिक	अनैतिक
पक्ष	विपक्ष
पतन	उत्थान
पतनोन्मुख	विकासोन्मुख
पंडित	मूर्ख
परमार्थ	स्वार्थ, आत्मार्थ
पराजय	जय
पराया	अपना
परतंतर	स्वतंत्र
पता	खोज, लापता
परिश्रम	विश्राम
पवित्र	अपवित्र
प्रकट	गुप्त
प्रकाश	अंधकार
प्रख्यात	अख्यात
प्रतोची	प्रराची
प्रज्ञ	मूढ़

प्रातिकूल	अनुकूल
प्रत्यक्ष	परोक्ष, अप्रत्यक्ष
प्रधान	गौण
प्राप्त	अप्राप्त
प्रयोग	अप्रयोग
प्रलय	सृष्टि
प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्रशंसा	निंदा
प्रसाद	विषाद, कोप
पत्नी	आग
पाप	पुण्य
पालक	संहारक
पाश्चात्य	पूर्वाय
प्राकृतिक	अप्राकृतिक
प्रारंभ	अंत
प्रारंभिक	अंतिम
पुरातन	कुस्वा नवीन
पूर्व	पश्चिम, उत्तर, उपर
पूर्णता	अपूर्णता
प्रेम	घृणा
पूर्णिमा	अमावस्या
पृथु	तनु
पुरस्कार	तिरस्कार, दंड
पूरा	अधूरा
प्रश्न	उत्तर
प्रमुख	सामान्य
पूर्ववर्ती	परवर्ती, उत्तरवर्ती
परतंत्रता	स्वतंत्रता
प्राण	निष्ठाण
प्रातः	साथं
पुर्ण	अपुर्ण, क्षीण, कृश
पोषक	शोषक

प्रसिद्ध	अप्रसिद्ध, अज्ञात
पालन	संहार, पीड़न
पेट	पीठ
प्रदोष	प्रत्युष
प्रथम	अंतिम
प्रभु	मृत्यु
प्रायः	विरला
प्रारब्ध	पौरुष
प्रस्कूटित	संकुचित
पूरब	पश्चिम
परोपकारी	स्वार्थी
पूर्वाह	अपराह्न
पर्णकुटी	महल, प्रासाद
प्रस्थान	आगमन
पहुँचना	छूटना, खुलना
परिश्रमी	आलसी, कामचोर
पुरुष	स्त्री
परकीय	स्वकीय
फलदायक	निष्कल
फायदा	नुकसान
फैला	सिमटा, सिकुड़ा
बंधन	मुक्ति, मोक्ष
बलवान	बलहीन
बहिरंग	अंतरंग
बाह्य	अभ्यतर
बाढ़	सूखा
बर्बर	सम्य
बच्चा	बूढ़ा
बढ़िया	घटिया
बुरा	भला
बालक	वृद्ध
बुराई	भलाई

रोजगार पब्लिकेशन

बहार	पतझड़, खिजाँ
बाहर	भीतर
बसाना	उजाड़ना
बनाना	बिगाड़ना
बीमार	नीरोग, स्वस्थ
बहिष्कार	स्वीकार, अंगीकार
बुद्धिमान	बुद्धिहीन, मूर्ख
बेगम	बादशाह
बली	निर्बल
वैर	मित्रता, दोस्ती
वृहत्	लघु
ब्रह्म	जीव
बिना	साथ
बहुत	थोड़ा
भद्र	अभद्र
भय	साहस
भला	बुरा
भारतीय	अभारतीय, विदेशी
भारी	हलका
भूत	भविष्य
भेद	अभेद
भौतिक	आध्यात्मिक
भाव	अभाव
भोगी	योगी
भूलोक	द्युलोक
भोक्ता	भोग्य
भर्ता	भृत्य, भार्या
भक्ष्य	भक्षक
भक्षक	रक्षक
भूमा	अल्पता
भरा	खाली
भाग्य	अभाग्य

मानव	दानव
मूक	वाचाल, मुखर
मुदुल	कठोर, निर्मम
मुख	पृष्ठ, प्रतिमुख
महात्मा	दुरात्मा
मिलन	विरह
मृत	जीवित
महत्	तुच्छ, क्षुद्र, लघु
मुनाफा	नुकसान
मंगल	अमंगल
मधुर	कट्ट
मालिक	नौकर
मित्र	शत्रु
मीठा	तीखा
मुख्य	गौण
मृत्य	अमृत्य, अमर
मनुज	दनुज
मसुण	रुक्ष
माता	पिता
मान	अपमान
मेहनती	आलसी
मोक्ष	बंधन
मेल	बेमेल, झागड़ा, फूट
मनुष्य	पशु, राक्षस
मनुष्यता	पशुता
महँगा	सस्ता
मौन	मुखर
मोटा	पतला
मिट्टी	सोना
मोघ	अमोघ
मामूली	गैरमामूली
मुमकिन	नामुमकिन

मलिन	निर्मल
प्रिया	सत्य
मितव्यी	अपव्ययी
मौखिक	लिखित
मरना	जीना
मोहयुक्त	निर्मोही
बालिका	बृद्धा
यथार्थ	कल्पित, कल्पना
यहाँ	वहाँ
यश	अपयश
योग	वियोग
युद्ध	शांति
योगी	भोगी
योग्य	अयोग्य
युक्त	वृद्ध, जठर
युवा	बुद्धा, वृद्ध
यजतंत्र	जनतंत्र, प्रजातंत्र
रत	विरत
राणी	विराणी
राग	विराग
रचना	ध्वंस
रूपवान	कुरूप
रिक्त	पूर्ण
राजा	रंक, प्रजा
राम	रावण
रोगिस्तान	नखलिस्तान
रोगी	नीरोग
राति	रक
रंगीन	रंगहीन, बेरंग
रोपण	उन्मूलन
रूपण	नीरोग
लघु	दीर्घ, महत्

लौकिक	अलौकिक
लिप्त	अलिप्त
तुप्त	प्रकट
लाभ	हानि
लिखित	मौखिक
लेन	देन
लौह	स्वर्ण
लोभ	त्याग
लोक	परलोक
लालची	संतुष्ट
लगाव	विलगाव, अलगाव
लेना	देना
लज्जाशील	निर्लज्ज
वक्र	सरल, ऋजु
वन	मठ
वसंत	पतझड़
वहिष्कार	स्वीकार, अंगीकार
व्यर्थ	अव्यर्थ, सार्थक
वयष्टि	समष्टि
वाद	प्रतिवाद
वृद्ध	बालक
वृद्धि	हास
वृहत्	लघु, क्षुद्र
विकर्षण	आकर्षण
विजय	पराजय
विपति	संपति
विधवा	सधवा
विधि	निषेध
विपन्न	संपन्न
विमुख	उन्मुख
वियोग	संयोग
विरत	निरत, रत

रोजगार पब्लिकेशन

विरह	मिलन
विवाद	निर्णय, निर्विवाद
विशालकाय	लघु
विशिष्ट	साधारण
विस्वास	अविस्वास
विश्लेषण	संलेषण
विशेष	सामान्य
विष	अमृत
विसर्जन	सर्जन
वैमनस्य	सौमनस्य
वैतनिक	अवैतनिक
वीर	कायर
व्यस्त	अकर्मण्य, अव्यस्त
व्यावहारिक	अव्यावहारिक
विपद	सम्पद
विकर्ष	आकर्ष
विहित	निषिद्ध
विस्तीर्ण	संकीर्ण
वाग्मी	अल्पभाषी, मितभाषी
वैध	अवैध
वैधानिक	अवैधानिक
विकासशील	अविकासशील
विकसित	अविकसित
विद्वान	मूर्ख
व्यक्ति	समाज
व्यास	समास
वाचाल	मूक
वैभव	दरिद्रता
विरोध	समर्थन
वैर	मित्रता
विशुद्ध	दूषित
विश्राम	काम

विपुल	न्यून
विश्वासी	अविश्वासी
विलास	तपस्या
वादी	प्रतिवादी
विफलता	सफलता
शत्र	पिरतर
शांति	अशांति, क्रांति
शाकाहारी	मांसाहारी
शाम	सुब्बक
शासक	शासित
शिष्ट	अशिष्ट
शीत	उष्ण
वसंत	पतझर
विद्वान	मूर्ख
वृद्धि	हास
व्यस्त	अव्यस्त
विपत्ति	सम्पत्ति
वक्र	सरल
वियोग	मिलन
वरदान	अभिशाप
विस्तार	संक्षेप
विरत	निरत
विक्रिय	क्रय
विसर्जन	अह्वान
विश्वास	अविश्वास
विनीत	उद्धृत
विशिष्ट	साधारण
विस्तृत	संक्षिप्त
विषाद	आहद
विनाश	निर्माण
विषम	सम
विवाद	निर्विवाद

बहिकार	स्वीकार
विमुख	सम्मुख
विशालकाय	क्षीणकाय
व्यवहारिक	अव्यावहारिक
विशिष्ट	सामान्य
विपन	सम्पन्न
वृद्ध	तरुण
विकास	हास
विकीर्ण	संकीर्ण
व्यस्त	अकर्मण्य
विशेषण	संश्लेषण
वन	मरु
व्यर्थ	अव्यर्थ
व्यय	आय
विष्यात	कुछ्यात
व्य	पालित
वक्र	ऋजु
विशालकाय	लघुकाय
सौभाग्य	दुर्भाग्य
माधु	असाधु
सुपुत्र	कुपुत्र
सरस	नीरस
साकार	निराकार
सुर	असुर
सुगंध	दुर्गंध
सक्रिय	निष्क्रिय
सञ्जन	दुर्जन
सावधान	असावधान
संघि	विच्छेद
सुख	दुःख
सुन्दर	असुंदर
शिक्षित	अशिक्षित

सदाचार	दुराचार
सफल	विफल
स्वजाति	विजाति
सार्थक	निरर्थक
सुकर्म	कुकर्म
सबल	दुर्बल
सहयोगी	प्रतियोगी
संयोग	वियोग
सकाम	निष्काम
सुलभ	दुर्लभ
सुनुति	निन्द
सशंक	निशंक
सुधा	गर्ल
संन्यासी	गृहस्थ
समाष्टि	व्यष्टि
समूल	निर्मण
सुपति	कुमति
सदाशय	दुराशय
स्वल्पायु	चिरायु
सुपरिणाम	दुष्परिणाम
सौम्य	असौम्य
सुशील	दुःशील
स्वामी	सेवक
सन्धि	विग्रह
सबाध	निर्बाध
स्वार्थ	निस्वार्थ
सक्षम	अक्षम
सलज्ज	निर्लज्ज
सभ्य	असभ्य
सभ्य	निर्भय
सुकाल	अकाल
सुवह	शाम

रोजगार पब्लिकेशन

स्मरण	विस्मरण
स्वदेशी	परदेशी
समाज	व्यक्ति
स्वकीया	परकीया
साक्षर	निरक्षर
सुजन	दुर्जन
सच	झूठ
सजीव	निर्जीव
संक्षेप	विस्तार
सगुण	निर्गुण
सफल	असफल
संतोष	असंतोष
सबल	निर्बल
स्वस्थ	अस्वस्थ
सरल	कठिन
स्वदेश	विदेश
संजीव	निर्जीव
सम	विषम
सजल	निर्जल
सम्मुख	विमुख
सकर्म	निष्कर्म
सनाथ	अनाथ
स्वतंत्रता	परतंत्रता
सम्मान	अपमान
सुपथ	कुपथ

सन्तोष	असन्तोष
संकल्प	विकल्प
स्वधर्म	विधर्म
संघटन	विघटन
सत्कर्म	दुष्कर्म
संकीर्ण	विस्तीर्ण
समास	व्यास
सुसंगति	कुसंगति
सखा	शत्रु
सुगम	दुर्गम
स्थूल	सूक्ष्म
सुष्ठि	प्रलय
स्थिर	चंचल
सत्कार	तिरस्कार
सापेक्ष	निरपेक्ष
सादर	निरादर
सदय	निर्दय
संकोच	असंकोच
सुदूर	अदूर
सामान्य	विशिष्ट
सविकार	निर्विकार
स्वप्न	जागरण
संगत	असंगत
सुभग	दुभग
संग	निःसंग

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. जो सबके अन्तःकरण की बात जानने वाला हो	अन्तर्यामी
2. जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
3. जो शोक करने योग्य न हो	अशोक

4. जो खाने योग्य न हो	अखाद्य
5. जो क्षीण न हो सके	अक्षय
6. जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके	अद्याह, अगाह

7.	जो चिन्ता के योग्य न हो	अचिन्त्य, अचिन्तनीय
8.	जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके	अगोचर, अतीन्द्रीय
9.	जो वस्तु किसी दूसरे के पास रखी हो	अमानत
10.	जो बीत चुका हो	अतीत
11.	जो दिखाई न पड़े	अदृश्य, अप्रत्यक्ष
12.	जो सदा से चला आ रहा है	सनातन
13.	जो कभी नहीं मरता	अमर्त्य, अमर
14.	जो आगे (दूर) की न सोचता हो	अदूरदर्शी
15.	जो आगे (दूर) की सोचता हो	अग्रसोची, दूरदर्शी
16.	धरती (पृथ्वी) और आकाश के बीच का स्थान	अंतरिक्ष
17.	जिसका कोई अर्थ न हो	अर्थहीन
18.	जिस पर आक्रमण न किया गया हो	अनाक्रान्त
19.	जिसे जीता न जा सके	अजेय
20.	बिना वेतन काम करने वाला	अवैतनिक
21.	जिसका जन्म पहले हुआ हो (बड़ा भाई)	अग्रज
22.	दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
23.	जो पराजित न किया जा सके	अपराजेय
24.	अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहना	अतिशयेक्षित, अतियुक्ति
25.	जिसका परिहार (त्याग) न हो सके/ जिसको छोड़ा न जा सके	अपरिहार्य
26.	जो कानून के प्रतिकूल हो/ जो विधि के विरुद्ध हो	अवैध, अविधिक
27.	जो समय पर न हो	असामिक
28.	जो अवश्य होने वाला हो	अवश्यम्भावी
29.	जिसका विवाह न हुआ हो	अविवाहित
30.	जो सबके अन्तःकरण की बात जानने वाला हो	अन्तर्यामी
31.	जिसका इलाज न हो सके	असाध्य
32.	किसी कार्य के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता	अनुदान
33.	व्यर्थ/अनुचित खर्च करने वाला	अपव्ययी

34.	जिसकी पहले से कोई आशा न हो	अप्रत्याशित
35.	पुरुष जो अभिनय करता हो	अभिनेता
36.	जो भेदा या तोड़ा न जा सके	अभेद्य
37.	जिसका जन्म छोटी जाति (निचले वर्षा) में हुआ हो	अंत्यज
38.	जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो	अद्यः प्रसूत
39.	जिसको क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
40.	जो न जाना जा सके	अज्ञेय
41.	जो कुछ न जानता हो	अज्ञ, अज्ञानी
42.	कम बोलने वाला	अल्पभाषी, मितभाषी
43.	थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
44.	जिसका कभी अन्त न हो	अनन्त
45.	जिसका माँ-बाप न हो	अनाथ
46.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
47.	जिस पर मुकदमा चल रहा हो/ जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त, अभियोगी
48.	जिसकी कोई सीमा न हो	असीम
49.	जिसके आने की कोई तिथि न हो	अतिथि
50.	जिसे भुलाया न जा सके	अविस्मृति/ अविस्मरणीय
51.	जिसकी उपमा न हो	अनुपम, अनुपमा
52.	जिसे बुलाया न गया हो/ जो बिना बुलाये आया हो	अनाहृत
53.	जिसका बचन या वाणी द्वारा वर्णन न किया जा सके/जिसे वाणी व्यक्त कर सके	अनिर्वचनीय, अवर्णनीय
54.	जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सके	अकथनीय
55.	जिसका निवारण न हो सकता हो	अनिवार्य
56.	जो अनुकरण करने योग्य हो	अनुकरणीय
57.	किसी के पीछे-पीछे चलने वाला/जो पीछे चलता हो	अनुचर, अनुगामी, अनुयायी
58.	जिस पर अनुग्रह किया गया हो	अनुगृहीत
59.	जो हिसाब किताब की जाँच करता हो	अंकेक्षक
60.	रूप के अनुसार	अनुरूप

रोजगार पञ्चिकेशन

61.	सोच-समझकर कार्य न करने वाला	अविवेकी
62.	जो पहले कभी घटित न हुआ हो	अघटित
63.	जिसकी परिभाषा देना संभव न हो	अपरिभाषित
64.	विकृत शब्द/बिगड़ा हुआ शब्द	अपश्रंश
65.	जो विश्वास करने योग्य (लायक न हो)	अविश्वासनीय
66.	जिसका किसी भी प्रकार उल्लंघन नहीं किया जा सके	अनुलंघनीय
67.	जो अभी तक न आया हो	अनागत
68.	मूल्य घटाने की क्रिया	अवमूल्यन
69.	अधिकार या कब्जे में आया हुआ	अधिकृत
70.	जो पहले कभी नहीं सुना गया	अनुश्रुत
71.	जिसका जन्म अण्डे से हो	अण्डज
72.	गुरु के समीप या साथ रहने वाला विद्यार्थी	अन्तेवासी
73.	जो व्यय न किया जा सके	अव्यय
74.	जिसका उत्तर न दिया गया हो	अनुत्तरित
75.	जो बदला न जा सके	अपरिवर्तनीय
76.	जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाए	आगन्तुक
77.	जो आदर करने योग्य हो	आदरणीय
78.	आशा से अधिक/जिसकी आशा न की गई हो	आशातीत/अप्रत्याशित
79.	आलोचना करने वाला	आलोचक
80.	आदि से अंत तक	आद्योपान्त, आद्यन्त
81.	जो अपने पैरों पर खड़ा हो	आत्म-निर्भर
82.	आभार मानने वाला	आभारी
83.	जो किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोष की आलोचना करता हो	आलोचक
84.	वह कवि जो तत्काल/तत्क्षण कविता कर डालता हो	आशुकवि
85.	जो स्वयं का मत मानने वाला हो	आत्मभिमत
86.	जो ईश्वर को मानता हो	आस्तिक
87.	जो सदा से चला आ रहा हो	चिरन्तन, शाश्वत

88.	जिस पर चिह्न लगाया गया हो	चिह्नित
89.	जिनके चार-चार पैर होते हैं	चतुष्पद, चौपाया
90.	जिसके सिर पर चन्द्रमा (चन्द्र) है	चंद्रशेखर
91.	जहाँ से अनेक मार्ग चारों ओर जाते हैं	चौराहा
92.	छोटे से छोटे दोष को खोजने वाला	छिद्रान्वेषी
93.	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
94.	कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की चाह	जिजासा
95.	जिसने इन्द्रियों पर विजय पा ली हो	जितेन्द्रिय
96.	जो अवैध सत्तान हो	जारज
97.	तीनों कालों (भूत, वर्तमान और भविष्य) को जानने वाला	त्रिकालज्ञ, त्रिकालदर्शी
98.	ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो	तदर्थजीविका
99.	धरती और आकाश के बीच का स्थान	अंतरिक्ष
100.	जो आगे की सोचता हो	दूरदर्शी
101.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
102.	जो दुबारा जन्म लेता हो	द्विज, द्विजना
103.	जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
104.	जिसका दमन करना कठिन हो	दुर्दम, दुर्दम्य
105.	स्त्री-पुरुष का जोड़/पति एवं पत्नी	दंपति, दंपती
106.	दिन में कम दिखायी देता हो	दिनैधी
107.	जंगल की आग	दावानल
108.	जो बहुत कठिनाई से मिलता है	दुर्लभ, दुष्याप
109.	ऐसा अकाल कि भिक्षा देना/लेना भी कठिन हो	दुर्भिक्ष
110.	अनुचित वात के लिए आग्रह	दुराग्रह
111.	ज्ञान नेत्र से देखने वाला अन्ध व्यक्ति	दिव्यदृष्टि
112.	कठिनाई से समझने योग्य	दुर्बोधगम्य
113.	जिसकी जीविका दान पर चलती हो	दानवृत्ति
114.	जो देखने योग्य हो	द्रष्टव्य, दर्शन
115.	जिस वर की शादी दूसरी बार हो रही हो	द्विवर

116.	दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच मध्यस्थता करने वाला	द्विभाषिया
117.	जिसकी धर्म में निष्ठा हो	धर्मनिष्ठ
118.	जो गणना के अयोग्य हो	नगण्य
119.	जो ईश्वर को न मानता हो	नास्तिक
120.	जो निन्दा के योग्य हो	निन्दनीय
121.	जो नीचे लिखा गया है	निम्नलिखित
122.	जो किसी से न डरे	निडर
123.	जो भयभीत न होता हो	निर्भीक, निर्भय, अभय
124.	मांस न खाने वाला	निरामिष/शाकाहारी
125.	जिसके मन/हृदय में दया न हो	निर्दय, निर्दयी
126.	जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
127.	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
128.	जिसका कोई आश्रय न हो	निराश्रय
129.	आकाश में विचरण करने वाला	नभचर
130.	जिसके विषय में मत-भेद न हो	निर्विवाद
131.	जो नया आया हो	नवागत, आगुन्तक
132.	जहाँ किसी बात का डर अथवा खतरा न हो	निरापद
133.	देश के बाहर माल भेजना	निर्यात
134.	जिसकी आशा न की गई हो	अप्रत्याशित
135.	जहाँ आबादी न हो	निर्जन
136.	जो इन्द्रिय रहित हो	निरीन्द्रिय
137.	जिसका गला नीले रंग का है	नीलकंठ
138.	जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक
139.	जो नापा जा सके	नापनीय, नाप्य
140.	निम्न कोटि का	निकृष्ट
141.	जिसे बाणी वयक्त न कर सके	निर्वाक्
142.	नष्ट हो जाने वाला	नष्ट प्राय
143.	नीले रंग का कमल	नीलकमल
144.	जो शंका करने योग्य न हो	निःशंक
145.	पृथ्वी से संबंधित या मिट्टी का बना हुआ	पार्थिव

146.	जो देखने में प्रिय लगे	प्रियदर्शी
147.	इतिहास के युग से पूर्व का	प्रागैतिहासिक
148.	जिस स्त्री के पुत्र, पति दोनों हों	पुरन्धि
149.	पिता से प्राप्त की हुई सम्पत्ति	पैतृक
150.	पते की बनी हुई कुटी	पर्णकुटी
151.	किसी के निधन की वार्षिक तिथि	पुण्यतिथि
152.	कही बात को बार-बार दुहराना	पिष्टपेषण, पुनरुक्ति
153.	जिसके पार देखा जा सके	पारदर्शी, पारदर्शक
154.	जो अपनी जन्म भूमि छोड़कर विदेश में वास करता हो/जो व्यक्ति विदेश में रहता हो	प्रवासी
155.	दिन का पहला भाग सबेरे से दोपहर तक/दोपहर से पूर्व का समय	पूर्वाह्न
156.	दूसरों का उपकार/हित/भला करने वाला	परोपकारी
157.	पुस्तक या लेखक की हस्तलिखित प्रति	पाण्डुलिपि
158.	जो दूसरे के अधीन हो	पराधीन
159.	स्त्री जिसे पति ने छोड़ दिया हो	परित्यक्ता
160.	जो निगाह (आँखों) से परे हो	परोक्ष, अप्रत्यक्ष
161.	शीघ्र आग पकड़ने वाला	प्रज्वलनशील
162.	पर्वत की ऊँचाई आदि का पता लगाने वाला अभियान दल	पर्वतारोही दल
163.	एक मतवाद, जिसमें जीवन का सच्चाई और कठिनाइयों से भागने की प्रवृत्ति हो	पलायनवाद
164.	लौटकर आया हुआ	प्रत्यावर्ती
165.	जिस पर मुकदमा चल रहा हो/ जो दायर मुकदम का प्रतिवाद (बचाव) करे	प्रतिवादी
166.	ग्रन्थ के वे बचे हुए अंश जो प्रायः अन्त में जोड़े जाते हैं	परिशिष्ट
167.	रात्रि का प्रथम प्रहर/रात्रि के पूर्व भाग का समय	प्रदोष
168.	प्रयत्न करना जिसका स्वभाव हो	प्रयत्नशील
169.	जो केवल फल खाकर रहता हो	फलाहारी

रोजगार परिवर्तनकेशन

170.	बहुत सी भाषाओं को जानने वाला/ जो एक से अधिक भाषाएँ जानता हो	बहुभाषाविद्, बहुभाषी
171.	जो आगे की बात सोचता है	भविष्यवेता
172.	जो भारत में रहता हो	भारतीय, भारतवासी
173.	भूर्गमृश विज्ञान का जानकार/जिसको भूमि के अन्दर की जानकारी हो	भूगर्भविता, भूगर्भशास्त्री
174.	जो भू(भूमि) को धारण करता है	भूधर
175.	जो पूर्व में था या हुआ था पर अभी नहीं है	भूतपूर्व
176.	दोपहर का समय	मध्याह्न
177.	जिसे मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा हो	मुमुक्ष
178.	मन, वचन और कार्य से	मनसा-वाचा-कर्मणा
179.	जो कम खर्च करने वाला हो	मितव्ययी, कंजुस
180.	जिसने मृत्यु का जीत लिया हो/जिसने मृत्यु पर विजय पाई हो	मृत्युंजय
181.	थोड़ा और नपा-तुला भोजन करने वाला	मिताहारी
182.	किसी बात के मर्म (गूढ़ रहस्य) को जानने वाला/ मन की बात जानने वाला	मर्मज्ञ
183.	प्रिय वचन बोलने वाली स्त्री	मृदुभाषिणी
184.	जो कम बोलने वाला हो	मितभाषी
185.	जो मृत्यु के समीप हो	मरणासन्न
186.	जो कम जानता है	मन्दबुद्धि
187.	जो अपने मार्ग से भटक गया हो	मार्गभ्रमित
188.	अपनी शक्ति भर	यथाशक्ति
189.	जहाँ तक और जितना संभव हो	यथासंभव
190.	जिसने यश प्राप्त किया हो/जिसका यश चारों ओर फैल गया हो	यशस्वी
191.	जो युद्ध में स्थिर रहता हो	युधिष्ठिर
192.	जहाँ नाटक खेला जाता है	रंगमंच
193.	जो बात वर्णन के परे (बाहर) हो	वर्णनातीत
194.	विष्णु संबंधी या उस संप्रदाय के नियमों पर चलने वाला	वैष्णव
195.	अनुचित यौन सम्बन्ध रखने वाला	व्यभिचारी

196.	विभिन्न प्रकार के विवादों में फँसा हुआ	विवादास्पद
197.	जो विधि/कानून की दृष्टि से ठीक /मान्य हो	वैध
198.	किसी विषय का, जिसको विशेष ज्ञान हो	विशेषज्ञ
199.	जिस स्त्री का पति जीवित न हो	विधवा
200.	जिस पुरुष की पत्नी मर चुकी हो	विधुर
201.	किसी मामले के खिलाफ दिया गया मत	विमति, टिप्पणी
202.	वाणी का विकार	वाङ्मय
203.	काम के लिए अनुपयुक्त समय	वृथासमय
204.	दूसरों के कार्य में विघ्न डालने वाला	विघ्नकारी
205.	विदेश में रहने वाला	विदेशी
206.	जो व्याकरण को जानने वाला हो	वैयाकरण
207.	जो व्यक्ति अधिक बोलता हो	वाचाल
208.	जो कानून के अनुकूल हो	विधि-सम्मत
209.	वनस्पति का आहार करने वाला	वनस्पत्याहारी
210.	जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय, विश्वासपात्र
211.	जिसका कोई अंग बेकार हो	विकलांग, अपां
212.	सौ वस्तुओं का संग्रह	शतक
213.	सौ वर्षों का समूह, अवधि या समय	शतवर्ष, शताब्दी
214.	सदैव रहने वाला	शाश्वत, अनाधन
215.	जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता	शब्दातीत
216.	जिसके सिर पर चन्द्रमा हो	शशिधर
217.	जो सदा दूसरों पर संदेह करता हो	शंकालु
218.	समान रूप से ठण्डा और गरम	शीतोष्ण
219.	वह जिसका शोषण किया जाय	शोषित
220.	जहाँ सेना रहती हो	सैन्यवास
221.	जो सर्वत्र व्याप्त हो	सर्वापी
222.	जो सबको एक-सा समझता हो	समदर्शी
223.	जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
224.	जिसकी सीमा न हो	सीमातीत, असीम

225.	जो पढ़ना लिखना जानता हो/जिसे अक्षर-ज्ञान हो	साक्षर
226.	जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा, सौभाग्यवती
227.	जो असत्य न बोले/सत्य बोलने वाला	सत्यावादी
228.	अच्छे आचरण वाला	सदाचारी
229.	जो आसानी से प्राप्त किया जा सके	सुग्राह्य
230.	जहाँ खाना मुफ्त में मिलता है	सदाब्रत, लंगर
231.	अपनी इच्छा के अनुसार आचरण करने वाला	स्वेच्छाचारी
232.	स्त्री के वश में रहने वाला/जिसका स्वभाव स्त्रियों जैसा हो	स्त्रैण
233.	दो धाराओं या नदियों के मिलन का स्थान	संगम
234.	बहुत पढ़ी-लिखी स्त्री	सुशिक्षिता
235.	जो हमेशा /निरंतर रहने वाला हो	स्थायी, शाश्वत
236.	अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	स्वयंसेवक
237.	जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो	स्वयंपाकी
238.	जो सब्य (बायें) हाथ से काम करता हो	सब्यसाची

239.	जो एक ही माता के उदर (पेट) से उत्पन्न हुए हों	सहोदर
240.	संदेश ले जाने वाला	संदेशवाहक
241.	बहुत पढ़ी-लिखी स्त्री	सुशिक्षिता
242.	अच्छी आँखों वाली स्त्री	सुनयना
243.	किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की प्रबल इच्छा	स्पर्द्धा
244.	जो स्मरण रखने योग्य हो	स्मरणीय
245.	जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो	स्वयंभू
246.	जो संसार का संहार करता हो	संहारक
247.	जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो	सुग्रीव
248.	पसीने से उत्पन्न होने वाला	स्वेदज
249.	भला या हित चाहने वाला	हितैषी
250.	मिठाई बनाकर बेचने वाला	हलवाई
251.	जो क्षमा पाने योग्य है	क्षम्य
252.	जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई पड़ें	क्षितिज
253.	भूत, भविष्य एवं वर्तमान को देखने वाला	त्रिकालदर्शी

० लिंग

⇒ परिभाषा

जैसा कि हम जानते हैं कि 'संज्ञा' किसी व्यक्ति या वस्तु के नाम को कहते हैं और उसकी कोई न कोई जाति होगी चाहे वह पुरुष जाति हो या स्त्रीजाति और वस्तु की उस जाति के बोध को ही लिंग कहते हैं अर्थात् संज्ञा के उस रूप से जिससे वस्तु या व्यक्ति के पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध होता है, व्याकरण में उसे 'लिंग' कहते हैं।

'लिंग' शब्द का अर्थ है 'चिन्ह' या पहचान। लिंग शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। कोई भी वस्तु सजीव हो या निर्जीव उसकी जाति अवश्य होती है।

जैसे—कुर्सी, प्याली, माता-पिता, पेड़, लोटा इत्यादि।

⇒ लिंग के प्रकार

वैसे तो लिंग तीन प्रकार के होते हैं—

- (i) पुल्लिंग
- (ii) स्त्रीलिंग
- (iii) नेपुसकलिंग

लेकिन हिन्दी में दो ही लिंग की मान्यता है—(i) पुलिंग, (ii) स्त्रीलिंग हिन्दी में इन्हीं दो लिंगों के आधार पर ही समस्त सजीव या निर्जीव पदार्थवाचक शब्दों को विभक्त करते हैं।

⇒ हिन्दी में नपुसक लिंग को स्थान नहीं दिया गया है।

(i) पुलिंग शब्द—

पुरुष जाति बोधक शब्द पुलिंग होता है।

जैसे—धातु, अन, तारे, ग्रह, रत्न, शहर, पहाड़, माह आदि।

अपवाद—पृथ्वी, चाँदी, अरहर, इमली, बाणी, अयोध्या आदि शब्द स्त्रीलिंग है।

(ii) स्त्रीलिंग शब्द—

स्त्री जाति बोधक शब्द स्त्रीलिंग श्रेणी में आते हैं।

जैसे—नदियों के नाम, तिथियों या त्योहारों के नाम इत्यादि।

अपवाद—सिन्धु, सोन, ब्रह्मपुत्र आदि पुलिंग शब्द है।

इतना तो हम सब बहुत अच्छे से जानते हैं कि लिंग में अगर त्रुटि हुई तो पूरा वाक्य त्रुटि पूर्ण हो जाएगा। उच्चारण, पठन-पाठन एवं लेखन की दृष्टि

से लिंग का सटीक बोध अनिवार्य है। आइए हम समझते हैं लिंग के निर्णय एवं निर्धारण की सरल प्रयुक्ति प्रक्रिया।

वाक्यों में लिंग-निर्णय

वाक्यों में लिंग की अभिव्यक्ति से संज्ञा शब्द के लिंग रूप स्पष्ट होते हैं। वाक्यों में लिंग, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण एवं विभक्तियों में विकार उत्पन्न करता है। जैसे—

सर्वनाम में लिंग निर्णय एवं विकार उत्पन्न होने की प्रक्रिया

उदाहरण—

मेरा जूता बड़ा है।	[‘जूता’ पुलिंग के अनुसार]
मेरी चोटी बड़ी है।	[‘चोटी’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
उसकी पुस्तक खो गई है।	[‘पुस्तक’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
उसका स्कूल बद्द है।	[‘स्कूल’ पुलिंग के अनुसार]
उपर्युक्त उदाहरणों में हमने देखा सर्वनाम शब्दों में लिंग के अनुसार परिवर्तन एवं उससे उत्पन्न विकार।	

क्रिया में लिंग निर्णय एवं विकार

उदाहरण—

क्या जमाना आ गया।	[‘जमाना’ पुलिंग के अनुसार]
उसको सहायता मिली है।	[‘सहायता’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
खिचड़ी बनी है।	[‘खिचड़ी’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
भात पका है।	[‘भात’ पुलिंग के अनुसार]

विशेषण में लिंग निर्णय एवं विकार

छोटा सा बच्चा आया है।	[‘बच्चा’ पुलिंग के अनुसार]
यह छोटी गुड़िया है।	[‘गुड़िया’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
यह बड़ा कमरा है।	[‘कमरा’ पुलिंग के अनुसार]
यह छोटी लकड़ी है।	[‘लकड़ी’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
विचार-दृष्टि— हिन्दी में विशेषण का लिंग भेद दो नियमों के अनुसार दिया जा सकता है—	

(क) आकारान्त विशेषण स्त्रीलिंग में इकारांत हो जाते हैं;
जैसे— छोटा-छोटी, बड़ा-बड़ी, पीला-पीली, उजला-उजली आदि।

(ख) आकारान्त विशेषण के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।
जैसे—

लकड़ी सुन्दर है।
मेरी पगड़ी गोल है।
मेरी टाई (कण्ठ लैंगोट) सीधी है।
विशेषण शब्द— गोल, लाल, काला, सुन्दर, सुडौल आदि विशेषण है।

विभक्ति में लिंग निर्णय एवं विकार

उदाहरण—

सम्बन्ध— गुलाब का रंग लाल है।	[‘रंग’ पुलिंग के अनुसार]
आपका व्यक्तित्व शानदार है।	[‘व्यक्तित्व’ पुलिंग के अनुसार]
आपके कान छोटे हैं।	[‘कान’ पुलिंग के अनुसार]
आपकी नाक सुन्दर है।	[‘नाक’ स्त्रीलिंग के अनुसार]
सम्बोधन— हे माँ ! आप सर्वप्रथम हो।	(माँ’ स्त्रीलिंग के अनुसार)

तत्सम (संस्कृत) शब्दों का लिंग-निर्णय

⇒ संस्कृत पुलिंग शब्द एवं पहचान नियम

पं० कामताप्रसाद जी ने संस्कृत पुलिंग शब्दों के पहचान के नियम बताए, जो निम्नलिखित हैं—

(क) ‘नांत’ संज्ञाए—

जैसे—नयन, हरण, गमन, पालन, पोषण, वचन, दमन आदि पुलिंग शब्द है।

अपवाद—‘पवन’ उभयलिंग है।

(ख) ‘ज’ प्रत्यांत संज्ञाएँ, अर्थात् जिनके संज्ञाओं के अन्तिम शब्द ‘ज’ प्रत्यय हो—

जैसे—सरोज, जलज, पिंडज आदि।

(ग) ‘त्र’ जिन संज्ञाओं के अन्त में ‘त्र’ हो—

जैसे—नेत्र, पात्र, चरित्र, शस्त्र, अस्त्र, चित्र आदि।

(घ) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ‘व’ व् ल् हो—

जैसे—कृत्य, बहूत्य, नृत्य, लाघव, माधुर्य आदि।

(ङ) जिन शब्दों के अन्त में ‘आर’, ‘आय’, ‘आस’ आया हो—

जैसे—विस्तार, विकास, विकार, संसार, उपाय, समुदाय आदि।

अपवाद—‘सहाय’ (उभयलिंग) और ‘आय’ (स्त्रीलिंग) आदि।

(च) ‘अ’ प्रत्यांत संज्ञाएँ;

जैसे—पाक, दोष, स्पर्श, क्रोध, त्याग, मोह आदि।

अपवाद—‘जय’ (स्त्रीलिंग), ‘विनय’ (उभयलिंग) आदि।

(छ) ‘त’ प्रत्यांत संज्ञाएँ—

जैसे—गणित, उदित, प्रज्वलित, फलित, गीत, स्वागत आदि।

(ज) जिन शब्दों के अन्त में (ख) आया हो;

जैसे—दुःख, सुख, मुख, नख, लेख, शंख, मख आदि।

उपर्युक्त नियमों के आधार पर आप संस्कृत पुलिंग शब्द को असानी से कर सकते हैं।

⇒ संस्कृत स्त्रीलिंग शब्द एवं पहचान नियम

पं० कामताप्रसाद जी ने संस्कृत स्त्रीलिंग शब्दों के पहचान के नियम बताए हैं, जो निम्नलिखित है—

(क) आकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—दया, माया, क्षमा, शोभा, कृपा, लज्जा आदि।

(ख) उकारांत (.) संज्ञाएँ—

जैसे—रेणु, जानु, वायु, रज्जू, मृत्यु, आयु, धृति, ऋतु आदि।

अपवाद—मधु, अश्रु, हेतु, मेरु, तालु, सेतु आदि।

(ग) नकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—वेदना, रचना, घटना, प्रस्तावना, प्रार्थना आदि।

(घ) जिन शब्दों के अन्त में 'ति' व 'नि' हो—

जैसे—यति, हनि, योनि, बुद्धि, सिद्धि (सिध् + ति = सिद्धि), गति आदि।

(ड) 'ता' प्रत्यायांत भाववाचक संज्ञाएँ हैं—

जैसे—लघुता, प्रभुता, ममता, जड़ता, नप्रता, लघुता, सुन्दरता आदि।

(च) इकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—केलि, रुचि, परिधि, विधि, छवि, अग्नि, राशि आदि।

अपवाद—जलधि, आदि, बलि, वारि, पाणि, गिरि आदि।

(छ) 'इमा' प्रत्यायांत शब्द आएँ तब—

जैसे—गरिमा, लालिमा, महिमा, कलिमा आदि।

उपर्युक्त नियमों के आधार पर संस्कृत स्त्रीलिंग शब्द पहचान सकते हैं।

⇒ तद्भव (हिन्दी) शब्दों का लिंग निर्णय

तद्भव शब्दों के लिंग निर्णय के नियम के बारे में विद्वानों में मतभेद है। दासकर अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग भेद में अत्यधिक कठिनाई है। पं० कामताप्रसाद गुरु ने तद्भवों संबंधों की स्पष्ट परख के लिए पुलिंग के तीन एवं स्त्रीलिंग के उस (10) नियमों को प्रतिपादित किया जो निम्नलिखित है—

तद्भव पुलिंग शब्द

(क) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में पन, आव, ना, पा, वा हों—

जैसे—आना, जाना, बहाव, लगाव, बड़प्पन, बुढ़ापा, गाना आदि।

(ख) ऊनवाचक संज्ञाओं के अतिरिक्त शेष आकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—गन्ना, आटा, चमड़ा, कपड़ा, पैसा, रुपया आदि।

(ग) कृदंत की आरांत संज्ञाएँ—

जैसे—थकान, लगान, खान, पान, उठान, चढ़ान आदि।

अपवाद—उडान, चट्टान आदि।

तद्भव स्त्रीलिंग शब्द

(क) ऊनवाचक याकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—खटिया, पुड़िया, ठिलिया, गुड़िया, चकिया आदि।

(ख) सकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—खटास, मिठास, बाँस, साँस, बिंदास, प्यास आदि।

अपवाद—निकास, बाँस, रास (नृत्य)

(ग) ईकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—टोपी, टोटी, नदी, उदासी, चिट्ठी आदि।

अपवाद—जी, घी, दही, मोती, धोती इत्यादि।

(घ) तकारांत संज्ञाएँ

जैसे—रात, मीत, लात, बात, छत आदि।

(ड.) ऊकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—दारू, बालू, लू, झाड़ू आदि।

अपवाद—आँसू, रतालू, आलू टेसू आदि।

(च) अनुस्वारांत संज्ञाएँ—

जैसे—झौं, जूँ, सरसों, चूँ आदि।

अपवाद—गेहूँ

(छ) कृदंत नकारांत संज्ञाएँ; जिनका उपांत्य वर्ण अकारांत हो

(कृदन्त नकारांत के पहले वाला शब्द अकारान्त हो) अथवा धातु नकारांत हो—

जैसे—सहन, रहन, उलझन, पहचान आदि।

अपवाद—निशान, चलन आदि।

(ज) कृदन्त अकारांत संज्ञाएँ—

जैसे—समझ, दौड़, सँभाल, लूट, कूट, रगड़ आदि।

अपवाद—मेल, बिगड़, उतार, नाच आदि।

(झ) भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ट, हट, वट हो तो—

जैसे—आहट, झंझट, मुस्कुराहट, घबराहट, चिकनाहट आदि।

(ज) जिन संज्ञाओं के अन्त में 'ख' शब्द हो—

जैसे—भूख, सूख, चौख, कोख, देखरेख, राख काँख आदि।

अपवाद—पंख, रुधि।

अर्थ के अनुसार लिंग-निर्णय

कुछ लोग अप्राणिवाचक शब्दों का लिंगभेद अर्थ के अनुसार करते हैं। पं० कामताप्रसाद जी ने इस आधार और दृष्टिकोण को 'अत्यापक और अपूर्ण' कहा है, क्योंकि इनके उदाहरणों में सामान्यतः बहुत अपवाद हैं। इसके अतिरिक्त जो थोड़े-बहुत नियम बने भी हैं, उसमें भी सभी तरह के शब्दों का समागम नहीं हो पाता है। पं० कामताप्रसाद जी के नियमों में भी अपवादों की भरमार है। यह कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

⇒ (क) अप्राणिवाचक पुलिंग हिन्दी शब्द एवं नियम

(i) शरीर के अंगों के नाम पुलिंग होते हैं—

प्रत्ययों के आधार पर तद्भव हिन्दी शब्दों का लिंग निर्णय

हिन्दी के कृदंत और तद्भित-प्रत्ययों में स्त्रीलिंग-पुलिंग बनाने वाले प्रत्यय इस प्रकार हैं—

स्त्रीलिंग कृदंत-प्रत्यय शब्द

जिन शब्दों के अन्त में कृदंत-प्रत्यय अ, आई, अन्त, आन, आस, आवट, ई, आवनी, औती, क, की, त, ती, नी आदि धातु शब्द लगे होते हैं; वे स्त्रीलिंग होते हैं।

रोजगार पब्लिकेशन

जैसे— करनी, भरनी, बचत, गिनती, देन बैठक, छावनी, मलूटक, चमक, भिंडल, लड़ाई, लिखावट, प्यास, घबराहट, हँसी आदि।

- नोट— 'अ, क और 'न' प्रत्यय कहीं-कहीं पुलिंग और उभयलिंग में भी आते हैं। जैसे— 'सोवन ('न' प्रत्यय है अन्त में) श्रेणीभेद से दोनों लिंगों में चलता है। शेष सभी प्रत्यय स्त्रीलिंग हैं।

पुलिंग कृदंत-प्रत्यय शब्द

- नोट— (i) 'क' और 'न' कृदंत-प्रत्यय उभयलिंग है। इन दो प्रत्ययों और स्त्रीलिंग के प्रत्ययों को शेष पुलिंग प्रत्यय होते हैं।
- (ii) 'सार' उर्दू का कृदन्त-प्रत्यय है, जो फारसी से हिन्दी में आया है और ये अधिक प्रयुक्त भी होता है।

पुलिंग तद्धित-प्रत्यय शब्द

- नोट— (i) इया, ई, एर, एल, क तद्धित प्रत्यय उभयलिंग है।
- (ii) विशेषण हमेशा अपने विशेष्य लिंग के अनुसार प्रयुक्त होता है। जैसे— 'ल' तद्धित-प्रत्यय संज्ञा शब्दों में जब प्रयुक्त होता है तब उन्हें स्त्रीलिंग कर देता है, मगर विशेषण में—

समध्वनि भिन्नार्थक युग्म

ऐसे शब्दों के प्रयोग के बारे में सावधान रहने की आवश्यकता होती है, जिनका उच्चारण एक-आध अक्षर (स्वर, स्वर की मात्रा या व्यंजन) के हेर-फेर के कारण धोखे में डाल सकता है। आगे हम इस प्रकार के लगभग 350 युग्म (जोड़े) दे रहे हैं। युग्म तो दो शब्दों का होता है, परन्तु इन सूचियों में तीन-तीन और थोड़े से समूह भी चार-चार समाच्चरित शब्दों के मिलेंगे, जिनमें अर्थभेद स्पष्ट है।

पाठक स्वयं अनुभव करेंगे कि भाषा में कितने सूक्ष्म भेद होते हैं जिन पर कभी उनका ध्यान नहीं गया था।

अंचल	(किसी क्षेत्र का पार्श्व)
आँचल	(कपड़े का छोर)
अंजित	(अंजनयुक्त)
अजित	(जिसको कोई जीत नहीं पाया)

अंत	(समाप्ति)
अंत्य	(अंतिम)
अंतर	(फर्क)
अनंतर	(बाद)
अंश	(हिस्सा)
अंस	(कंधा)
अगम	(जहाँ कोई न पहुँच सके)
आगम	(शास्त्र)

'घाय + ल = घायल' अपने विशेष्य के अनुसार होगा, अर्थात् यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हुआ तो 'घायल' स्त्रीलिंग होगा, आगे विशेष्य पुलिंग हुआ तो 'घायल' पुलिंग होगा।

(iii) अधिकतर भाववाचक और ऊनवाचक प्रत्यय स्त्रीलिंग होते हैं।

उर्दू-शब्दों का लिंग-निर्णय

हिंदी में उर्दू, अरबी-फारसी के बहुत शब्द आए हैं, जिनको हम प्रतिदिन अपनी रोजमर्रा में प्रयोग करते हैं। इनका लिंगभेद निम्नलिखित नियमों के अनुसार किया जाता है—

पुलिंग उर्दू शब्द

(i) जिनके अंत में 'आव' हो, वे पुलिंग हैं—

जैसे— गुलाब, जुलाब, जबाब, हिसाब, कबाब

अपवाद— किमखाब, शराब, किताब, मिहराब, ताब आदि।

अगर	(यदि)
आगर	(भंडार)
अगला	(आगे का)
अर्गला	(रोकने की कील)
अचर	(न चलने वाला)
अचिर	(हाल का)
अणु	(कण)
अनु	(पीछे)
अथक	(जो न थकता हो)
अकथ	(जो कहा न जा सके)
अनल	(वायु)
अनिल	(अग्नि)
अनादि	(जिसका आरम्भ नहीं है)
अन्नादि	(अन्न वर्गेरह)
अनुसार	(अनुरूप)
अनुस्वार	(स्वर का नासिकीय रूप)
अन्न	(अनाज)

अन्य	(दूसरा)
अब्ज	(कमल)
अब्द	(वर्ष)
अभिनय	(नाटक का खेल करना)
अविनय	(धृष्टता)
अधिराम	(सुन्दर)
अविराम	(लगातार)
अमल	(बिना मैल)
अम्ल	(तेजाब)
अमूल	(बिना जड़ का)
अमूल्य	(अनमोल)
अयुक्त	(बिना जुड़ा)
आयुक्त	(कमिशनर)
अरथी	(टिकठी)
अर्थी	(चाहने वाला)
अरबी	(अरब देश का)
अरबी	(एक कंद)
अरि	(शत्रु)
अरी	(हे!)
अलि	(भौंरा)
अली	(सखी)
अवधि	(नियत समय)
अवधी	(अवधि की बोली)
अवयव	(अंग)
अव्यय	(अविकारी शब्द)
अवरोध	(रुकावट)
अविरोध	(बिना विरोध के)
अवलंब	(सहारा)
अविलंब	(शीघ्र)
अवश	(जो वश में न हो)
अवश्य	(जरूर)
अशक्त	(निर्बल)

असक्त	(उदासीन)
अशोच	(चिंतारहित)
अशौच	(अपिवत्रता)
असन	(भोजन)
आसन	(सीट)
आचार	(रीति व्यवहार)
आचार्य	(विद्वान्)
आदि	(वर्गरह)
आदी	(अभ्यस्त)
आधि	(मानसिक कष्ट)
आधी	(आधा की स्त्री०)
आभास	(भ्रम-सा)
आवास	(निवास-स्थान)
अभ्यास	(आदत)
आयत	(लम्बा चौड़ा)
आयात	(देश में माल लाना)
आरती	(धूप, दीप आदि द्वारा पूजन)
आर्ति	(दुःख)
आसन	(बैठने की जगह)
आसन्न	(निकट का)
आहुति	(हवन की चीज)
आहूति	(बुलाना)
इतर	(अन्य)
इत्र	(अतर, पुष्पसार)
उतर	(नीचे आना)
उत्तर	(जवाब)
उदाहरण	(मिसाल)
उद्धरण	(वाक्य का वैसा ही कथन)
उन	(वे का विकार)
ऊन	(भेड़ आदि के बाल)
उपस्थित	(हाजिर)
उपस्थिति	(हाजिर)

रोजगार पब्लिकेशन

ऋतु	(सत्य)
ऋतु	(मौसम)
ओटना	(बिनौले अलग करना)
औटना	(खौलना)
ओर	(तरफ)
और	(तथा)
कंकड़ी	(छोटा कंकड़)
ककड़ी	(एक प्रसिद्ध तरकारी)
कच	(केश)
कुच	(स्तन)
कटिबद्ध	(कमर कसे तैयार)
कटिबंध	(पृथ्वी का भाग)
कडाई	(सख्ती)
कडाही	(एक गोल बर्तन)
कढाई	(काढ़ने का काम)
कड़ी	(जंजीर का छल्ला)
कड़ी	(दही और बेसन का सालन)
कदम	(डग)
कदंब	(एक पेड़)
कपिश	(मटमैला)
कपीश	(हनुमान)
करकट	(कचरा)
कर्कट	(केकड़ा)
करण	(साधन)
कर्ण	(कान)
करोड़	(100 लाख)
क्रोड़	(गोद)
कलपना	(दुखी होकर बिलखना)
कल्पना	(मूर्त विचार)
कलि	(कलयुग)
कली	(अनखिला फूल)
कांति	(चमक)

क्रांति	(उलट-फेर)
क्लांति	(थकावट)
कुटी	(झोपड़ी)
कुट्टी	(चारा)
कुल	(सारा)
कूल	(किनारा)
कृत	(किया हुआ)
क्रीत	(खरीदा हुआ)
कृत्य	(काम)
कृति	(रचना)
कृती	(निपुण)
कोर	(सिरा)
कौर	(निवाला)
कोश	(शब्दों का संग्रह)
कोष	(खजाना)
कोशल	(दो किलोमीटर की दूरी)
कौशल	(निपुणता)
क्षात्र	(क्षत्रिय संबंधी)
छात्र	(विद्यार्थी)
खाद	(पांस)
खाद्य	(खाने लायक)
खाड़ी	(उपसागर)
खारी	(नमकीन)
खोआ	(मावा)
खोया	(गुम हुआ)
खोलना	जकड़ से मुक्त करना
खौलना	(उबलना)
गड़ना	(चुभना)
गढ़ना	(बनाना)
गण	(समूह)
गण्य	(गिने जाने योग्य)

गत	(बीता हुआ)
गति	(चाल)
गाड़ी	(यान)
गाढ़ी	(गहरी)
गुटका	(पुस्तिका)
गुटिया	(गोली)
गूँथना	(पिरोना)
गूँधना	(सानना)
ग्रंथ	(पुस्तक)
ग्रंथि	(गाँठ)
घोर	(बहुत बुरा)
घोल	(घुला-मिश्रण)
चंट	(चतुर)
चंड	(क्रोधी)
चक्रवाक	(चक्रवा पक्षी)
चक्रवात	(बर्वंडर)
चतुष्पद	(चौपाया)
चतुष्पथ	(चौराहा)
चपत	(तमाचा)
चंपत	(गायब)
चरम	(सबसे अधिक)
चर्म	(चमड़ा)
चार	(दो-दो)
चारु	(सुंदर)
चित	(सिर के बल)
चित्त	(मन)
चिर	(अधिक काल)
चीर	(कपड़ा)
चूँझ	(चोटी)
चूर	(शिथिन, शिथिल)
चोरी	(चोर का काम)
चौंरी	(छोटा चँवर)

चौंक	(एकाएक आहट)
चौ	(नगर का मध्य भाग)
छत	(पाटन)
क्षत	(जख्मी)
छत्र	(बड़ा छाता)
छात्र	(विद्यार्थी)
छीन	(जबरदस्ती ले लेना)
क्षीण	(कमजोर)
जगत्	(संसार)
जगत	(कुएँ का चौतरा)
जघन्य	(बहुत बुरा)
जघन	(नितंब)
जरठ	(बूढ़ा)
जठर	(पेट)
जलद	(बादल)
जल्द	(शीघ्र)
जुआ	(बैल के कंधे के लकड़ी)
जूआ	(द्वृत)
जूठा	(खाने में से छोड़ा हुआ)
झूठा	(जो सच्चा न हो)
जोंक	(पानी का एक कीड़ा)
झोंक	(झुकाव)
झक	(सनक)
झख	(तुच्छ कार्य)
टुक	(ज़रा)
टूक	(टुकड़े)
टोटा	(घाटा)
टोंटा	(बंदूक का कारतूस)
डाँट	(फटकार)
डाट	(टेक)
डीठ	(दृष्टि, नजर)
ढीठ	(धृष्ट)

डोल	(एक बरतन)
ढोल	(एक प्रसिद्ध बाजा)
ढलाई	(ढालने का काम)
ढिलाई	(शिथिलता)
तक्र	(छाछ)
तर्क	(दलील)
तड़क	(जलदी)
तड़ग	(तालाब)
तर	(गीला)
तरु	(पेड़)
दमन	(दबाना, निग्रह)
दामन	(पहाड़ के नीचे का भाग)
दायी	(देने वाला)
दाई	(दासी)
दारु	(लकड़ी)
दाल	(शराब)
दिन	(दिवस)
दीन	(दरिद्र)
दिवा	(दिन)
दीवा	(दीया)
दूत	(एलची)
द्यूत	(जूआ)
दौरा	(चक्कर)
दौड़ा	(दौड़ लगाई)
द्विप	(हाथी)
द्वीप	(टापू)
धन	(रूपया-पैसा)
धन्य	(पुण्यवान)
धरा	(पृथ्वी)
धारा	(प्रवाह)
धर्म	(कर्तव्य)
धर्म	(गरमी)

नाई	(नडआ)
नाई	(तरह)
नहर	(कृत्रिम जलमार्ग)
नाहर	(सिंह)
नांदी	(मंगलाचरण)
नंदी	(शिव का बैल)
निगम	(संस्था)
निर्गम	(निकास)
निमित्त	(हेतु)
नमित	(झुका हुआ)
नियत	(निश्चित)
नियति	(किस्मत, होनी)
निर्जर	(जो कभी बुझा न हो)
निझर	(झरना)
निर्माण	(रचना)
निर्वाण	(मोक्ष)
निवृत्त	(मुक्त)
निवृत्ति	(मुक्ति)
नीरज	(कमल)
नीरद	(बादल)
षट्ट	(तख्ता)
पट	(कपड़ा)
पतन	(गिरावट)
पत्तन	(कस्बा)
पता	(ठिकाना)
पत्ता	(पर्ण)
पति	(घरवाला)
पत्ती	(हिस्सा)
पथ्य	(रोगी का सही भोजन)
पथ	(मार्ग)
पद	(ओहदा)
पद्म	(काव्य)

(परिचालक)	(सेवक)
प्रचारक	(प्रचार करने वाला)
परिणत	(रूपांतरित)
प्रणत	(झुका)
परिणीत	(विवाहित)
प्रणीत	(बनाया हुआ)
परिणाम	(नतीजा)
प्रणाम	(नमस्कार)
परिताप	(संताप)
प्रताप	(ऐश्वर्य/ तेज)
परिवर्तन	(बदलाव)
प्रवर्तन	(उकसाव)
पानी	(जल)
पाणि	(हाथ)
पाव	(एक चौथाई)
पाँव	(पैर)
पीक	(थूक)
पिक	(कोयल)
पीड़ा	(दर्द)
पीड़ा	(लकड़ी का आसन)
पुर	(नगर)
पूर	(बाढ़)
पूछ	(चाह आदर, तलब)
पूँछ	(दुम)
प्रणय	(प्यार)
परिणय	(विवाह)
प्रदेश	(इलाका)
परदेश	(दूसरा देश)
प्रमाण	(सबूत)
प्रणाम	(नमस्कार)
प्रवाह	(बहाव)
परवाह	(अपेक्षा)

प्रसाद	(देवी-देवता का भोग)
प्रासाद	(महल)
प्राकार	(चारदीवारी)
प्रकार	(तरह)
फण	(साँप का सिर)
फङ्ग	(बिछावन)
फन	(हुनर)
बंदी	(कैदी)
बंदी	(भाट)
बलि	(भेट)
बली	(वीर)
बल्ली	(लकड़ी)
बहन	(भगिनी)
वहन	भार ढोना
बहाना	(झूठी मूठी बात)
भाना	(अच्छा लगना)
बहु	(बहुत)
बहू	(पुत्रवधु)
बाढ़	(रोक)
बाढ़	(सैलाब)
बान	(आदत)
वाण	(तीर)
बार	(मर्तबा, दफ़ा)
वार	(दिन)
वार	(चोट)
बालू	(रेत)
ब्यालू	(शाम का भोजन)
बास	(महक)
वास	(निवास)
बुरा	(खराब)
बुरा	(कच्ची चीनी)
भट	(योद्धा)

रोजगार पब्लिकेशन

भट्ट	(पांडित)
भवन	(महल)
भुवन	(लोक, संसार)
भारतीय	(भारत का)
भारती	(वाणी, सरस्वती)
भिड़	(बरें)
भीड़	(जनसमूह)
मणि	(रत्न)
मणी	(मणि)
मत	(राय)
मति	(बुद्धि)
मद	(अहंकार)
मद्य	(शराब)
मल	(विष्ठा)
मल्ल	(पहलवान)
मांस	(गोश्त)
मास	(महीना)
मानक	(मानदंडानुसार)
मानिक	(रत्न)
मूल	(जड़)
मूल्य	(कीमत)
मेघ	(वादल)
मेघ	(यज्ञ)
युक्त	(उचित)
मुक्त	(वरी)
भुक्त	(भोगा हुआ)
योग	(मन का ठहराव)
योग्य	(लायक)
योगीश्वर	(योगियों में श्रेष्ठ)
योगेश्वर	(महादेव)
रत	(लीन)
रक्त	(खून)

रति	(प्रेम)
रक्त	(खून)
रिक्त	(खाली)
रिस	(रोष)
रीस	(ईर्ष्या)
रेचक	(दस्तावर)
रोचक	(दिलचस्प)
लक्ष	(लाख)
लक्ष्य	(निशाना)
लगन	(चाव)
लग्न	(शुभ मूहर्त)
लता	(बेल)
लत्ता	(फटा कपड़ा)
लफ्ट	(ज्वाला)
लिफ्ट	(चिपक)
लवण	(नमक)
लवन	(कटाई)
लुटना	(लूट लिया जाना)
लूटना	(जबरदस्ती छीन लेना)
लोभ	(लालच)
लोभ	(रोम)
वन	(जंगल)
वन्य	(जंगली)
वस्तु	(चीज)
वास्तु	(मकान)
वाद	(तर्क-विर्तक)
वाद्य	(बाजा)
वित्त	(रुपया-पैसा)
वृत्त	(गोल घेरा)
विवरण	(वृत्तांत)
विवरण	(रंगहीन)
व्यंग	(विकलांग)

व्यंग	(कटाक्ष)
व्यंजन	(पकवान)
व्यजन	(पंखा)
शंकर	(शिव)
संकर	(मित्रित जाति का)
शकल	(दुकड़ा)
सकल	(सारा)
शराब	(मंदिरा)
शराव	(कसोरा)
शव	(लाश)
शब	(रात)
शस्त्र	(हथियार)
शास्त्र	(धर्म ग्रन्थ)
शान	(तड़क-भड़क)
सान	(धार तेज करने का)
शिखर	(चोटी)
शेखर	(सिर)
शिरा	(नाड़ी)
सिरा	(छोर)
शुक	(तोता)
शूक	(जौ)
शूर	(वीर)
सूर	(सूर्य)
शोक	(वियोग-दुःख)
शौक	(चाव)
संखिया	(एक जहरीली उपधातु)
संख्या	(गिनती)
संग	(साथ)
संघ	(समूह)
संदेह	(शक)
संदेह	(शरीर के साथ)
सजा	(अलंकृत)

सज्जा	(सजावट)
सत्	(सत्य)
सत्त	(सार भाग)
सत्त्व	(एक गुण, स्वभाव)
सती	(साध्वी)
शती	(सौ साल)
सत्त्व	(बल)
स्वत्व	(अधिकार)
सन	(पटुआ, टाट)
सन्	(वर्ष)
सप्त	(सात)
शप्त	(शाप पाया हुआ)
सम	(समान)
शम	शांति
सर	(सरोवर)
शर	(बाण)
सर्ग	(अध्याय)
स्वर्ग	(देवलोक)
सर्व	(सब)
शर्व	(शिव)
सर्वर्ण	(उच्च वर्ण का)
सुर्वर्ण	(सोना)
सामान	(सामग्री)
समान	(बराबर)
सामान्य	(साधारण)
साला	(पली का भाई)
शाला	(घर)
सास	(पति या पली का माँ)
साँस	(श्वास, प्राण)
सीसा	(एक धातु)
शीशा	(काँच)
सुखी	(सुख युक्त)

रोजगार पब्लिकेशन

सूखी	(शुष्क)
सुगंध	(सुवास)
सौगंध	(कसम)
सूत	(बेटा)
सूत	(रुई का धागा)
सुधार	(ठीक ठाक करना)
सिधार	(उठ जाना)
सुधि	(होश)
सुधी	(बुद्धिमान)
सुर	(देवता)
स्वर	(आवाज)
सूचि	(सुई)
सूची	(तालिका)

सूर	(सूर्य)
शूर	(बीर)
स्वेद	(पसीना)
श्वेद	(सफेद)
हट	(परे हो)
हठ	(जिद्द)
हरण	(ले जाना)
हरिण	(मृग)
हरि	(विष्णु)
हरी	(हरे रंग की)
हल्	(ब्रंजन अक्षर)
हल	(समाधान)

शब्द युग्म की सूची

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अंस	कंधा	अंश	हिस्सा
आँगना	घर का आँगन	आँगना	स्त्री
अन्न	अनाज	अन्य	दूसरा
अनिल	हवा	अनल	आग
अम्बु	जल	अम्ब	माता, आम
अथक	बिना थके हुए	अकथ	जो कहा न जाए
अध्ययन	पढ़ना	अध्यापन	पढ़ाना
अधम	नीच	अधर्म	पाप
अली	सखी	अलि	भौंरा
अन्त	समाप्ति	अन्त्य	नीच, अन्तिम
अम्बुज	कमल	अम्बुधि	सागर
असन	भोजन	आसन	बैठने की वस्तु
अणु	कण	अनु	एक उपसर्ग, पीछे

अभिराम	सुन्दर	अविराम	लगातार, निरन्तर
अपेक्षा	इच्छा, आवश्यकता, तुलना में	उपेक्षा	निराद
अवलम्ब	सहारा	अविलम्ब	शोप्र
अतुल	जिसकी तुलना न हो सके	अतल	तलहीन
अचर	न चलनेवाला	अनुचर	दास, नैज
अशक्त	असमर्थ, शक्तिहीन	असक्त	विरक्त
अगम	निर्भय	उभय	दोनों
अब्ज	कमल	अब्द	बादल, बं
खोआ	दूध का बना ठोस पदार्थ	खोया	भूल गया
खल	दुष्ट	खलु	ही तो ही
गण	समूह	गण्य	गिनें दें

गुड़	शक्कर	गुड़	गम्भीर
प्रह	सूर्य, चन्द्र आदि	गृह	घर
गिरी	गिरना	गिरि	पर्वत
गज	हाथी	गज	मापक
गिरेश	हिमालय	गिरिश	शिव
प्रथ	पुस्तक	प्रथि	गाँठ
चिर	पुराना	चीर	कपड़ा
विता	लाश जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर	चीता	बाघ की एक जाति
चूर	कण, चूर्ण	चूड़	चोटी, सिर
चतुष्पद	चौपाया, जानवर	चतुष्पथ	चौराहा
चार	चार संख्या, जासूस	चारु	सुन्दर
चर	नौकर, दूत, जासूस		
चक्रवात	बवण्डर	चक्रवाक	चकवा पक्षी
चाष	नीलकंठ	चास	खेत की जुताई
चरि	पशु	चरी	चरागाह
चसक	चस्का/लत	चपक	प्याला
चुकना	समाप्त होना	चूकना	समय पर न करना
जिला	मंडल	जीला	चमक
जवान	युवा	जव	वेग/जौ
छत्र	छाता	क्षत्र	क्षत्रिय
छात्र	विद्यार्थी	क्षात्र	क्षत्रिय-संबंधी
छिपना	अप्रकट होना	छीपना	मछली फँसाकर निकालना
जलज	कमल	जलद	बादल
जघन्य	गर्हित, शुद्ध	जघन	नितम्ब
जगत	कुएँ का चौतरा	जगत्	संसार
जानु	घुटना	जानू	जाँध
जूति	वेग	जूती	छोटा जूता

जाया	व्यर्थ	जाया	पत्नी
जोश	आवेश	जोष	आराम
झल	जलन/आँच	झल्ल	सनक
टुक	थोड़ा	टुक	टुकड़ा
टोटा	घाटा	टोटा	बन्दूक का कारतुस
डीठ	दृष्टि	ढीठ	निडर
डोर	सूत	ढोर	मवेशी
तड़ाक	जल्दी	तड़ाग	तालाब
तरणि	सूर्य	तरणी	नाव
तरुणी	युवती		
तक्र	मट्ठा	तर्क	बहस
तरी	गीलापन	तरि	नाव
तरंग	लहर	तुरंग	घोड़ा
तनी	थोड़ा	तनि	बंधन
तब	उसके बाद	तब	तुम्हारा
तुला	तराजू	तुला	कपास
तप्त	गर्म	तृप्त	संतुष्ट
तार	धातु तंतु/टेलिग्राम	ताङ	एक पेड़
तोश	हिंसा	तोष	संतोष
दूत	सन्देशवाहक	द्यूत	जुआ
दारु	लकड़ी	दारू	शराब
द्विप	हाथी	द्वीप	टापू
दमन	दबाना	दामन	आँचल, छोर
दाँत	दशन	दात	दान, दाता
दशन	दाँत	दंशन	दाँत से काटना
दिवा	दिन	दीवा	दीया, दीपक
दंश	डंक, काट	दश	दश अंक
दार	पत्नी, भार्या	द्वार	दरवाजा
दिन	दिवस	दीन	गरीब
दावी	देने वाला, जबावदेह	दाई	नौकरानी

रोजगार प्रब्लेम

देव	देवता	दैव	भाग्य
धराधर	शेषनाग	धड़ाधड़	जलदी से
धारि	झुण्ड	धारी	धारण करनेवाला
धूरा	धूल	धुरा	अक्ष
धत	लत	धत्	दुत्कारना
निहत	मरा हुआ	निहित	छिपा हुआ, संलग्न
नियत	निश्चित	नीयत	मंशा, इरादा
निश्छल	छलरहित	निश्चल	अटल
नान्दी	मंगलाचरण (नाटक का)	नंदी	शिव का बैल
निमित	हेतु	नमित	झुका हुआ
नीरज	कमल	नीरद	बादल
निझँर	झरना	निजर	देवता
निशाकर	चन्द्रमा	निशाचर	राक्षस
नाई	तरह, समान	नाई	हजाम
नीड़	चोंसला, खोंता	नीर	पानी
नगर	शहर	नागर	चतुर व्यक्ति, शहरी
नशा	वेहोशी, मद	निशा	रात
नाहर	सिंह	नहर	सिंचाई के लिए निकाली गयी कृत्रिम नदी
परुष	कठोर	पुरुष	मर्द, नर
प्रदीप	दीपक	प्रतीप	उलटा, विशेष, काव्यालंकार
प्रसाद	कृपा, भोग	प्रासाद	महल
प्रणय	प्रेम	परिणय	विवाह
प्रवल	शक्तिशाली	प्रवर	श्रेष्ठ, गोत्र
परिणाम	नतीजा, फल	परिभाष	मात्रा
पास	नजदीक	पाश	बन्धन
पीक	पान आदि का थूक	पिक	कोयल

प्राकार	धेरा, चहारदीवारी	प्रकार	विकल्प, दण्ड
परिताप	दुःख, मन्त्राप	प्रताप	ऐश्वर्य, पात्रम्
पति	स्वामी	पत	सम्मान, स्वैतन्य
पांशु	धूलि, बाल	पशु	जानवर्
परीक्षा	इम्तहान	परीक्षा	कीचड़ी
प्रतियेघ	निषेध, मनाही	प्रतिशोध	बदला
पुर	बाढ़, आधिक्य	पुर	नगर
पार्श्व	बगल	पाश	बन्धन
प्रहर	पहर (समय)	प्रहर	आधात, वर्
परवाह	चिन्ता	प्रवाह	बहाव (रक्त का)
पट्ट	तख्ता, उल्टा	पट	कपड़ा
पानी	जल	पाणि	हाथ
बलि	बलिदान	बली	बार
बास	महक, गन्ध	बास	निवास
बहन	बहिन	बहन	दोना
बल	ताकत	बल	मेघ
बन्दी	कैदी	बन्दी	भाट, चार
बात	बचन	बात	हवा
बुरा	खराब	बुरा	शक्कर
बन	बनना, मजदूरी	बन	जंगल
बहु	बहुत	बहू	पुत्रवधु/बहू स्त्री
बार	दफा	बार	चोट, दिन
बान	आदत, चमक	बाण	तीर
ब्रण	घाव	बर्ण	रंग, अर्ध
ब्राह्म	बाहरी	बाह्य	बहन के दूर
बगुला	एक पक्षी	बगुला	बंदर
बाट	रास्ता/वटखरा	बाट	हिस्सा
भंगि	लहर, टेढ़ापन	भंगी	मेहरा, करनेवाल
भिड़	बरें	भीड़	जनसंख्या
भित्ति	दीवार, आधार	भीत	डरा हुआ

महल	भूवन	संसार
भारत का	भारती	सरस्वती
सर्वेरा	विभार	मग्न
मनुष्य	मनोज	कामदेव
गन्दगी	मल्ल	पहलवान, योद्धा
बादल	मेघ	यज्ञ
गोशत	मास	महीना
जड़	मृत्यु	कामत
आनंद	मद्य	शराब
एक रत्न	मणि	साँप
किरण	मरीची	सूर्य, चन्द्र
मानव-उत्पन्न	मनुजाद	मानव-भक्षी
चोटी/मस्तक	मौली	जिसके सिर पर मुकुट हो
नहीं	मत्त	मस्त/धुत
गरीब	रंग	वर्ण
नस	राग	लय
लीन	रति	कामदेव की पल्ली, प्रेम

रंचक	रचनेवाला	रंचक	दस्तावर
रद	दाँत	रद्द	खुराब
राज	झगड़ा	राँड़	विघ्वा
राइ	सरदार	राई	एक तिलहन
रोशन	प्रकट/प्रदीप	रोपण	कस्ती/पारा
लवण	नमक	लवन	खेती की कटाई
लुटना	लुट जाना, बरबाद होना	लुटना	लूट लेना
लक्ष्य	ठद्देश्य	लक्ष	लाख
लाश	शव	लास्य	प्रेमभाव सूचक
वित्त	धन	वृत्त	गोलाकार, छन्द
वाद	तर्क, विचार	वाद्य	वाजा
वस्तु	चीज	वास्तु	मकान, इमारत
वसन	कपड़ा	व्यसन	बुरी आदत
वासना	कामना	वासना	सुगंधित करना
व्यंग	विकलांग	व्यंग्य	कटाक्ष/ताना
वरद	वर देनेवाला	विरद	यश
विधायक	रचनेवाला	विधेयक	विधान/कानून

लोकोवित्तयाँ

1. अपना रख, पराया चख : अपना बचाकर दूसरों का माल हड्डप करना।
2. अपनी करनी पार उतरनी : स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
3. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता : अकेला व्यक्ति शक्तिहीन होता है।
4. अधजल गगरी छलकत जाय : ओछा आदमी अधिक इतराता है।
5. अंथों में काना राजा : मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
6. अंधे के हाथ बटेर लगाना : अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना।
7. अंधा पीसे कुत्ता खाय : मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं/असावधानी से अयोग्य को लाभ।
8. अब पछताये होत व्या, जब चिड़िया चुग गई खेत : अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं।
9. अन्धे के आगे रोटी अपने नैना खोवै : निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की अपेक्षा करना।
10. अपनी गली में कुत्ता भी शेर बन जाता है : अपने क्षेत्र में कमज़ोर भी बलवान होता है।
11. अन्धेर नगरी चौपट राजा : प्रशासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ जाना।
12. अन्धा व्या चाहे दो औंखें : बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना।
13. अक्ल बड़ी या भैंस : शारीरिक बल से बुद्धिवल श्रेष्ठ होता है।
14. अपना हाथ जगन्नाथ : अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है।

15. अपनी-अपनी डपली अपना-अपना राग : तालमेल का अभाव/सबका अलग-अलग मत होना/एकमत का अभाव।
16. अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को देय : स्वार्थी व्यक्ति अधिकार पाकर अपने लोगों की सहायता करता है।
17. अंत भला तो सब भला : कार्य का अन्तिम चरण ही महत्वपूर्ण होता है।
18. आ बैल मुझे मार : जानबूझकर मुसीबत में फँसना।
19. आम के आम गुठली के दाम : हर प्रकार का लाभ/ एक काम से दो लाभ।
20. आँख का अंधा नाम नयन सुख : गुणों के विपरीत नाम होना।
21. आगे कुआँ पीछे खाई : दोनों सब ओर से विपत्ति में फँसना।
22. आप भला जग भला : अपने अच्छे व्यवहार से सब जगह आदर मिलता है।
23. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास : उद्देश्य से भटक जाना/ श्रेष्ठ काम करने की बजाय तुच्छ कार्य करना/ कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना।
24. आधा तीतर आधा बटेर : अनमेल मिश्रण/ बेमेल चीजें जिनमें सामंजस्य का अभाव हो।
25. इन तिलों में तेल नहीं : किसी लाभ की आशा न होना।
26. आठ कनौजिए नौ चूल्हे : फूट होना।
27. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे : अपना अपराध न मानना और पूछने वाले को ही दोषी ठहराना।
28. उल्टे बाँस बरेली को : विपरीत कार्य या आचरण करना।
29. ऊंधो का न लेना, न माधो का देना : किसी से कोई मतलब न रखना/ सबसे अलग।
30. ऊँची दुकान फीका पकवान : वास्तविकता से अधिक दिखावा/ दिखावा ही दिखावा/ केवल बाहरी दिखावा।
31. ऊँट के मुँह में जीरा : आवश्यकता की नगण्य पूर्ति।
32. ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर : जब दृढ़ निश्चय कर लिया तो बाधाओं से क्या घबराना।
33. ऊँट किस करवट बैठता है : परिणाम में अनिश्चितता होना।
34. एक पंथ दो काज : एक काम से दोहरा लाभ/ एक तरकीब से दो कार्य करना/ एक साधन से दो कार्य करना।
35. एक अनार सौ बीमार : वस्तु कम, चाहने वाले अधिक एक स्थान के लिये सैकड़ों प्रत्याशी।

36. एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है : एक की बुराई के साथी भी बदनाम होते हैं।
37. एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं : दो प्रशासक एक ही जगह एक साथ शासन नहीं कर सकते।
38. एक हाथ से ताली नहीं बजती : लड़ाई का कारण दोनों पक्ष होते हैं।
39. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा : बुरे से और अधिक बुरा होना/ एक बुराई के साथ दूसरी बुराई का जुड़ जाना।
40. कागज की नाव नहीं चलती : बेईमानी के किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
41. कागज की नाव नहीं चलती : बेईमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
42. काला अक्षर भैंस बराबर : विल्कुल निरक्षर होना।
43. कंगाली में आटा गीला : संकट पर संकट आना।
44. कोयले की दलाली में हाथ काले : बुरे काम का परिणाम भी बुरा होता है/ दुष्टों की संगति से कलंकित होते हैं।
45. का वर्षा जब कृषि सुखानी : अवसर बीत जाने पर साधन का प्राप्ति वेकार है।
46. कहीं की ईंट कहीं को रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा अलग-अलग स्वभाव वालों को एक जगह एकत्र करना/ इधर-उधर से सामग्री जुटा कर कोई निकृष्ट वस्तु का निन्दन करना।
47. कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर : एक-दूसरे के बीच आना परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।
48. काबुल में क्या गधे नहीं होते : मूर्ख सब जगह मिलते हैं।
49. कहने पर कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता : कहने से जिद्दी बंद काम नहीं करता।
50. कोउ नृप होउ हमें का हानि : अपने काम से मतलब रखना।
51. कौवा चला हंस की चाल भूल गया अपनी भी चाल : दूसरे अनधिकार अनुकरण से अपने रीति-रिवाज भूल जाना।
52. कभी धी धना तो कभी मुट्ठी चना : परिस्थितियाँ सदा समान नहीं रहतीं।
53. करले सो काम भजले सो राम : एक निष्ठ होकर कर्म जैसा करना।
54. काज परै कछ और काज सरै कछु और : दुनिया बड़ी से काम निकाल कर मुँह फेर लेते हैं।

55. खोदा पहाड़ निकली चुहिया : अधिक परिश्रम से कम लाभ होना।
56. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है : स्पर्धावश काम करना/ साथी को देखकर दूसरा साथी भी वैसा ही व्यवहार करता है।
57. खग जाने खग हींकी : मूर्ख व्यक्ति मूर्ख की बात/ भाषा समझता है।
58. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे : शक्तिशाली पर वश न चलने के कारण कमज़ोर पर क्रोध करना।
59. गागर में सागर भरना : थोड़े में बहुत कुछ कह देना।
60. गुरु तो गुड़ रहे चेले शक्कर हो गये : चेले का गुरु से अधिक ज्ञानवान होना।
61. गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त : स्वयं की अपेक्षा दूसरों का उसके लिए अधिक प्रयत्नशील होना।
62. गुड़ खाए और गुलगुलों से परहेज : झूठा ढोंग रचना।
63. गाँव का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध : अपने स्थान पर सम्मान नहीं होता।
64. गरीब तेरे तीन नाम—झूठा, पापी, बेईमान : गरीब पर ही सदैव दोष मढ़े जाते हैं/निर्धनता सदैव अपमानित होती है।
65. गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दें : प्रेम से कार्य हो जाये तो फिर दण्ड क्यों।
66. गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास : अवसरवादी होना।
67. गोद में छोरा शहर में ढिंढोरा : पास की वस्तु को दूर खोजना।
68. गरजते बादल बरसते नहीं : कहने वाले (शोर मचाने वाले) कुछ करते नहीं।
69. गुरु कीजै जान, पानी पीवै छान : अच्छी तरह समझ-बूझकर काम करना।
70. घर-घर मिट्ठी के चूल्हे हैं : सबकी एक सी स्थिति का होना सभी समान रूप से खोखले हैं।
71. घोड़ा धास से दोस्ती करे तो क्या खाये ?: मजदूरी लेने में संकोच कैसा।
72. घर का भेदी लंका ढाहे : घरेलू शत्रु प्रबल होता है।
73. घर की मुर्गी दाल बराबर : अधिक परिचय से सम्मान कम/ घरेलू साधनों का मूल्यहीन होना।
74. घर बैठे गंगा आना : बिना प्रयत्न के लाभ, सफलता मिलना।
75. घर में नहीं दाने बुद्धिया चली भुनाने : झूठा दिखावा करना।

76. घर आये नाग न पूजै, बाँबी पूजन जाय : अवसर का लाभ न उठाकर उसको खोज में जाना।
77. घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध : विद्वान् को अपने घर की अपेक्षा बाहर अधिक सम्मान/परिचित की अपेक्षा अपरिचित का विशेष आदर।
78. चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए : बहुत कंजूस होना।
79. चलती का नाम गाड़ी : काम का चलते रहना/ बनी बात के सब साथ होते हैं।
80. चंदन की चुटकी भली गाड़ी : अच्छी वस्तु को थोड़ी भी भली।
81. चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात : सुख का समय थोड़ा ही होता है।
82. चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता : निर्लज्ज पर किसी बात का असर नहीं होता।
83. चिराग तले अंधेरा : दूसरों को उपदेश देना स्वयं अज्ञान में रहना।
84. चींटी के पर निकलना : बुरा समय आने से पूर्व बुद्धि का नष्ट होना।
85. चील के घोंसले में मांस कहाँ? : भूखे के घर भोजन मिलना असंभव होता है।
86. चुपड़ी और दो-दो : लाभ में लाभ होना।
87. चोरी का माल मोरी में : बुरी कमाई बुरे कार्यों में नष्ट होती है।
88. चोर की दाढ़ी में तिनका : अपराधी का सशंकित होना/ अपराधी के कार्यों से दोष प्रकट हो जाता है।
89. चोर-चोर मौसेरे भाई : दुष्ट लोग प्रायः एक जैसे होते हैं वे एक से स्वभाव वाले लोगों में मित्रता होना।
90. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल : अयोग्य व्यक्ति के पास अच्छी वस्तु होना।
91. छोटे मुँह बड़ी बात : हैसियत से अधिक बातें करना।
92. जहाँ काम आवै सुई का करै तरवारि : छोटी वस्तु से जहाँ काम निकलता है यहाँ बड़ी वस्तु का उपयोग नहीं होता है।
93. जल में रहकर मगर से बैर : बड़े आश्रयदाता से दुश्मनी ठीक नहीं।
94. जब तक साँस तब तक आस : जीवनपर्यन्त आशान्वित रहना।
95. जंगल में मोर नाचा किसने देखा : दूसरों के सामने उपस्थित होने पर ही गुणों की कद्र होती है/ गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थान पर।
96. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी : मातृभूमि का महत्व स्वर्ग से भी बढ़कर है।

97. जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता : किसी के बिना कोई काम नहीं रुकता कोई अपरिहार्य नहीं है।
98. जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि : कवि दूर की बात सोचता है/ सीमातीत कल्पना करना।
99. जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई : जिसने कभी दुःख नहीं देखा वह दूसरों का दुख क्या अनुभव करे
100. जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी : भावनानुकूल (प्राप्ति का होना) औरों को देखना
101. जान बची और लाखों पाये : प्राण सबसे प्रिय होते हैं।
102. जाको राखे साइयाँ मारि सके न कोय : ईश्वर रक्षक हो तो फिर डर किसका, कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।
103. जिस थाली में खाये उसी में छेद करना : विश्वासघात करना/ भलाई करने वाले का ही बुरा करना/ कृतञ्च होना
104. जिसकी लाठी उसकी भैंस : शक्तिशाली की विजय होती है।
105. जिन खोजा तिन पाइयों गहरे पानी पैठ : प्रयत्न करने वाले को सफलता/ लाभ अवश्य मिलता है
106. जो ताको काँटा बुवै ताहि बोय तू फूल : अपना बुरा करने वालों के साथ भी भलाई का व्यवहार करो
107. जादू वही जो सिर चढ़कर बोले : उपाय वही अच्छा जो कारण हो
108. झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी : जल्दबाजी का काम खराब ही होता है।
109. झूठ कहे सो लड़ु खाय साँच कहे सो मारा जाय : आजकल झूठे का बोल बाला है।
110. जैसी बहे बधार पीठ तब वैसी दीजै : समयानुसार कार्य करना।
111. टके का सौदा नौ टका विदाई : साधारण वस्तु हेतु खर्च अधिक
112. टेढ़ी ऊँगली किये बिना धी नहीं निकलता : सीधेपन से काम नहीं (चलता) निकलता।
113. टके की हाँड़ी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली : थोड़ा नुकसान उठाकर धोखेबाज को पहचानना
114. छबते को तिनके का सहारा : संकट में थोड़ी सहायता भी लाभप्रद/ पर्याप्त होती है।
115. डाक के तीन पात : सदा एक सी स्थिति बने रहना।
116. ढोल में पोल : बड़े-बड़े भी अन्धेर करते हैं।
117. तीन लोक से मधुरा न्यारी : सबसे अलग विचार बनाये रखना।
118. तीर नहीं तो तुक्का ही सर्ही : पूरा नहीं तो जो कुछ मिल जाये वह में संतोष करना।
119. तू डाल-डाल मैं पात-पात : चालाक से चालाकी से पेश अन् एक से बढ़कर एक चालाक होना
120. तेल देखो तेल की धार देखो : नया अनुभव करना धैर्य के साथ समझ कर कार्य करो परिणाम की प्रतीक्षा करो।
121. तेली का तेल जले मशालची का दिल जले : खर्च कोई करने कीसी और को ही लगे।
122. तेते पाँच पसारिये जेती लाम्बी सौर : हैसियतानुसार खर्च करने अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना
123. तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता : अभावग्रस्त होने पर भाठ से रहना/ झूठा दिखावा करना।
124. तीन बुलाए तेरह आये : अनिमन्त्रित व्यक्ति का आना।
125. तीन कनौजिये तेरह चूल्हे : व्यर्थ की नुकताचीनी करना।
126. थोथा चना बाजे घना : गुणहीन व्यक्ति अधिक ढींगे मात्र आड़म्बर करता है।
127. दूध का दूध पानी का पानी : सही सही न्याय करना।
128. दमड़ी की हाँड़ी भी ठोक बजाकर लेते हैं : ढोटी चौब चौंदे देखभाल कर लेते हैं।
129. दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते : मुफ्त की वस्तु नहीं देखे जाते।
130. दाल भात में मूसल चंद : किसी के कार्य में व्यर्थ में दखल देना।
131. दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम : संदेह की स्थिति में भी हाथ नहीं लगना।
132. दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है : एक बर्दाश व्यक्ति दुवारा सावधानी बरतता है।
133. दूर के ढोल सुहाने लगते हैं : दूरवर्ती वस्तुएँ अच्छी मालूम होने से ही वस्तु का अच्छा लगना पास आने पर वास्तविक पता लगना।
134. दैव दैव आलसी पुकारा : आलसी व्यक्ति भावादी होती है।
135. धोबी का कुत्ता घर का न घाट का : किघर का भी न नहीं इधर का उधर का।
136. न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी : ऐसी अन्धेरी रखना जो पूरी न हो सके/ बहाने बनाना।
137. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी : झगड़े को जड़ से ही नहीं छोड़ सकता।

138. नक्कार खाने में तूती की आवाज़ : अराजकता में सुनवाई न होना बड़ों के समक्ष छोटों की कोई पूछ नहीं।
139. न सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी तंग हालत रहना
140. नाच न जाने आँगन टेढ़ा : अपना दोष दूसरों पर मढ़ना/ अपनी अयोग्यता को छिपाने हेतु दूसरों में दोष ढूँढ़ना।
141. नाम बड़े और दर्शन छोटे : बड़ों में बड़प्पन न होना गुण कम किन्तु प्रशंसा अधिक।
142. नीम हकीम खतरे जान, नीम मुल्ला खतरे ईमान : अध कचरे जान वाला अनुभवहीन व्यक्ति अधिक हानिकारक होता है।
143. नेकी और पूछ-पूछ : भलाई करने में भला पूछना क्या?
144. नेकी कर कुए में डाल : भलाई कर भूल जाना चाहिए।
145. नौ नगद, न तेरह उधार : भविष्य की बड़ी आशा से तत्काल का थोड़ा लाभ अच्छा/ व्यापार में उधार की अपेक्षा नगद को महत्व देना।
146. नौ दिन चले अढ़ाई कोस : बहुत धीमी गति से कार्य का होना
147. नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली : बहुत पाप करके पश्चाताप करने का ढोंग करना।
148. पढ़े पर गुने नहीं : अनुभवहीन होना।
149. पढ़े फारसी वेचे तेल, देखो यह विद्यान का खेल : शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना।
150. पराधीन सपनेह सुख नाही : परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं होता।
151. पाँचों ऊँगलियाँ बराबर नहीं होती : सभी समान नहीं हो सकते।
152. प्रभुता पाय काहि मद नाहीं : अधिकार प्राप्ति पर किसे गर्व नहीं होता।
153. पानी में रहकर मगर से वैर : शक्तिशाली आश्रयदाता से वैर करना।
154. प्यादे से फरजी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय : छोटा आदमी बड़े पद पर पहुँचकर इतराकर चलता है।
155. फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता : एक बार मतभेद होने पर पुनः मेल नहीं हो सकता।
156. बाहर बरस में धूरे के दिन भी फिरते हैं : कभी न कभी सबका भाग्योदय होता है।
157. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद : मूर्ख को गुण की परख न होना/अज्ञानी किसी के महत्व को आंक नहीं हो सकता।
158. बद अच्छा, बदनाम बुरा : कलंकित होना बुरा होने से भी बुरा है।
159. बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी : जब संकट आना ही है तो उसके कब तक बचा जा सकता है।

160. बाबन तोले पाव रत्ती : बिल्कुल ठीक या सही होना।
161. बाप न मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज : बहुत अधिक बातूनी या गप्पी होना।
162. बॉबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूँ : खतरे का कार्य दूसरों को साँपकर स्वयं अलग रहना।
163. बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपया : आजकल पैसा ही सब कुछ है।
164. बिल्ली के भाग छींका टूटना : संयोग से किसी कार्य का अच्छा होना/ अनायास अप्रत्याशित बस्तु की प्राप्ति होना।
165. बिन माँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख : भाग्य से स्वतः मिलता है इच्छा से नहीं।
166. बिना रोए माँ भी दूध नहीं पिलाती : प्रयत्न के बिना कोई नहीं होता।
167. बैठे से बेगार भली : खाली बैठे रहने से तो किसी का कुछ काम करना अच्छा।
168. बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए : बुरे कर्म कर अच्छे फल की इच्छा करना व्यर्थ है।
169. भई गति साँप छछूँदर जैसी : दुविधा में पड़ना
170. भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी तीन चीज याद रही नोन, तेल, लकड़ी : गृहस्थी के जंजाल में फँसना।
171. भूखे भजन न होय गोपाला : भूख लगने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता।
172. भागते भूत की लंगोट भली : हाथ पढ़े सोई लेना जो बच जाए उसी से संतुष्टि/ कुछ नहीं से जो कुछ भी मिल जाए वह अच्छा।
173. भैंस के आगे बीन बजाये भैंस खड़ी पगुराय : मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।
174. बिच्छू का मंत्र न जाने साँप के विल में हाथ डाले : योग्यता के अभाव में उलझनदार काम करने का बीड़ा उठा लेना।
175. मन चंगा तो कटौती में गंगा : मन पवित्र तो घर में तीर्थ है।
176. मरता क्या न करता : मुसीबत में गलत कार्य करने को भी तैयार होना पड़ता है।
177. मानो तो देव नहीं तो पत्थर : विश्वास फलदायक होता है।
178. मान न मान मैं तेरा मेहमान : जबरदस्ती गले पड़ना।
179. मार के आगे भूत भागता है : दण्ड से सभी भयभीत होते हैं।
180. मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी ? : यदि आपस में प्रेम है तो तीसरा क्या कर सकता है?

181. मुख में राम बगल में छुरी : ऊपर से मित्रता अन्दर शत्रुता धोखेबाजी करना।
182. मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याँ : आश्रयदाता का ही विरोध करना।
183. मेंढकी को जुकाम होना : नीच आदमियों द्वारा नखरे करना।
184. मन के हारे हार है मन के जीते जीत : साहस बनाये रखना आवश्यक है/ हतोत्साहित होने पर असफलता व उत्साहपूर्वक कार्य करने से जीत होती है।
185. यथा राजा तथा प्रजा : जैसा स्वामी वैसा सेवक।
186. यथा नाम तथा गुण : नाम के अनुसार गुण का होना।
187. यह मुँह और मसूर की दाल : योग्यता से अधिक पाने की इच्छा करना।
188. मुफ्त का चंदन, धिस मेरे नंदन : मुफ्त में मिली वस्तु का दुरुपयोग करना।
189. रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई : सर्वनाश होने पर भी घमण्ड बने रहना/ टेक न छोड़ना।
190. रंग में भंग पड़ना : आनन्द में बाधा उत्पन्न होना।
191. राम नाम जपना, पराया माल अपना : मक्कारी करना।
192. रोग का घर खाँसी, झगड़त्रे का घर हाँसी : हँसी मजाक झगड़े का कारण बन जाती है।
193. रोज कुआ खोदना रोज पानी पीना : प्रतिदिन कमाकर खाना रोज कमाना रोज खा जाना।
194. लकड़ी के बल बन्दरी नाचे : भयवश ही कार्य संभव है।
195. लम्बा टीका मधुरी बानी दगेबाजी की यही निशानी : पाखण्डी हमेशा दगाबाज होते हैं।
196. लातों के भूत बातों से नहीं मानते : नीच व्यक्ति दण्ड से/ भय से कार्य करते हैं कहने से नहीं।
197. लोहे को लोहा ही काटता है : बुराई को बुराई से ही जीता जाता है।
198. बक्त पड़े जब जानिये को बैरी को मीत : विपत्ति/अवसर पर ही शत्रु व मित्र की पहचान होती है।
199. विधिकर लिखा को मेटनहारा : भाग्य को कोई बदल नहीं सकता।
200. विनाश काले विपरीत बुद्धि : विपत्ति आने पर बुद्धि भी नष्ट हो जाती है।
201. शबरी के बेर : प्रेममय तुच्छ भेट।
202. शक्कर खोर को शक्कर मिल ही जाता है : जरूरतमंद को उसकी वस्तु सुलभ हो ही जाती है।
203. शुभस्य शीघ्रम : शुभ कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए।
204. शठे शाठयं समाधरेत : दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना।
205. साँच को आँच नहीं : सच्चा व्यक्ति कभी डरता नहीं।
206. सब धान बाईस पंसेरी : अविवेकी लोगों की दृष्टि में गुण मूर्ख सभी व्यक्ति बराबर होते हैं।
207. सब दिन होत न एक समान : जीवन में सुख-दुख आते हैं, क्योंकि समय परिवर्तनशील होता है।
208. सैइर्याँ भये कोतवाल अब काहे का डर : अपनों के उच्चरण होने से बुरे कार्य बेहिचक करना।
209. समरथ को नहीं दोष गुसाई : गलती होने पर भी सामर्थ्य कोई कुछ नहीं कहता।
210. सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी स्थिति बने हैं।
211. साँप मर जाये और लाठी न ढूटे : सुविधापूर्वक कार्य होना/हानि के कार्य का बन जाना।
212. सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है : अपने समान संभव समझना।
213. सीधी अँगुली से धी नहीं निकलता : सीधेपन से कोई जांच होता।
214. सिर मुंडाते ही ओले पड़ना : कार्य प्रारम्भ करते ही वाष्णव होना।
215. सोने में सुगन्धि : अच्छे में और अच्छा।
216. सौ सुनार की एक लुहार की : सैंकड़ों छोटे उपायों से एक उपाय अच्छा।
217. सूप बोले तो बोले छलनी भी : दोषी का बोलना ठीक नहीं।
218. हथेली पर दही नहीं जमता : हर कार्य के होने में समय लागत नहीं।
219. हथेली पर सरसों नहीं उगती : कार्य के अनुसार समय नहीं है।
220. हल्दी लगे न फिटकरी रंग : आसानी से काम बन जाना/करना में अच्छा कार्य।
221. हाथ कंगन को आरसी क्या : प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता क्या?
222. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और : कपटपूर्ण करने कहे कुछ करे कुछ/ कथनी व करनी में अन्तर।
223. होनहार बिरवान के होत चीकने पात : महान व्यक्तियों के बचपन में ही नजर आ जाते हैं।
224. हाथ सुमरिनी बगल कतरनी : कपटपूर्ण व्यवहार करना।

अशुद्धि संसोधन

भाषा, वर्तनी की अशुद्धियाँ और निदान एवं उपचार

देवनागरी लिपि में सभी ध्वनियों को व्यक्त करने के साथ-साथ एक ही ध्वनि को व्यक्त करने के लिए एक ही लिपि चिह्न है। यह कारण है कि संसार की अन्य लिपियों की अपेक्षा देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। किरणी, विद्यार्थी प्रायः वर्तनी संबंधी इकाइयाँ करते हैं। जो निम्नलिखित हैं—

⇒ 'न' और 'ण' संबंधी अशुद्धियाँ

'ण' अधिकांशतः संस्कृत शब्दों में आता है। जिन तत्सम शब्दों में 'ण' हो, उनके तद्भव के 'ण' के स्थान पर 'न' लिखा जाना चाहिए।

हालांकि खड़ी बोली में 'ण' और 'न' संस्कृत नियमानुसार होना है, फिर भी खड़ी बोली की प्रकृति 'न' के पक्ष में है।

जैसे—कण-कन, रण-रन, विष्णु-विस्नु।

'न' का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(क) संस्कृत की जिन धातुओं में 'ण' हो, उनसे बने शब्दों में भी 'ण' ही रहेगा।

जैसे—अण, गुण, वरुण, प्रण आदि।

(ख) यदि एक ही पद में 'र', 'ऋ' और 'ष' के बाद 'न्' हो तो 'न्' की जगह 'ण' हो जाएगा, चाहे इनके बीच कोई स्वर य, व, ह, क वर्ण, प वर्ण तथा अनुस्वार ही क्यों न आया हो—

जैसे—कृष्ण, भूषण, उष्ण, प्रदूषण, श्रवण, ऋण इत्यादि।

• नोट—यदि कोई भिन्न वर्ण या वर्ण आए तो 'न' यथास्थित रूप में ही रहेगा।

जैसे—वंदना, अर्चना, आलोचना, प्रार्थना आदि।

(ग) कुछ तत्सम शब्दों में 'ण' यथास्थित ही विद्यमान रहेगा।

जैसे—गुण, गण, निर्गुण, बाण, कोण, चाणक्य, मणि, वाणी, वेणु, लवण, अणु, क्षीण, गणिका, गणित, वणिक, वेणु, वेणी आदि।

⇒ 'छ' और 'अ' संबंधी अशुद्धियाँ

'क्ष' एक संयुक्त व्यंजन (क् + ष + अ = क्ष) है, जबकि 'छ' एक स्वतंत्र व्यंजन है। 'अ' का प्रयोग संस्कृत में ज्यादा होता है।

जैसे—शिक्षा, दीक्षा, परीक्षा, समीक्षा, क्षोभ, समक्ष, सक्षम, अक्ष, नक्षत्र, श्रीण, साक्षी, अधीक्षक, श्रविय, नक्षत्र आदि।

⇒ 'ब' और 'व' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'ब' और 'व' के उच्चारण एवं लेखन संबंधी त्रुटि अन्य वर्णों की अपेक्षा सबसे ज्यादा होती है। भान से दोनों के उच्चारण में काफी समानता है लेकिन अर्थ में पूर्णतः भिन्नता है।

ध्वनि/उच्चारण अध्याय में अपने इनके उच्चारण उत्पत्ति को पढ़ा। ठेठ हिन्दी में 'ब' शब्द की अधिकता है। 'ब' शब्द संस्कृत में ज्यादा प्रयोग हुए हैं। जैसे—

'ब' वाले शब्द—बलि, बाली, बीज, बीच, बर्वर, बंधु, बंधन, ब्रह्म, ब्राह्मण आदि।

'ब' वाले शब्द—बहन, बायु, बंचना, विलास, बाहन, बचन, बधू, विजय, वसुधा, वर्जन आदि।

'ब' और 'ब' के गलत प्रयोग से बदलते अर्थ

बहन-बहन, बली-बली, बाद-बाद, बार-बार आदि।

⇒ 'श' 'ष' और 'स' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'श' 'ष' और 'स' के शब्द भिन्नता के साथ, उच्चारण में काफी भिन्नता है। गलत उच्चारण के कारण लेखन में भी अशुद्धि आ जाती है। इनके उच्चारण एवं लेखन में निम्न बातों का ध्यान रखें—

(क) 'ष' का प्रयोग सिर्फ संस्कृत शब्द में ही होता है।

जैसे—भाषा, मूषक, द्वेष, चषक, पियूष, संतोष, कषा, पट आदि।

(ख) जिस संस्कृत शब्द की मूल धातु में 'ष' हो, तो उनसे बने शब्दों में भी 'ष' रहता है; जैसे—'शिष्' धातु से शिष्य, शेष आदि।

(ग) क, ख, ट, ठ, प, फ के पहले आए विसर्ग (;), 'ष' हो जाते हैं।

(घ) शब्द में 'स' हो और उससे पहले 'अ' 'आ' के सिवा कोई अन्य स्वर आए तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है।

जैसे—झट्ट, ऊष्मा, उष्णा आदि।

(ङ) 'ट' वर्ग के पहले केवल 'ष' आता है।

जैसे—घडानन, शिष्टता, कष्ट, नष्ट आदि।

(च) 'ऋ' के बाद प्रायः 'ष' ही आता है।

जैसे—कृषि, वृष्टि, तृष्णा आदि।

(छ) छ, छ, स, ष के साथ प्रयोजन में हमेशा 'श' पहले आता है।

जैसे—निश्चल, निश्चित, निश्छल, प्रशंसा, शासक, शोषण, शेष, विशेष आदि।

(ज) उपसर्ग 'निः', 'वि' आदि आने पर मूल शब्द 'स' पूर्ववत बना रहता है।

जैसे—निःसंदेह, विस्तृत, विस्तार आदि।

(झ) यदि तत्सम में 'श' है तो तद्भव में 'स' हो जाएगा।

जैसे—शूकर-सूअर, शूली-सूली, श्यामल-सौंवला आदि।

[इसी प्रकार की सामान्य वर्तनी अशुद्धियों की एक तालिका नीचे दी गई है और साथ ही उसके शुद्ध रूप भी इसके अभ्यास से आप पाठकों की शब्द त्रुटियाँ दूर हो जाएँगी।]

वाक्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ एवं निदान

(i) 'संज्ञा' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

भाषा में एक ही संज्ञा के बहुत सारे समान अर्थ वाली 'संज्ञा' होती है। अर्थ की समानता होने के बाद भी उनके भावों में भिन्नता होती है; अतः प्रसंग के अनुकूल भाव वाली ही संज्ञा का प्रयोग होना आवश्यक है। यदि प्रसंग के विपरीत भाव वाली संज्ञा प्रयुक्त हुई तो भाषा में दोष आ जाएगा।

जैसे—'समीर' और 'प्रभज्जन' वायु के पर्यायवाचक है किन्तु 'समीर' मन्द वायु तथा 'प्रभज्जन' आँधी के लिए प्रयुक्त होता है।

इसी प्रकार

'गर्भिणी' और 'गाभिन' जबकि दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है लेकिन 'गर्भिणी' का प्रयोग 'मानव जाति' तथा 'गाभिन' का प्रयोग 'पशु-जाति' के लिए होता है।

◇ कुछ वस्तुओं एवं कार्यों के लिए भाषा में कुछ शब्द नियत रहते हैं अर्थात् उनमें बदलाव नहीं आता; जैसे—

शंका का समाधान

समस्या का निराकरण (निदान)

(ii) 'सर्वनाम' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने के कारण सर्वनाम का प्रयोग ऐसी संज्ञा के स्थान पर उचित होता है, जिसका प्रयोग 'सर्वनाम' से पहले हो चुका हो। बाद में आने वाली 'संज्ञा' के स्थान पर उससे संबंधी सर्वनाम का प्रयोग अशुद्ध होता है।

जैसे—

राम ने उसे पकड़कर श्याम की पीठ पर दो घूँसे मारे। (अशुद्ध)

इसमें भ्रम हो रहा है कि कौन, किसको मार रहा है जबकि यह इस प्रकार लिखा जाना चाहिए—

राम ने श्याम को पकड़कर उसकी पीठ पर दो घूँसे मारे। (शुद्ध)

◇ 'मेरा-मेरी' या 'हमारा-हमारे' के स्थान पर 'अपना-अपने' का प्रयोग, जहाँ वर्णनीय वस्तु अथवा व्यक्ति के साथ वक्ता का आत्मीय भाव रहता है, वहाँ होता है।

(iii) 'विशेषण' तथा 'क्रिया-विशेषण' संबंधी अशुद्धियाँ

'विशेषण संज्ञा', सर्वनाम एवं 'क्रिया-विशेषण' क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। जब विशेषण अथवा क्रिया विशेषण अपने अर्थ को स्पष्ट न करके किसी भ्रामक अथवा विपरीत अर्थ प्रकट करने लगते हैं तभी उनके प्रयोग को अशुद्ध कहा जाता है।

जैसे—आप पठित घराने में उत्पन्न हुए हैं। [पठित का प्रयोग अशुद्ध है पठित = पढ़ा हुआ]

◇ विशेषणों अथवा क्रिया-विशेषणों के स्थान पर संज्ञाओं का प्रयोग भी अशुद्ध होता है।

जैसे—मैं निश्चय रूप से नहीं कह सकता कि वह कब जाएगा। यहाँ 'निश्चय रूप' के स्थान पर 'निश्चित रूप' शुद्ध प्रयोग होगा।

◇ जिस तरह विशेषण के स्थान पर संज्ञा-प्रयोग वर्जित एवं अशुद्ध हैं; उसी प्रकार, संज्ञा के स्थान पर विशेषण-प्रयोग भी होता है।

जैसे—लाचार-वश — लाचारी; शुद्ध है।

(iv) 'क्रिया' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

जैसा कि हम जानते हैं क्रिया वाक्य का प्रमुखतम अंग है। इसके अनुप्रयोग सारा वाक्य अस्पष्ट एवं भद्दा हो जाता है। सामान्यतः विद्यार्थी संज्ञा के साथ के साथ ऐसी क्रिया लगा देते हैं, जो वहाँ प्रयुक्त नहीं हैं चाहिए।

जैसे—

अशुद्ध — मैंने उसे स्मरण दिलाया।

मैंने राम को संतोष दिलाया।

[स्मरण, संतोष कोई वस्तु नहीं है जो दिलाया जाए। 'दिलाया' के अन्त पर 'कराया' होगा।]

शुद्ध — मैंने उसे स्मरण कराया।

मैंने राम को संतोष कराया।

नीचे कुछ संज्ञाओं के साथ नियमित रूप से प्रयुक्त होने वाले क्रिये दी गई हैं—

उदाहरण

⇒ 'क्रिया के वचन' संबंधी अशुद्धियाँ

◇ जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ हो तब क्रिये वचन कर्तानुसार प्रयुक्त होता है।

जैसे—लड़का रामायण पढ़ता है। (एकवचन क्रिया)

लड़के रामायण पढ़ते हैं। (बहुवचन)

◇ जब के साथ 'ने' का प्रयोग होता है, परन्तु कर्म के साथ 'के' का प्रयोग न हुआ हो, तो तब क्रिया लिंगानुसार प्रयुक्त होती है।

जैसे—विद्यार्थी ने पुस्तक पढ़ी। (एकवचन)

विद्यार्थियों ने पुस्तकें पढ़ी। (बहुवचन)

◇ जब कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' प्रयुक्त होते हैं तब क्रिया पुलिंग एकवचन में होगी।

जैसे—लड़के ने फल को खाया।

लड़कों ने फल को खाया।

(v) 'अव्यय' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(केवल, मात्र, भर, ही)

इन अव्ययों के अर्थ में काफी समानता है। अतः इनमें से किसी देवता का प्रयोग एक वाक्य में नहीं करना चाहिए।

जैसे—उसने केवल पाँच रुपये में ही संतोष कर लिया।

केवल वचन-मात्र से सन्तुष्टि नहीं मिलती है। (अशुद्ध रूप)

उसने पाँच रुपये में ही संतोष कर लिया। (शुद्ध रूप)

वचन-मात्र से सन्तुष्टि नहीं मिलता है। (शुद्ध रूप)

◇ इसी प्रकार किसी, कोई, सभी, जभी, तभी, कहीं में पहले 'भी' का भाव सम्मिलित है। अतः इनके साथ 'भी' का अशुद्ध होगा।

जैसे—मैं कभी भी आ सकता हूँ। (अशुद्ध)

मैं बिल्कुल भी नहीं जानता।

[बिल्कुल, जितना, के कितना आदि के साथ 'भी' का प्रयोग अशुद्ध है।]

(ii) 'पुनरुक्ति' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

बहुत-से शब्द विशेषण-सहित पूरे विशेषण का अर्थ बतलाते हैं, किन्तु नियम के अज्ञानता के कारण उनके विशेषण बनाकर उनके आगे विशेषण लगा देते हैं। ऐसे तो एक ही अर्थ को पुनरावृत्ति हो जाती है।
जैसे— 'अश्रु' आँखों से निकलने वाला जल।
परन्तु लोग 'अश्रु-जल' लिख देते हैं जो अशुद्ध होता है।

रचनाकार और उनकी रचनाएँ

1.	कालिदास	अभिज्ञान मालविकाग्निमिग्नि, शाकुंतल, कुमारसंभवम्, रघुवंश, ऋतुसंहार, विक्रमोर्वशीयम्	मेघदूत,	9.	माखनलाल चतुर्वेदी	हिम किरीटिनी, हिमतरंगिनी, मरण ज्वार, काजल आँज रही, कृष्णार्जुन युद्ध, समय के पांव, चिन्तक की लाचारी, साहित्य देवता, युग चरण
2.	भर्तृहरि	नीति शतक, शृंगार शतक, वैराग्य, शतक, महाभाष्य टीका, शब्द धातु समीक्षा		10.	रामधारीसिंह "दिनकर"	कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रेणुका, रश्मिरथी, द्वंदगीत, बापू, धूप छाँह, मिर्च का मजा, सूरज का व्याह, परशुराम की प्रतीक्षा, हुंकार, हाहाकार, चक्रवाल, संस्कृत के चार अध्याय
3.	भवभूति	महावीरचरित्र, मालती माधव, उत्तररामचरित्र		11.	जयशंकर प्रसाद	कामायनी, झरना, लहर, प्रेम, पथिक, कानन-कुसुम, चित्राधार, एक धूट, आंधी
4.	बाणभद्र	कादम्बरी, हर्षचरित, मुकुटाडितक, चण्डीशतक		12.	सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"	परिमल, गीतिका, अर्चना, अराधना, गीत गुंज, रागविराग, नये पत्ते, कुकुरमुत्ता, अणिमा
5.	सुभद्रा चौहान	कुमारी झाँसी की रानी, मुकुल, सीधे सादे चित्र, विखरे मोती, उन्मादिनी, त्रिधारा, राखी की चुनौती, बचपन, सभा के खेल, खिलौनेवाला, वीरों का कैसा हो बसंत, जलियाँवाला बाग में बसंत।		13.	सुमित्रानन्दन पंत	बीणा, पल्लव, गुंजन, युगवाणी, कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा, युगपथ, लोकायतन
6.	केशवदास	रसिकप्रिया, रामचंद्रिका, वीरसिंह चरित्र, कविप्रिया, विज्ञान गीत, जहाँगीरजस चंद्रिका, छन्दमाला, रत्नबामनी, बारहमासा		14.	महादेवी वर्मा	नीहार, अग्निरेखा, दीपशिखा, मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, श्रंखला की कड़ियाँ, अतीत के चलचित्र, नीरजा।
7.	पद्माकर	राम रसायन, पद्मभरण, प्रबोध पचासा, जगद्विनोद, हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली, हितोपदेश, कलि पच्चीसी, गंगालहरी, जयसिंह विरुदावली, आलीजाह प्रकाश		15.	गजानन माधव "मुकितबोध"	काठ का सपना, विपत्र, सतह से उठता आदमी, चाँद का मुँह टेढ़ा, एक साहित्य की डायरी, नई कविता का आत्म संघर्ष, अन्य निबंध, भूरी-भूरी खाक धूल, समीक्षा की समस्या, कामायनी एक पुनर्विचार, नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, भारत इतिहास और संस्कृति, एक अंतर्कथा।
8.	भूषण	छत्रसाल दशक, दूषण उल्लास, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, शिवराज भूषण, शिवाबावनी				

16.	बालकृष्ण शर्मा "नवीन"	कुमकुम, अपलक, विनोदा, सदा चाँदनी, स्तवन (1905), उमिला, हम विषयावधि जनप के
17.	भवानी प्रसाद मिश्र	गीतफोरेश, कालजयी, भक्ति है दुख, अंधेरी कविताएँ, गाँधी पंचशती, नीली रेखा तक, दूसरा सप्तक, त्रिकाल संघा, कुछ भीति कुछ राजनीति
18.	हरिशंकर पारसाई	तट की खोज, हँसते हैं रोते हैं, रानी नागाफनी की कहानी, उब की बात और थी, भूत के पैर भीते, जैसे उनके दिन फिरे, पांडहियों का जमाना, सदाचार का लालौज, गिरावत मुझमे थी, विकल्पग श्रद्धा का दौर, चैत्यभासी की परत, ज्ञाना और जन, तिरछी रेखाएँ,
19.	शरद जोशी	अभी का हाथी, यथार्थत्व परिक्रमा, रहा किनरे बैठ, लक्ष्य की रक्षा, जात्या का दृक, दूसरी भूल, हम परम के प्रष्ट हमरे, जीप पर भवार इलिन्याँ, किसी बहाने, चिछने दिनी, दृक पाया था, फिर किसी बहाने, बुद्धिविजयों का दृश्यत्व, थोर की गुफा मे न्याय
20.	शिवपंगल मिश्र "सुमन"	भिट्टो की बाजार, हिल्लोल, जाली की अपाय, प्रस्तुप मुजान, जीवन के गान, विषय हिमानय, पुण का घोल, विश्वाम बहुत ही गया
21.	मुण्डी प्रेमचंद	गवन, राष्ट्रीय, कर्मधूमि, गोदान, निमेला, देवा, वरदान, सेकाम्बन, कालाम्बन, अलाम्बन, दूम की रात, बोका जब्देलाप, बैठी जाली विषया, दैर का दिवाला, देव का न्याय, देव परमेश्वर, विकल्पादित्य का लोगा
22.	कवीर	बीज़क, कवीर विश्वालय, कवीर रचनावली, सालो, अनुयान स्वर
23.	भारतेन्दु हरिशंकर	विनय देव पन्नाम, गोल गोविंदानन्, देव फुलजागी, कृष्णाचरित्र, बन्दर सभा, बकरों का विस्तार, सलमाई श्रंगार, श्री चन्द्रावली, सलव हरिशंकर, नीलदेवी, भारत दुर्दशा
24.	चंद्रबरदाई	पृथ्वीराज रासो

25.	जगन्निक	आत्म खण्ड
26.	मूरदास	मूर सुखसागर, मूर भूरसारावली, साहित्य व भगवतो
27.	अमीर खुसरो	तुगलकनामा, नुह-मियैहर, नाकिया, तुहफा-तुस-मिग, हयात, कुर्तुल-कमाल
28.	विद्यापति	विद्यापति की पदावली, परीक्षा, भू-परिक्रमा, कोंडू पदावली
29.	नरपति नात्ह	बीमलदेव रासो
30.	मालिक मोहम्मद जायसी	पदमावत, अखरावट, चंपावत, इतरावत, आगिरी कलम, बारहमासा, भनावत
31.	देवाम	देवाम के दोहे
32.	तुलसीदाम	रामचरितमाला, विवय-पञ्चका, दोहावली, गोलावली, चौही-वाली गमायन, गमला गम
33.	देवनापति	जलदु नर्सी, चौरिचौर
34.	रमचान	देव चार्टका, मुकाब-मुकाब
35.	विहारी	विहारी भनमर्ह
36.	विहारी दाम	भगव निरोप, चौट भजाय, उपसकार
37.	चीराकाई	राम भोजन, राम गोविंद, राम भाष्या, गोल गोविंद देवा, गोल की भनावत
38.	द्वनानन्द	द्विष्य द्रगल, मुकान मुकान
39.	अचोध्या मिश्र द्वयाध्याय	चौट-मिलार, चौल-तूल-तमाजा, चाल-विल, चौपट, चौरोंडे चौपट
40.	द्वारावीर प्रमाण द्विवेदी	आर्य-धूमि, कलापद्म, विज्ञिनेद
41.	गमकुमार वर्मा	अजालि, हिमहाम, विलो विलोइ की विल, विव्रंदेशा

रोजगार पश्चिमकंशन

42.	केदारनाथ अग्रवाल	फूल नहीं रंग खोलते हैं, पंख और पतंगार, गुलमैहरी, पार यार की भारे, युग की गंगा
43.	धर्मवीर भारती	अंधा युग, कनुप्रिया, सापना अभी भी, ठंडा लौहा, देशातर
44.	रामेश राधव	श्यामला, पिघलते पत्थर, मेघवी, पांचाली, रूपछाया, डायन मरकार
45.	नागार्जुन	इस गुब्बारे की छाया में, यासी पथराई आँखें, युगधारा
46.	भारत भूषण अग्रवाल	एक उठा हुआ हाथ, कवि के बंधन, जागते रहो, अनुपस्थित लोग, मेरे खिलौने
47.	नरेश मेहता	पुरुष, अरण्या, प्रवाद पर्व, चैत्या
48.	सर्वेश्वरदयाल मक्सेना	बांस का पुल, एक सूनी नाव, काठ की घटियाँ, खूटियों का टंगे लोग
49.	गिरिजाकुमार माधुर	तार सप्तक, मंजीर, नशा और निर्माण, मुझे ओर भी कहना है, शिलापंख चमकीले, धूप के धान

सामान्य हिन्दी

50.	सच्चिदानन्द हीरानन्द वास्तव्यायन "अन्तेय"	पूर्वा, सुनहरे शैवाल, असाध्य वीणा, हरी धास पर क्षण पर, बावरा अहेरी, आगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार
51.	जगदीश गुप्ता	नाव के पांव, शम्बूक का युगम, शब्द-दंश, आदित्य एकांत
52.	रघुवीर महाय	एक समय था, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, लोग भूल गये हैं, आत्महत्या के विरुद्ध, सीढ़ियों पर धूप में, दूसरा मनक
53.	कुंवर नारायण	कोई दूसरा नहीं, चक्रव्यूह, इन दिनों, तीमग मनक
54.	दुष्प्रियंत कुमार	एक केंठ विषपायी, जलते हुए बन का वसंत, मूर्य का स्वागत, आवाजों के चेर, माये में धूप
55.	जगन्नाथदास "रत्नाकर"	उद्धव-शतक, गंगावतरण, श्रृंगार-लहरी

महत्वपूर्ण पुस्तकों और उनके लेखक

1.	वंदे मातरम्	बंकिम चंद्र चट्टर्जी
2.	हुमायूनामा	गुलबदन बेगम
3.	मूरसागर	मूरदास
4.	साहित्यलहरी	मूरदास
5.	गाहनामा	फिरदौसी
6.	अमरकोप	अमर सिंह
7.	कादम्बरी	बाणभट्ट
8.	बुद्धगरितम्	अरविंधोप
9.	अवती मुन्द्री	दण्डी
10.	दराकुमारवर्णितम्	दण्डी
11.	नेतृत्व इम्फ्री	पिंडी
12.	दायभाग	जोमूतवाहन
13.	कामयूत्र	वात्स्यायन
14.	मुख्यक्रिकम्	गुटक
15.	मेयाटिका	रमन्नान

16.	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
17.	उत्तररामचरित	मवभूति
18.	पद्मावत्	मलिक मो० जायसी
19.	आईने अकबरी	अबुल फजल
20.	अकबरनामा	अबुल फजल
21.	बीजक	कबीरदास
22.	रमेनी	कबीरदास
23.	सवद	कबीरदास
24.	किताबुल हिन्द	अलबरुनी
25.	कुली	मुल्कराज आनन्द
26.	कानकेशंस ऑफ प. लव	मुल्कराज आनन्द
27.	द डेव ऑफ ए हीरो	मुल्कराज आनन्द
28.	जजमेंट	कुलदीप नैयर
29.	डिस्ट्रेट नेवर्स	कुलदीप नैयर
30.	इण्डिया द क्रिटिकल इयर्स	कुलदीप नैयर

रोजगार पब्लिकेशन

31.	यंग इंडिया	महात्मा गांधी
32.	श्रृंगारशतक	भर्तृहरि
33.	वैरण्यशतक	भर्तृहरि
34.	हिन्दूइज्म	नीरद चन्द्र चौधरी
35.	पैसेज टू इंग्लैंड	नीरद चन्द्र चौधरी
36.	आटोबायोग्राफी ऑफ ऐन अननोन इण्डियन	नीरद चन्द्र चौधरी
37.	कल्चर इन द वैनिटी बैग	नीरद चन्द्र चौधरी
38.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
39.	अष्टाध्यायी	पाणिनी
40.	भगवत् गीता	वेदव्यास
41.	महाभारत	वेदव्यास
42.	मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर
43.	राजतरंगिणी	कल्हण
44.	अर्थशास्त्र	चाणक्य
45.	कुमारसंभवम्	कालिदास
46.	रघुवंशम्	कालिदास
47.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	कालिदास
48.	गीतगोविन्द	जयदेव
49.	मालतीमाघव	भवभूति
50.	द कम्पनी ऑफ वीमैन	खुशवंत सिंह
51.	सखराम वाइण्डर	विजय तेंदुलकर
52.	इंडियन फिलॉस्पी	डॉ० एस० राधाकृष्णन
53.	इंटरनल इंडिया	इंदिरा गांधी
54.	कामायनी	जयशंकर प्रसाद
55.	आँसू	जयशंकर प्रसाद
56.	लहर	जयशंकर प्रसाद
57.	लाइफ डिवाइन	अरविन्द घोष
58.	ऐशेज ऑन गीता	अरविन्द घोष
59.	अनामिका	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
60.	परिमल	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
61.	यामा	महादेवी वर्मा
62.	ए वाइस ऑफ फ्रिडम	नयन तारा सहगल

63.	एरिया ऑफ डार्कनेस	बी० एस० नायपॉल
64.	अग्निवीणा	काजी जनरुल इस्लाम
65.	डिवाइन लाइफ	शिवानंद
66.	गोदान	प्रेमचन्द
67.	इंडिया डिवाइडेड	राजेंद्र प्रसाद
68.	दिल्ली	खुशवंत सिंह
69.	इन्दिरा गांधी रिटर्न्स	खुशवंत सिंह
70.	फोर्टी नाइन डेज	अमृता प्रीतम
71.	कागज ते कैनवास	अमृता प्रीतम
72.	डेथ ऑफ ए सिटी	अमृता प्रीतम
73.	भारत-भारती	मैथ्यलीशरण गुप्त
74.	चाण्डालिका	रविन्द्र नाथ टैगोर
75.	गोरा	रविन्द्र नाथ टैगोर
76.	हंग्री स्टोन्स	रविन्द्र नाथ टैगोर
77.	गार्डनर	रविन्द्र नाथ टैगोर
78.	विसर्जन	रविन्द्र नाथ टैगोर
79.	गीतांजली	रविन्द्र नाथ टैगोर
80.	चित्रांगदा	रविन्द्र नाथ टैगोर
81.	विटवीन द लाइन्स	कुलदीप नैयर
82.	इण्डिया आफ्टर नेहरू	कुलदीप नैयर
83.	माई डेज	आर० के० नारायण
84.	नेचर क्योर	मोरारजी देसाई
85.	चन्द्रकान्ता	देवकीनन्दन खत्री
86.	देवदास	शरतचन्द्र चटोपाध्याय
87.	चरित्रहीन	शरतचन्द्र चटोपाध्याय
88.	इंडिका	मेगास्थनीज
89.	स्पीड पोस्ट	सोभा-डे
90.	माई टुथ	इंदिरा गांधी
91.	मिलिन्दपन्हो	नागसेन
92.	बावरनामा	बावर
93.	विनय पत्रिका	तुलसीदास
94.	यंग इंडिया	महात्मा गांधी

रोजगार पब्लिकेशन		राजशेखर
95.	काव्य मीमांसा	वाणभट्ट
96.	हर्षचरित	दयानंद सरस्वती
97.	सत्यार्थ-प्रकाश	कालिदास
98.	मेघदूत	नारायण पंडित
99.	हितोपदेश	मौ० अबुल कलाम आजाद
100.	इंडिया विंस फ्रीडम	प्रेमचन्द
101.	कर्मभूमि	प्रेमचन्द
102.	रंगभूमि	बी० एम० कौल
103.	अनटोल्ड स्टोरी	बी० एम० कौल
104.	कन्कन्देशन विद पाकिस्तान	अज्ञेय
105.	कितनी नावों में कितनी बार	सरोजिनी नायडू
106.	गोल्डेन थेरस्होल्ड	सरोजिनी नायडू
107.	The broken wings	यशपाल
108.	दादा कामरेड	

अभ्यास प्रश्न

1. 'सूक्ति' का सही संधि-विच्छेद है:

(a) सु + उक्ति	(b) सू + उक्ति
(c) सूक्ति + इ	(d) सू + क्ति

क्लिक्स सहायक पर्स

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

2. 'नरेश' का सही संधि-विच्छेद है :

 - (a) नर + एश
 - (b) नरे + श
 - (c) न + रेश
 - (d) नर + ईश

क्रमिक स्वायत्रक पर्याप्त

क्रमांक संख्या का परीक्षा (2020)

3. 'तथैव' का सही संधि-विच्छेद है :

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

4. 'अत्याचार' का सही संधि-विच्छेद है :

(a) अतिया + चार (b) अत् + आचार
(c) अति + आचार (d) अत्या + चार

(c) कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

5. 'नाविक' का सही संधि-विच्छेद है :

(d) नावा +क

109.	पल्लव	सुमित्रानंदन पंत
110.	चिदम्बरा	सुमित्रानंदन पंत
111.	कुरुक्षेत्र	रामधारी सिंह 'दिनकर'
112.	उर्वशी	रामधारी सिंह 'दिनकर'
113.	द डार्क रूम	आर० के० नारायण
114.	मालगुड़ी डेज	आर० के० नारायण
115.	गाइड	आर० के० नारायण
116.	2020-ए विजन फोर द न्यू मिलेनियम	डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम
117.	विंग्स ऑफ फायर (अरूण तिवाड़ी और अब्दुल कलाम)	डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम
118.	इलाहाबाद प्रशस्ति	हरीसेन
119.	हिंदू व्यू ऑफ लाइफ	एस राधाकृष्णन
120.	विक्रम सेठ	ए सुटेबल बाय

6. 'उज्ज्वल' का सही संधि-विच्छेद है .

- (a) उत् + ज्वल (b) उज् + ज्वल
 (c) उज्ज + वल (d) उज + ज्वल

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

7. 'यथोचित' का सही संधि-विच्छेद है—

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

8. 'व्यवहार' का संधि-विच्छेद है—

- (a) वि + अव + हार (b) व्यव + हार
 (c) व्य + वहार (d) व्य + व + हार

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

9. 'महर्षि' का सही संधि-विच्छेद है—

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

10. 'पो + अन' किस स्वर संधि का उदाहरण है?

Lower (2019)

11. स्वर संधि कितने प्रकार की होती हैं?

31. दुराशा
 (a) दुरा + आशा (b) दुरा + शा
 (c) दुः + आशा (d) दुर + आशा

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

32. पौ + अन को सन्धि युक्त करने पर क्या रूप है?
 (a) पवन (b) पावन
 (c) पौन (d) पाचन

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

33. निम्न में से कौन-सा 'उच्छ्वास' का संधि-विच्छेद है?
 (a) उत् + 'छ्वास' (b) उच् + श्वास
 (c) उच्छ + वास (d) उत् + श्वास

असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

34. 'वाणी + औचित्य' का सही संधि शब्द कौन-सा है?
 (a) वाण्यौचित्य (b) वाणैचित्य
 (c) वाण्यैचित्य (d) वाणौचित्य

चक्रबन्दी लेखपाल (2015)

35. 'अन्वीक्षण' का संधि-विच्छेद कौन-सा है?
 (a) अनु + इक्षण (b) अन + वीक्षण
 (c) अनू + इक्षण (d) अनु + इक्षण

चक्रबन्दी लेखपाल (2015)

36. 'शीतर्तु' का संधि-विच्छेद कौन-सा है?
 (a) शि + रतु (b) शिता + रतु
 (c) शीत + रत्तु (d) शित + रितु

चक्रबन्दी लेखपाल (2015)

37. "निर्धन" में कौन-सी संधि है?
 (a) अयाधि संधि (b) यण संधि
 (c) व्यंजन संधि (d) विसर्ग संधि

राजस्व लेखपाल (2015)

38. "रीत्यनुसार" शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा?
 (a) रीति + अनुसार (b) रीत्य + अनुसार
 (c) रीतु + अनुसार (d) रीत + अनुसार

राजस्व लेखपाल (2015)

39. यद्यपि
 (a) यद्य + आपि (b) य + द्यपि
 (c) यदि + अपि (d) यद्या + आपि

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

40. तिरस्कार
 (a) तिरस + कार (b) तिरः + कार
 (c) तिः + कार (d) तिर + कार

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

41. 'आच्छादित' का उचित विच्छेद निम्न में से कौन-सा है?
 (a) आत् + छादित (b) आक् + छादित
 (c) आ + छादित (d) आच् + छादित

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

42. पिरु + अनुमति का सही संधिपद है—
 (a) पित्रानुमति (b) पित्रीनुमति
 (c) पित्रनुमति (d) पित्रानुमति

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

43. 'उच्छ्वास' का सही संधि-विच्छेद है—
 (a) उच् + श्वास (b) उच् + छ्वास
 (c) उत् + श्वास (d) उत् + छ्वास

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2015)

44. 'उथला' शब्द का विलोम है :
 (a) गहरा (b) छिछला
 (c) समतल (d) उभार

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

45. 'स्वर्ग' शब्द का विलोम है :
 (a) बैकुंठ (b) देवलोक
 (c) नरक (d) परमधाम

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

46. 'राग' शब्द का विलोम है :
 (a) अनुराग (b) विराग
 (c) आसक्ति (d) अनुरक्ति

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

47. 'सूक्ष्म' शब्द का विलोम है :
 (a) स्थूल (b) बारीक
 (c) क्षीण (d) पतला

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

48. 'स्वाधीन' शब्द का विलोम है :
 (a) स्वतंत्र (b) स्वच्छंद
 (c) पराधीन (d) निरंकुश

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

49. 'सन्मार्ग' शब्द का विलोम है :
 (a) सहज मार्ग (b) सुमार्ग
 (c) अमार्ग (d) कुमार्ग

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

50. 'घृणा' शब्द का विलोम है :
 (a) प्रेम (b) नफरत
 (c) प्रताङ्गना (d) हिंसा

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

रोजगार प्रब्लेकेशन

51. 'मूर्त' शब्द का विलोम है—

- (a) अमूर्त
(b) प्रतिमूर्त
(c) सम्मूर्त
(d) अदृष्ट

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

52. 'सम' शब्द का विलोम है—

- (a) खसम
(b) भसम
(c) विषम
(d) कसम

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

53. 'लोक' शब्द का विलोम है—

- (a) ह्युलोक
(b) अलोक
(c) विलोक
(d) परलोक

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

54. 'समुख' शब्द का विलोम है—

- (a) विमुख
(b) प्रमुख
(c) पाश्व
(d) समक्ष

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

55. 'वक्ता' शब्द का विलोम है—

- (a) आयोजक
(b) प्रायोजक
(c) श्रोता
(d) व्याख्याता

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

56. 'आवृत' शब्द का विलोम है—

- (a) विमोचित
(b) आच्छन्न
(c) परिच्छित्र
(d) अनावृत

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

57. निम्नलिखित में से कौन-सा विलोम युग्म सही नहीं है?

- (a) भद्र-अभद्र
(b) भय-साहस
(c) मूढ़-ज्ञानी
(d) मान्य-धान्य

Lower (2019)

58. निम्नलिखित में से कौन-सा सही विलोम-युग्म नहीं है?

- (a) सदाचार-दुराचारी
(b) सम-विषम
(c) समर्थक-विरोधी
(d) समष्टि-व्यष्टि

Lower (2019)

59. 'बर्बर' का विलोम शब्द है—

- (a) दुर्बल
(b) निर्मल
(c) सुंदर
(d) सम्म्य

Cane Supervisor (2019)

60. निष्कलुष का विलोम शब्द है—

- (a) कुख्यात
(b) कृतघ्न
(c) कलुष
(d) कडुवा

लोअर II (2019)

61. कौन-सा शब्द 'ऐहिक' शब्द का विलोम है?

- (a) भौतिक
(b) सांसारिक
(c) पारलौकिक
(d) ऐहलौकिक

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

62. 'आकर्षण' का विलोम होगा :

- (a) कर्षण
(b) विकर्षण
(c) घर्षण
(d) अपमान

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2019)

63. दिये गये विकल्पों में से 'अमृत' का विलोम शब्द बताएँ:

- (a) भय
(b) सुधा
(c) विष
(d) जलज

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2019)

64. निम्न में से कौन-सा विलोम शब्द सुमेलित नहीं है—

- (a) पौराणिक-प्राचीन
(b) कनिष्ठ—ज्येष्ठ
(c) उग्र—सौम्य
(d) ध्वंस—निर्माण

नलकूप चालक परीक्षा (2019)

65. 'तामसिक' का विलोम क्या होगा?

- (a) सात्त्विक
(b) अभय
(c) दृढ़
(d) सामिष

नलकूप चालक परीक्षा (2019)

66. निम्नलिखित में से 'निन्दा' का विलोम क्या होगा?

- (a) स्तुति
(b) निंद्य
(c) श्लाघ्य
(d) निरुद्ध

ग्राम विकास अधिकारी (2019)

67. 'आकाश' का विलोम बताइए।

- (a) धरती
(b) पाताल
(c) अनर्थ
(d) अनघ

ग्राम विकास अधिकारी (2019)

68. 'पृथ्वी' का विलोम बताइए।

- (a) आकाश
(b) पाताल
(c) गोचर
(d) लौकिक

ग्राम विकास अधिकारी (2019)

69. सन्तोष महाधन है।

रेखांकित शब्द का सटीक विलोम होगा :

- (a) असंतोष
(b) अस्वीकार
(c) असहयोग
(d) असार

ग्राम विकास अधिकारी (2019)

70. 'जटिल' का विलोम होगा :

- (a) सरल
(b) कठिन

(c) कुटिल

(d) टेढ़ा

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

71. 'जड़' का विलोम है—

(a) जल

(b) मूर्ख

(c) विद्वान्

(d) चेतन

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

72. लौकिक जगत की माया में सभी फँसे हुए हैं। रेखांकित शब्द का सटीक विलोम बताइए।

(a) अलौकिक

(b) कुटिल

(c) सांसारिक

(d) दुनियावान्

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

73. निम्नलिखित में से असंगत (गलत) विलोम शब्द—युग्म कौन-सा है?

(a) घात-प्रतिघात

(b) प्रसारण-संकुचन

(c) शाश्वत-सदैव

(d) खग-मृग

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

74. "ऋजु" का विलोम है—

(a) सीधा

(b) सरल

(c) त्रिकोण

(d) वक्र

आबकारी सिपाही भर्ती परीक्षा (2016)

75. 'व्यास' का विलोम शब्द है—

(a) समास

(b) संश्लेषण

(c) संक्षेप

(d) लघु

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

76. वैमनस्य का विलोम शब्द होगा—

(a) विमनस्य

(b) सौमनस्य

(c) सुमनस्य

(d) अवमनस्य

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

77. "हर्ष" का विलोम बताएँ—

(a) खुशी

(b) विषाद

(c) उल्लास

(d) आनन्द

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

78. भारतीय लोक जीवन में योग को अति महत्वपूर्ण समझा जाता है।

(a) नियोग

(b) भोग

(c) अभियोग

(d) रोग

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

79. लंबी योग साधना से उसका ओजस्वी चेहरा देखते ही बनता था।

(a) शोकाकुल

(b) कामुक

(c) कान्तिहीन

(d) मलीन

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

80. जैन मत को मानने वालों में श्वेताम्बर बड़ी संख्या में हैं।

(a) दिगम्बर

(b) नीलाम्बर

(c) अम्बर

(d) पीताम्बर

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

81. ज्येष्ठ मास में निर्जला एकादशी का ब्रत बहुत कठिन होता है।

(a) श्रेष्ठ

(b) आदर्श

(c) हीन

(d) कनिष्ठ

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

82. 'उद्धत' का विलोम शब्द है—

(a) सौख्य

(b) विनीत

(c) उत्तम

(d) कोमल

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

83. विपरीतार्थक शब्द चुनिए—'शोषक'

(a) शोषित

(b) पोषक

(c) पोसक

(d) शोषण

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

84. "कर्कश" का विलोम, नीचे दिए विकल्पों में से चुनें।

(a) कठोर

(b) विवेकी

(c) मधुर

(d) विनम्र

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

85. "श्री गणेश" का विलोम शब्द है—

(a) श्री राधा

(b) इति श्री

(c) विनाश

(d) इनमें से कोई नहीं

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

86. उचित विलोम शब्द का चयन कीजिये—

'अर्वाचीन'

(a) नवीन

(b) प्राचीन

(c) आदिकालीन

(d) पाषाणकालीन

कम्बाइंड मेडिकल सर्विसेस कॉर्पोरेटिव परीक्षा (2016)

87. उपकार

(a) प्रतिकार

(b) परोपकार

(c) अपकार

(d) अनुपकार

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

88. विस्तृत

(a) विस्तार

(b) संक्षिप्त

(c) संक्षेप

(d) संक्षिप्त

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

89. उन्मुख

(a) प्रमुख

(b) विमुख

(c) बड़ा

(d) उठा हुआ

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

110. इनमें से कौन-सा शब्द 'कनक' का समानार्थी नहीं है?

(a) सोना

(b) मक्का

(c) धूरा

(d) गेहूँ

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

111. इनमें से कौन-सा शब्द 'मद' का समानार्थी नहीं है?

(a) शिथिल

(b) गर्व

(c) मद्य

(d) नशा

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

112. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'नम' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) गीला

(b) भीगा

(c) आई

(d) आर्द्रा

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

113. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'डर' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) शीति

(b) भीति

(c) भय

(d) त्रास

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

114. निम्नलिखित में से कौन-सा 'कुशल' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) दक्ष

(b) अक्ष

(c) निपुण

(d) प्रवीण

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

115. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'पक्षी' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) द्विज

(b) खग

(c) पंथी

(d) विहग

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

116. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'पुत्री' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) दुहिता

(b) दौहित्र

(c) तनया

(d) सुता

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

117. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'दुष्ट' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) खल

(b) खलक

(c) दुर्जन

(d) अधम

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

118. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'पहाड़' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अचल

(b) अचला

(c) गिरि

(d) अद्रि

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

119. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'वादल' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) जलद

(b) तोयज

(c) घन

(d) अभ्र

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

120. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) नीरज

(b) उत्पल

(c) अरविन्द

(d) वारिद

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

121. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'सूर्य' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) दिनकर

(b) दिवाकर

(c) हिमकर

(d) प्रभाकर

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

122. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'बिजली' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) तङ्गित

(b) चंचला

(c) सौदामिनी

(d) चंचरी

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

123. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'हवा' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अनल

(b) अनिल

(c) पवन

(d) समीर

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

124. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'आँख' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अक्षि

(b) नयन

(c) दृग

(d) दृग्मु

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

125. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'मस्तक' का पर्यायवाची है?

(a) लाल

(b) ललाट

(c) लालिमा

(d) ललाई

Lower (2019)

126. निम्नलिखित में से कौन-सा 'उत्कंठित' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) इच्छुक

(b) लालायित

(c) उत्सुक

(d) अभिलाषा

Lower (2019)

127. निम्नलिखित में से कौन-सा 'समुद्र' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अम्बुद

(b) पारावार

(c) अर्णव

(d) पयोधि

Cane Supervisor (2019)

128. निम्नलिखित प्रश्न में चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिए गए शब्द का सही समानार्थी शब्द वाला विकल्प है।

सर्प

(a) व्याप्र

(b) शार्दूल

(c) व्याल

(d) सारंग

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

129. उस विकल्प का चयन करें जो दिए गए शब्द का सही समानार्थी शब्द है।

हिरण

- (a) कुरंग (b) तरंग
(c) नंदन (d) अंबुद

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

130. निम्न में कौन-सा हवा का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) वायु (b) समीर
(c) पवन (d) सलिल

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2019)

131. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा शब्द 'समुद्र' का पर्यायवाची है?

- (a) रत्नाकर (b) मधुकर
(c) नरपति (d) दिनकर

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2019)

132. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा शब्द सूर्य का पर्यायवाची नहीं है :

- (a) दिवाकर (b) प्रभाकर
(c) सुधाकर (d) भास्कर

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2019)

133. 'तृष्णा' के विपरीतार्थक शब्द का चयन कीजिए :

- (a) वितृष्ण (b) वित्रष्ण
(c) तृप्ति (d) लोभ

कृषि प्राविधिक भर्ती परीक्षा (2019)

134. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द 'मछली' का पर्याय है?

- (a) चपला (b) तोयनिधि
(c) अक्षि (d) झाष

कृषि प्राविधिक भर्ती परीक्षा (2019)

135. 'अनाज' का पर्यायवाची शब्द है—

- (a) चाह (b) शस्य
(c) सलिल (d) रूपा

नलकूप चालक परीक्षा (2019)

136. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'अनाथ' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) वेसहारा (b) यतीम
(c) अनाड़ी (d) निराश्रित

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

137. निम्नलिखित में से 'विचित्र' का पर्यायवाची क्या होगा?

- (a) विरुद्ध (b) प्रतिकूल
(c) विलक्षण (d) विपरीत

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

138. कौन-सा शब्द 'अनीक' का पर्यायवाची है?

- (a) अर्जुन
(c) अग्नि

- (b) सेना
(d) घोड़ा

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

139. 'कपड़ा' का पर्याय बताइए।

- (a) चलन (b) बसन
(c) गगन (d) जंगल

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

140. निम्नलिखित में से समानार्थी जोड़ी को स्पष्ट कीजिए :

- (a) पार्वती—माहेश्वरी
(b) व्यावहारिक—अव्यावहारिक
(c) शेर—शेरनी
(d) लड़का —लड़के

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

141. आकाश में चन्द्रमा चमक रहा है।

- रेखांकित शब्द का पर्यायवाची नहीं है :
(a) व्योम (b) गगन
(c) रसाल (d) नभ

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

142. कौन-सा शब्द अँधकार का पर्यायवाची नहीं है।

- (a) तम (b) अँधेरा
(c) अमावस्या (d) तिमिर

वन रक्षक परीक्षा (2018)

143. खगेश का पर्यायवाची है :

- (a) वासुदेव (b) वाक्
(c) वैनतेय (d) विधु

वन रक्षक परीक्षा (2018)

144. 'दुर्गा' का पर्यायवाची है :

- (a) भारती (b) श्री
(c) धात्री (d) ज्योत्स्ना

वन रक्षक परीक्षा (2018)

145. सोना का पर्यायवाची है :

- (a) पन्नग (b) ललित
(c) चित्ताकर्षक (d) जातरूप

वन रक्षक परीक्षा (2018)

146. धूसर का पर्यायवाची होगा :

- (a) खनक (b) सदन
(c) वेसर (d) गजवदन

वन रक्षक परीक्षा (2018)

147. कुंदन का पर्यायवाची होगा :

- (a) हेम
(c) मतंग

- (b) दुश्मन
(d) स्वजन

वन रक्षक परीक्षा (2018)

148. पाहुना का पर्यायवाची होगा :

- (a) कृषक
(c) आगंतुक
- (b) जंबुक
(d) आदित्य

वन रक्षक परीक्षा (2018)

149. 'आँख' का पर्यायवाची है—

- (a) लोचन
(c) वसन
- (b) पावक
(d) प्रभा

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

150. समानार्थी शब्द की जोड़ी नहीं है :

- (a) सुमन-पुष्प
(c) चारपाई-खटिया
- (b) निशा-निशाचर
(d) पाठशाला-विद्यालय

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

151. हमें सूर्य नमस्कार करना चाहिए। रेखांकित शब्द का पर्यायवाची शब्द बताइए :

- (a) दिनकर
(c) कलाधर
- (b) नरेश
(d) सारंग

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

152. 'कमल के फूल पर भौंरे मँडराते हैं।' वाक्य के रेखांकित शब्द का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) मधुकर
(c) जलज
- (b) मधुप
(d) भ्रमर

लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

153. 'आज आकाश में छाए हैं।' रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

- (a) जलज
(c) जलद
- (b) जलधि
(d) नीरज

लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

154. 'भौंरा' का सही पर्यायवाची शब्द बताइए।

- (a) कुंज
(c) भ्रमर
- (b) आली
(d) खद्योत

लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

155. 'पत्थर' का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) पाहन
(c) पाषाण
- (b) उपल
(d) उरग

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

156. "अश्व" का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) तरंग
(b) घोटक

- (c) घोड़ा
(d) हय

आबकारी सिपाही भर्ती परीक्षा (2016)

157. 'सरस्वती' का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) वाणी
(c) कमला
- (b) वीणा पाणि
(d) शारदा

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

158. 'विषु' का पर्यायवाची है—

- (a) सर्वव्यापक, नित्य
(c) महान, ईश्वर
- (b) ब्रह्मा, आत्मा
(d) चिरस्थायी, दृढ़

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

159. 'भुजंग' का पर्यायवाची शब्द नहीं है—

- (a) व्याल
(c) सर्प
- (b) गरुड़
(d) पनाग

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

160. 'नाहर' के लिए समुचित पर्यायवाची शब्द है—

- (a) नदी
(c) सरिता
- (b) व्याप्र
(d) शेर

अमीन परीक्षा (2016)

161. इनमें से स्वर्ग का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है?

- (a) त्रिदशालय
(c) गौ
- (b) त्रिदिव
(d) नाक

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

162. नीचे दिए गए शब्दों में कौन-सा शब्द 'अर्जिन' का पर्याय नहीं है?

- (a) कृशानु
(c) हुताशन
- (b) अनिल
(d) वहि

गन्ना पर्यवेक्षक परीक्षा (2016)

163. भिन्नार्थक शब्द का चयन कीजिए।

- (a) पावक
(c) अनिल
- (b) अनल
(d) कृशानु

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

164. गँदला, मैला, मलिन किस शब्द के पर्यायवाची हैं?

- (a) प्रलय
(c) पंकिल
- (b) ध्वल
(d) पामर

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

165. निम्नलिखित में क्या 'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) मंदाकिनी
(c) कालिन्दी
- (b) भागीरथी
(d) सुरसरिता

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

166. आविर्भाव

- (a) निर्माण
- (c) विकास

- (b) उद्भव
- (d) जन्म

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

167. मनस्त्रिज

- (a) पुष्पसेज
- (c) कामदेव

- (b) मंडप
- (d) मंदिर

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

168. ऋतुपति

- (a) बसंत
- (c) सूर्य

- (b) मधुमास
- (d) वर्ष

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

169. 'घर' का पर्यायवाची शब्द है—

- (a) विहार
- (c) आश्रम

- (b) इला
- (d) गेह

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

170. सभा का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है—

- (a) सम्मिलित
- (c) बैठक

- (b) परिषद
- (d) महावर्तन

लोअर 1 भर्ती परीक्षा (2016)

171. "फूल" का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) सुमन
- (c) तनुजा

- (b) पुष्प
- (d) कुसुम

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

172. "कल्पवृक्ष" का पर्यायवाची है—

- (a) पारिजात
- (c) देववृक्ष

- (b) कल्पतरु
- (d) ये सभी

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

173. समानार्थी शब्द का चयन कीजिए—

- संविदा
- (a) बातचीत
- (c) ठेका

- (b) झगड़ा
- (d) बादा

कम्बाइंड मेडिकल सर्विसेस कम्पटेटिव परीक्षा (2016)

174. 'घट्टपद' का पर्यायवाची शब्द है—

- (a) तितली
- (c) मकड़ी

- (b) भ्रमर
- (d) केकड़ा

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2015)

175. कौन-सा शब्द गणेश का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) विनायक
- (c) धनद

- (b) एकदन्त
- (d) लम्बोदर

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2015)

176. 'कमल' का पर्यायवाची है?

- (a) अम्बर
- (c) नीरज

- (b) दिनकर
- (d) पुष्प

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2015)

177. कौन सा शब्द आँख का पर्यायवाची नहीं है—

- (a) चक्षु
- (c) अक्षि

- (b) दृग
- (d) अतुल

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2015)

178. चन्द्रमा का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) मयंक
- (c) सुधांशु

- (b) इन्दु
- (d) सरोज

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2015)

179. मेधावी

- (a) निष्ठावान
- (c) विचारशील

- (b) विद्वान
- (d) प्रतिभाशाली

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

180. जलनिधि

- (a) सागर
- (c) वारिश

- (b) बादल
- (d) तालाब

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

181. अमृत

- (a) पीयूष
- (c) अम्बु

- (b) उदक
- (d) शहद

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

182. मर्कट

- (a) पानी
- (c) बंदर

- (b) पुत्र
- (d) मित्र

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

183. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'वृक्ष' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) तरु
- (c) पादप

- (b) विहग
- (d) शाखी

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

184. "आत्मभू, स्वयंभू, चतुरानन....." विकल्पों में से पर्यायवाची शब्द चुनिए—

- (a) ब्रह्मा
- (c) महेश

- (b) विष्णु
- (d) गणेश

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

185. "तनय, सुत, आत्मज,....." विकल्पों में से सही पर्यायवाची चुनिए—

- (a) पुत्र
- (b) पुत्री

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

(c) भाई

(d) पिता

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

186. 'नौका' विकल्पों में से सही पर्यायवाची शब्द चुनिए—

(a) तरिणी

(b) आपगा

(c) जलयान

(d) तरंगिनी

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

187. 'रात्रि' विकल्पों में से सही पर्यायवाची शब्द चुनिए—

(a) शर्करी

(b) यामिनी

(c) त्रियाम

(d) इषु

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

188. इनमें 'अश्व' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है?

(a) तुरंग

(b) कुरंग

(c) हय

(d) सैधव

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

189. इनमें 'मदिरा' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है?

(a) सुरा

(b) मधु

(c) अमी

(d) मद्य

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

190. इनमें 'पली' का पर्यायवाची कौन-सा है?

(a) दारा

(b) विनायकी

(c) प्रभा

(d) सौदामिनी

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

191. इनमें 'शत्रु' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है?

(a) अहि

(b) अरि

(c) रिपु

(d) बैरी

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

192. इनमें 'वसंत' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है?

(a) ऋतुराज

(b) कुसुमाकर

(c) पराग

(d) ऋतुपति

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

193. निम में से कौन-सा 'कौमुदी' का पर्यायवाची शब्द है?

(a) चाँदनी

(b) चंद्रहास

(c) ज्योति

(d) रोशनी

असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

194. निम में से कौन-सा अज्ञानी का पर्याय नहीं है?

(a) अज्ञ

(b) भिज्ञ

(c) मूर्ख

(d) अनभिज्ञ

असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

195. 'अतः' शब्द का समानार्थी पहचानिए?

(a) अन्यथा

(b) अतएव

(c) परिणामत

(d) अस्तु

असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

196. 'वागेश्वरी' का पर्यायवाची शब्द क्या है?

(a) कमला

(b) शारदा

(c) सुखदा

(d) प्रेमदा

असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

197. समुद्र

(a) अर्णव

(b) विश्वंभर

(c) उदक

(d) तुंग

चकबन्दी लेखपाल (2015)

198. सौदामनी

(a) दारा

(b) विद्युत

(c) गंगोत्री

(d) व्यापारी

चकबन्दी लेखपाल (2015)

199. 'संरचना' शब्द के लिए कौन-सा पर्याय शब्द अनुचित है?

(a) संघटना

(b) रचना विन्यास

(c) उद्भावना

(d) विरचित

चकबन्दी लेखपाल (2015)

200. यातुधान

(a) वसन

(b) आग

(c) अश्व

(d) निश्चिर

चकबन्दी लेखपाल (2015)

201. रात

(a) धाम

(b) त्रियामा

(c) अमिय

(d) पयास

चकबन्दी लेखपाल (2015)

202. "अरविंद" शब्द का पर्यायवाची शब्द बताइए।

(a) कल्पवृक्ष

(b) केवड़ा

(c) कमल

(d) गुलाब

राजस्व लेखपाल (2015)

203. ग्रीवा

(a) पैर

(b) कलाई

(c) पृष्ठ

(d) गरदन

चकबन्दी लेखपाल (2015)

204. "स्वच्छ" शब्द का पर्यायवाची शब्द बताइए।

(a) पंकिल

(b) नीरज

(c) नीरद

(d) निर्मल

राजस्व लेखपाल (2015)

205. निम्नलिखित में असमानार्थक शब्द का चयन कीजिए।

- (a) स्नेह
- (b) अनुराग
- (c) द्वेष
- (d) प्रीति

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

206. निम्नलिखित में असमानार्थक शब्द का चयन कीजिए।

- (a) जन्म
- (b) मृत्यु
- (c) उगना
- (d) उत्पादन

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

207. निम्नलिखित में असमानार्थक शब्द का चयन कीजिए।

- (a) वीर
- (b) निडर
- (c) शूर
- (d) डरपोक

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

208. निम्नलिखित में असमानार्थक शब्द का चयन कीजिए।

- (a) स्वर
- (b) आवाज
- (c) श्रवण
- (d) ध्वनि

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

209. अभिलाषा

- (a) आकांक्षा
- (b) अहंकार
- (c) विकार
- (d) हार्दिक

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

210. आकाश

- (a) दृग
- (b) विप्र
- (c) व्योम
- (d) कगार

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

211. दूध

- (a) स्तन्य
- (b) खोर
- (c) पेय
- (d) नवनीत

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

212. प्रेक्षा

- (a) दीक्षा
- (b) परीक्षा
- (c) शिक्षा
- (d) दृष्टि

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

213. विरासत

- (a) देय
- (b) प्रदेय
- (c) दाय
- (d) धाय

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

214. मृगधर

- (a) सिंह
- (b) चंद्रमा
- (c) शिव
- (d) मयूर

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2015)

215. पराग

- (a) भारती
- (b) फूल
- (c) सुगंध
- (d) सुकुमार

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2015)

216. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द में से कौन सा सुरेण्टिन नहीं है?

- (a) जो वर्णन के बाहर है—वर्णनातीत
- (b) जो देखा नहीं जा सकता —अदृश्य
- (c) जो आमिष नहीं खाता—सामिष
- (d) जो पहरा देता है—प्रहरी

कम्प्यूटर ऑपरेटर (2020)

217. जो मुश्किल से प्राप्त हो, उसे कहते हैं :

- (a) अलंध्य
- (b) सुलभ
- (c) दुर्लभ
- (d) अलंध्य

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

218. अवसर के अनुरूप बदल जाने वाले को कहते हैं :

- (a) यथास्थितिवादी
- (b) आदर्शवादी
- (c) भाववादी
- (d) अवसरवादी

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

219. भूमि के अन्दर की जानकारी रखनेवाले को कहा जाता है :

- (a) भूगर्भवेत्ता
- (b) पुरातत्ववेत्ता
- (c) नृत्वशास्त्री
- (d) भूकम्पवेत्ता

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

220. रात में विचरण करने वाले प्राणी का कहा जाता है—

- (a) निशाकर
- (b) बनचर
- (c) तमचोर
- (d) निशाचर

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

221. जो खाने योग्य न हो—

- (a) अखाद्य
- (b) पथ्य
- (c) अपाच्य
- (d) अलंध्य

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

222. जिसके पास घर न हो—

- (a) गृही
- (b) अनिकेत
- (c) अभिषेक
- (d) अकिञ्चन

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

223. ‘जो इंद्रियों की पहुँच से बाहर हो’—

- वाक्यांश के लिए एक शब्द बताइए।
- (a) इंद्रियाजित
 - (b) इंद्रियनिग्रह
 - (c) इंद्रियातीत
 - (d) इंद्रधनुष

Lower (2020)

224. 'गोद लिया हुआ पुत्र' के लिए उपयुक्त एक शब्द क्या होगा?
 (a) दत्त (b) दत्तक
 (c) दत्तचित् (d) दंपती

Lower (2019)

225. 'तर्क के द्वारा जो माना गया हो'—वाक्यांश के लिए एक शब्द निम्नलिखित में से क्या होगा?
 (a) तर्कसम्पत् (b) तर्कसंगत
 (c) तकावी (d) तटस्थ

Lower (2019)

226. 'ऊपर की ओर उछाला हुआ' के लिए एक शब्द होगा—
 (a) प्रक्षिप्त (b) उत्क्षिप्त
 (c) आरोहण (d) उत्थान

Cane Supervisor (2019)

227. 'जो आँखों के सामने हो' के लिये एक शब्द बताइये।
 (a) सामाजिक (b) प्रत्यक्ष
 (c) सुलभ (d) प्रियतम

लोअर II (2019)

228. 'इन्द्रियों को जीत लिया हो जिसने' वाक्यांश के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए।
 (a) इन्द्रजीत (b) इंद्र
 (c) जितेन्द्रिय (d) इन्द्रिपति

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2019)

229. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से, उस सही विकल्प का चयन करें जो वाक्यांश के लिए एक शब्द का विकल्प है।
 जो थोड़ा जानता है।

- (a) अवज्ञ (b) अल्प
 (c) अल्पज्ञ (d) सर्वज्ञ

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

230. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से, उस सही विकल्प का चयन करें जो वाक्यांशों के लिए एक शब्द का विकल्प है।

जो इस लोक की बात है।

- (a) अलौकिक (b) स्वर्गीय
 (c) पाश्चात्य (d) लौकिक

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

231. सही विकल्प का चयन करें जो वाक्यांशों के लिए एक शब्द है।
 आदि से अंत तक।

- (a) अनादि (b) आद्योपांत
 (c) समकालीन (d) समीचीन

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

232. सही विकल्प का चयन करें जो वाक्यांशों के लिए एक शब्द है।

जो सब कुछ जानता है।

- (a) सर्वज्ञ (b) सर्वस्व
 (c) सर्वत्र (d) ज्ञानी

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

233. 'जानने की इच्छा' के लिए एक शब्द है :

- (a) इच्छा (b) आशा
 (c) जिज्ञासा (d) अभिलाषा

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2019)

234. 'किसी व्यक्ति या वस्तु को न अपनाना' वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द का चयन कीजिए :

- (a) बहिष्कार (b) परिष्कार
 (c) तिरस्कार (d) परोपकार

कृषि प्राविधिक भर्ती परीक्षा (2019)

235. 'जिस पर आक्रमण हो'—वाक्यांश के लिए उचित शब्द चुनें।

- (a) आक्रमण (b) आक्रामक
 (c) आक्रांत (d) आत्मघाती

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

236. पृथ्वी, ग्रहों, तारों आदि का स्थान—वाक्यांश के लिए उचित शब्द होगा?

- (a) समंदर (b) अन्तरिक्ष
 (c) धरती (d) विश्व

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

237. दूसरों की बातों में दखल देना—के लिए एक शब्द क्या होगा?

- (a) हस्तक्षेप (b) आक्षेप
 (c) दूरदर्शी (d) उपकारी

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

238. 'जो देने योग्य है' के लिए एक शब्द है :

- (a) गेय (b) देय
 (c) पेय (d) दान

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

239. 'जो कम खर्च करता हो'। इस वाक्यांश के लिए एक शब्द होगा।

- (a) कंजूस (b) लोभी
 (c) मितव्ययी (d) मक्खीचूस

वन रक्षक परीक्षा (2018)

240. प्राणदा के लिए अनेक शब्द हैं :

- (a) प्राण रहने का मंत्र
 (b) जीवन देने वाली दवा
 (c) जीवन चाहने वाली राह
 (d) प्राण रहने का अभ्यास

वन रक्षक परीक्षा (2018)

रोजगार पब्लिकेशन

241. 'बिना पलक झपकाए' के लिए एक शब्द है :

- (a) निष्ठलक
- (b) निस्यूह
- (c) निर्निमेष
- (d) निर्विकार

वन रक्षक परीक्षा (2018)

242. 'प्रज्ञाचक्षु' के लिए वाक्यांश :

- (a) चक्षु ही जिसकी प्रज्ञा हो
- (b) बुद्धि जिसका नेत्र हो
- (c) प्रज्ञा और चक्षु जिसके समान हो
- (d) बुद्धि और ज्ञान होने वाली प्रज्ञा

वन रक्षक परीक्षा (2018)

243. सख्यभाव मिश्रित अनुराग को कहा जाता है :

- (a) प्रणय
- (b) श्रद्धा
- (c) प्रेम
- (d) सम्मान

वन रक्षक परीक्षा (2018)

244. सफलता न मिलने पर दुःखी होना को क्या कहते हैं?

- (a) क्षोभ
- (b) दया
- (c) दुःख
- (d) कृपा

वन रक्षक परीक्षा (2018)

245. खाने की इच्छा है :

- (a) विभूक्षा
- (b) बुभक्षा
- (c) वीभुक्षा
- (d) भूभूक्षा

वन रक्षक परीक्षा (2018)

246. 'भविष्य में होने वाला' के लिए एक शब्द है—

- (a) भावी
- (b) गत
- (c) विगत
- (d) आभास

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

247. 'अनिल-अनल' शब्द युग्म का सही अर्थ है—

- (a) आग-हवा
- (b) हवा-आग
- (c) हवा-जंगल
- (d) जंगल-आग

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

248. जिसकी कोई उपमा न दी जा सके के लिए शब्द होगा—

- (a) अनुपम
- (b) अल्पज्ञ
- (c) ज्ञानी
- (d) अनुयायी

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

249. 'ऐसे से मनुष्य की जीवन जीने की इच्छा बलवती होती है।' रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द है—

- (a) जिजीविषा
- (b) चतुरानन
- (c) जीविका
- (d) इनमें से कोई नहीं

लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

250. 'जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके' —

(a) अच्युत

(c) अटल

(b) अटूट

(d) अदेय

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

251. दिए गए वाक्य के लिए प्रयुक्त होने वाले सही विकल्प को चुनिए—
वह कवि जो तत्काल कविता करने में कुशल हो।

(a) सुकवि

(c) राजकवि

(b) महाकवि

(d) आशुकवि

आबकारी सिपाही भर्ती परीक्षा (2016)

252. जो धरती फोड़कर जन्मता है—

(a) स्वयंभू

(c) जरायुज

(b) जन्मदाता

(d) उद्भिज

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

253. वाक्यांश का एक शब्द बनाइये—

'जिसके हृदय में ममता नहीं है।'

(a) निर्मम

(c) निर्भय

(b) निर्दय

(d) निहृदय

लोअर III भर्ती परीक्षा (2016)

254. दिये गये वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए—

पूरब और उत्तर के बीच की दिशा

(a) आगेय

(c) वायव्य

(b) ईशान

(d) नैऋत्य

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

255. एक ही समय में वर्तमान—

(a) आजीवन

(c) समसामयिक

(b) शाश्वत

(d) समानुकूल

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

256. पार्थिव—

(a) जिसका सम्बन्ध मनुष्यों से है।

(b) जिसका सम्बन्ध प्रथा से है।

(c) जिसका सम्बन्ध ईश्वर से है।

(d) जिसका सम्बन्ध पृथ्वी से है।

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

257. प्रत्युत्पन्नमति—

(a) उत्तर न देने की क्षमता

(b) जो फिर से उत्पन्न हुआ हो

(c) जिसकी बुद्धि में नई-नई बात उत्पन्न होती है

(d) जो तत्काल सोचकर उत्तर दे सके

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

258. जो इन्द्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो।

294. इनमें से कौन-सा पुल्लिंग शब्द स्त्रीलिंग शब्द में प्रत्यय लगाने से बना है?
- मर्दाना
 - बुढ़ापा
 - भेड़ा
 - विधुर

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

295. जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में 'हट' होता है, उनका लिंग होता है—
- पुल्लिंग
 - स्त्रीलिंग
 - नपुंसकलिंग
 - उभयलिंग

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

296. 'क्वाली' शब्द में कौन-सा लिंग है?
- पुल्लिंग
 - स्त्रीलिंग
 - नपुंसकलिंग
 - उभयलिंग

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

297. संज्ञा के जिस रूप में स्त्रीत्व का बोध होता है, उसमें कौन-सा लिंग होता है?
- पुल्लिंग
 - स्त्रीलिंग
 - नपुंसकलिंग
 - उभयलिंग

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

298. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?
- फुटपाथ
 - स्कूल
 - स्टोव
 - केतली

Lower (2019)

299. कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?
- मंत्रणा
 - सभा
 - मंडली
 - न्याय

लोअर II (2019)

300. 'तन' शब्द का लिंग निर्धारित कीजिये :
- पुल्लिंग
 - स्त्रीलिंग
 - उभयलिंग
 - नपुंसकलिंग

कनिष्ठ सहायक भर्ती पुनर्परीक्षा (2019)

301. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?
- दीमक
 - रात
 - वर्षा
 - विधुर

कृषि प्राविधिक भर्ती परीक्षा (2019)

302. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?
- देश
 - नगर
 - द्वीप
 - सीता

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

303. निम्न में कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?
- कृषि
 - पुल्लिंग
 - स्त्रीलिंग
 - उभयलिंग

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

सामान्य हिन्दी

(a) आशा

(c) क्षमा

(b) कष्ट

(d) सेना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

304. निम्न में कौन-सा स्त्रीलिंग है?

(a) विवाद

(c) रूप

(b) सार

(d) आय

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

305. निम्न में पुल्लिंग शब्द कौन-सा है?

(a) क्षमा

(c) लेख

(b) घटना

(d) स्पर्श

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

306. कौन-सा स्त्रीलिंग शब्द है?

(a) छाँच

(c) काढ़ा

(b) तिल

(d) टेसू

वन रक्षक परीक्षा (2018)

307. निम्नलिखित में से पुलिंग शब्द छाँटिए :

(a) चाहत

(c) मेहनत

(b) रंगत

(d) आहार

वन रक्षक परीक्षा (2018)

308. स्त्रीलिंग शब्द है :

(a) सलाद

(c) सारस

(b) सनक

(d) सलाम

वन रक्षक परीक्षा (2018)

309. पुलिंग वाचक शब्द छाँटिए :

(a) कैमरा

(c) प्लेट

(b) पायल

(d) तलवार

वन रक्षक परीक्षा (2018)

310. निम्न में पुलिंग शब्द कौन सा है?

(a) दया

(c) वायु

(b) प्रार्थना

(d) नेत्र

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

311. निम्न में स्त्रीलिंग शब्द कौन-सा है?

(a) शोभा

(c) पालन

(b) शस्त्र

(d) नृत्य

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

312. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है—

(a) ऋषु

(c) हंस

(b) पण्डित

(d) आचार्य

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

रोजगार पब्लिकेशन

कृषि प्राविधिक भर्ती परीक्षा (2019)

कम्प्यूटर ऑपरेटर

- (c) सुबह-गरीब (d) दोपहर-गरीब
ग्राम विकास अधिकारी (2018)

323. चिर-चौर का अर्थ क्या है :
 (a) नया/पुराना (b) किला/कास
 (c) पुराना/कपड़ा (d) चर/अचर
वन रक्षक परीक्षा (2018)

324. श्रुतिसम शब्द-युग्म की भिन्न अर्थ वाली सही जोड़ी है :
 पहचानिए :
 (a) कुल-कूल (b) रात्रि-निषा
 (c) अभिलाषा-इच्छा (d) किरण-रश्मि

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

325. शब्द युग्म के सही अर्थ भेद का चयन कीजिए—
 अम्बुज-अम्बुद
 (a) कमल-बादल (b) जल-कमल
 (c) समुद्र-कमल (d) बादल-समुद्र
ग्राम पंचायत अधिकारी (2018)

326. रिक्त स्थान हेतु दिए गए विकल्पों में उचित विकल्प चुनिए।
 रामू की.....केवल इसलिए हुई, क्योंकि राजीव मन...
अधिक बुद्धिमान है।
 (a) अपेक्षा, अपेक्षा (b) अपेक्षा, उपेक्षा
 (c) उपेक्षा, अपेक्षा (d) उपेक्षा, उपेक्षा
ग्राम विकास अधिकारी (2018)

327. “मंदिर-मंदिरा” युग्म का उपयुक्त अर्थ वाला युग्म कौन सा है?
 (a) पूजाघर - पुजारी (b) घर - सवारी
 (c) गुफा - बड़ी गुफा (d) देवालय - अश्वाल
ग्राम विकास अधिकारी (2018)

328. निम्न में से कौन-सा ‘आधि-व्याधि’ शब्द युग्म में आधि शब्द है?
 (a) मानसिक कष्ट (b) आधा
 (c) पागलपन (d) अधकपारी जैसे रोग
असिस्टेंट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2018)

329. निम्नलिखित में से किस मुहावरे का अर्थ ‘शर्मिदा होना’ नहीं ?
 (a) पानी-पानी होना
 (b) अपना-सा मुँह लेकर रह जाना
 (c) टका-सा मुँह लेकर रहना
 (d) मुँह में पानी आना

कम्प्यूटर ऑपरेटर (2018)

330. ‘आधा तीतर आधा बटेर’ लोकोक्ति का क्या अर्थ है?
 (a) बेमेल चीजों का सम्मिश्रण।

330 'आधा दीना आधा चत्तेर' लोकोक्ति का क्या अर्थ है?

(a) बेमेल चीजों का समिश्रण।

- (b) संकर चिह्निया।
 - (c) अनुपम वस्तु।
 - (d) समान कार्यों का मिश्रण।

कम्प्यूटर ऑपरेटर (2020)

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

333. 'चिराग तले अँधेरा' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है :

 - (a) अपने आसपास की परवाह न करना
 - (b) जहाँ जरूरी हो वहाँ उजाला करना
 - (c) दूसरे लोगों का ध्यान रखना
 - (d) निकट के दोष को न देख पाना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

334. 'आसमान से गिरा खजूर पर अटका' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है :

 - (a) बाधा-मुक्त होना
 - (b) एक नई मुसीबत में पड़ना
 - (c) मुसीबत ही मुसीबत
 - (d) मुसीबत में किसी का सहारा मिलना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

335. 'किनारे लगना' मुहावरे का उपयुक्त अर्थ है :

 - किसी कार्य का समाप्त होना
 - झब्बने से बचना
 - लहरों द्वारा किसी वस्तु को किनारे फेंकना
 - नदी पार करने में असफल होना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

336. 'आँसू पीकर रह जाना' मुहावरे का सही अर्थ है—
 (a) आँसू बहने न देना
 (b) अन के अभाव में आँसू से भूख मिटाना।
 (c) गुस्सा होना।
 (d) चुपचाप दःख सह लेना।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

337. 'किताब का कीड़ा होना' का उपयुक्त अर्थ है—

- (a) बहुमूल्य वस्तु को नष्ट करने वाला
 - (b) अनुपयुक्त जगह रहने वाला
 - (c) बहुत अधिक पढ़ने वाला
 - (d) ज्ञान का दुश्मन

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

338. 'कच्चा चिट्ठा खोलना' का उपयुक्त अर्थ है—

 - सारा भेद खोल देना
 - कच्चे काम को पक्का करना
 - भेद छिपाना
 - कान का कच्चा होना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

339. 'त्रिशंकु होना' का उपयुक्त अर्थ है—
(a) चारों और ध्यान होना
(b) किसी ओर का न रहना
(c) तीन तरफ ध्यान होना
(d) केवल ऊपर देखना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

340. 'घाट-घाट का पानी पीना' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है—

 - (a) अनेक क्षेत्रों का अनुभव
 - (b) जीवन में स्थिरता का अभाव
 - (c) दर का भटकना
 - (d) परोपकार के लिए यहाँ वहाँ घमना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

341. 'तीन लोक से मथुरा न्यारी' का अर्थ :

 - तीनों लोकों में मथुरा न होना
 - सबसे निराला।**
 - मथुरा का बखान तीनों लोकों में है।
 - बहुत सन्दर्भ मथुरा का होना

असिस्टेंट प्रकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)

342. 'सावन हरे न भादों सूखे'—लोकोक्ति का सही अर्थ क्या है?

 - (a) सावन में हरा और भादों में सूखा
 - (b) न सावन में हरा, न भादों में सूखा
 - (c) असंभव बात
 - (d) सदा एक सी दशा

Lower (2019)

343. 'दिनों का फेर होना'—मुहावरे का अर्थ बताएँ।
 (a) अजीब हालत होना
 (b) बहुत जल्दी-जल्दी होना
 (c) भाग्य का चक्कर
 (d) दिन काटे न कटना

Lower (2019)

(c) शक्तिहीन

(d) मालदार

नलकूप चालक परीक्षा (2019)

358. 'गुड़ गोबर कर देना' — मुहावरे का उचित अर्थ बताइए।

(a) कोई बखेड़ा खड़ा करना

(b) गायब कर देना

(c) बना बनाया काम बिगाड़ देना

(d) अपनी हानि करके मौज उड़ाना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

359. 'हथियार डाल देना'—मुहावरे का सही अर्थ बताइए।

(a) मात्र कल्पना करते रहना

(b) हथियार गिरा देना

(c) हथियार उठा लेना

(d) हार मान लेना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

360. उसने तो मेरी आँखे खोल दीं।

रेखांकित मुहावरे का अर्थ होगा :

(a) भ्रम को दूर करना।

(b) किसी बात पर ध्यान न देना।

(c) स्वागत के लिए राह देखना

(d) अंधकार दूर करना।

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

361. आग लगने पर कुआँ खोदना—लोकोक्ति का सही अर्थ होगा :

(a) जल्दी से कार्य करना

(b) संकट के समय बचाव के लिए सोचना

(c) मुसीबत आने से घबरा जाना

(d) कुआँ खोदकर पुण्य कमाना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

362. 'आसमान फट जाना' मुहावरे का सही अर्थ है :

(a) असंभव काम होना

(b) बहुत शेर करना

(c) चुगली करना

(d) अचानक आफत आ पड़ना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

363. 'स्वावलंबी होने' के लिए सही मुहावरा है :

(a) पौ बारह होना

(b) पानी फेर देना

(c) पैरों पर खड़ा होना

(d) फूँक-फूँक कर पैर रखना

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

364. 'बोये पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय' लोकोक्ति का सही अर्थ है:

(a) कर्म के अनुसार फल नहीं मिलता

(b) जैसा कर्म करोगे वैसा फल मिलेगा

(c) कर्म और फल का कोई संबंध नहीं

(d) कर्म करो, फल की इच्छा मत करो

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

365. 'लाभ ही लाभ' अर्थ के लिए सही लोकोक्ति है :

(a) पाँचों उँगलियाँ धी में

(b) पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती

(c) नेकी कर और कुएँ में डाल

(d) नेकी और पूछ-पूछ

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

366. कुजगह फोड़ा और ससुर वैद्य-कहावत का अर्थ है :

(a) दोनों में दोष

(b) मरीज वैद्य में संपर्क

(c) दोनों का त्याग

(d) धर्म संकट की स्थिति

वन रक्षक परीक्षा (2018)

367. 'शोक करना' के लिए मुहावरा है :

(a) सिर भारी होना

(b) सिर चढ़ाना

(c) सिर पीटना

(d) सिर पर सवार होना

वन रक्षक परीक्षा (2018)

368. 'अंग-अंग फूले न समाना' मुहावरे का सही अर्थ है—

(a) गुस्सा होना (b) दुखी होना

(c) बहुत आनंदित होना (d) बीमारी होना

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

369. 'अंगारों पर पैर रखना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(a) मूर्ख होना

(b) समझदार होना

(c) नुकसान होना

(d) जोखिम मोल लेना

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

370. आजकल के बच्चे माता-पिता की आँखों में धूल झोंकने में कुशल हैं। रेखांकित का अर्थ होता है :

(a) धोखा देना

(b) उपद्रव करना

(c) मान न देना

(d) घमंड दिखाना

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

371. "अंधों में काना राजा" रेखांकित लोकोक्ति का अर्थ है :

(a) गुणहीनों के बीच एक गुणवान व्यक्ति।

(b) ओछे व्यक्ति में ऐठन होती हैं

(c) बहुत ही लालची

(d) अकेला आदमी मजबूर होता है

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

372. 'इस विद्यालय में दाखिला मिलना टेढ़ी खीर है।' रेखांकित मुहावरे का सही अर्थ है—

- (a) कठिन कार्य होना (b) आसान कार्य होना
 (c) प्रयत्नशील होना (d) असंभव कार्य होना
- लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

373. “अन्धे को दीपक दिखाना” मुहावरे का सही अर्थ चुनिए—
 (a) अन्धे का रास्ता रोशन करना
 (b) ना समझ को उपदेश देना
 (c) ना समझ को रोशनी देना
 (d) अन्धे की सहायता करना

आबकारी सिपाही भर्ती परीक्षा (2016)

374. ‘छक्का-पंजा करना’ मुहावरे का सही अर्थ है—
 (a) झगड़ा लगाना
 (b) ओछी हरकत से कार्य सिद्ध करना
 (c) चापलूसी करना
 (d) नारदगीरी करना

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

375. ‘शैतान की आँत’—इस मुहावरे का उपयुक्त अर्थ है—
 (a) अत्यन्त धूर्त व्यक्ति (b) बहुत लम्बी वस्तु
 (c) अत्यन्त नगण्य वस्तु (d) अत्यन्त लाभदायक वस्तु

अभीन परीक्षा (2016)

376. ‘जस दूलह तस बनी बराता’ कहावत का अर्थ है—
 (a) अपनी योग्यता से अधिक बातें करना
 (b) जैसे खुद, वैसे साथी
 (c) किसी की चाल को अच्छी तरह जानना
 (d) अच्छे-बुरे को एक समझना

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

377. “द्रोपदी का चीर” का अर्थ है—
 (a) नारी का अपमान करना
 (b) शर्मनाक कार्य
 (c) कभी समाप्त न होना
 (d) सुन्दर स्त्री

ग्राम विकास अधिकारी (2016)

378. पत्थर को जोंक नहीं लगती
 (a) सबल का शोषण नहीं होता
 (b) मजबूत चीज आसानी से खराब नहीं होती
 (c) दो धूर्तों में प्रायः टकराव नहीं होता
 (d) हठी पर कोई प्रभाव नहीं होता

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

379. विहंगम दृष्टि
 (a) गहरी नजर
 (b) तीखी नजर
 (c) मंद नजर
 (d) सरसरी नजर

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

380. ऊँगली उठाना

- (a) क्षमा माँगना
 (b) अपना महत्व व्यक्त करना
 (c) दोष की ओर संकेत करना
 (d) अस्वीकार करना

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

381. ‘अंडे का शहजादा’ का अर्थ है—

- (a) कमज़ोर व्यक्ति (b) चालाक व्यक्ति
 (c) अनुभवी व्यक्ति (d) अनुभवहीन व्यक्ति

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

382. ‘पानी पीकर जात पूछना’ का अर्थ है—

- (a) अनोखा काम करना
 (b) विपरीत काम करना
 (c) काम निकलने के बाद सोचना
 (d) आराम से विचार करना

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

383. “वैल न कूदे, कूदे तंगी”—कहावत का अर्थ है—

- (a) वीरता पर विश्वास होना
 (b) गड्ढे में कूदना
 (c) साहसिक कार्य करना
 (d) स्वामी के बल पर सेवक का साहस

लोअर 1 भर्ती परीक्षा (2016)

384. “खग जाने खग ही की भाषा” लोकोक्ति का उचित अर्थ, नीचे दी गई विकल्पों में से बताइएँ।

- (a) पक्षियों की तरह बोलना
 (b) पक्षियों की भाषा न जानना
 (c) पक्षी अपनी भाषा स्वयं समझते हैं
 (d) समान प्रवृत्ति वाले लोग एक-दूसरे को सराहते हैं

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

385. “अक्ल का दुश्मन” मुहावरे का अर्थ है—

- (a) मित्र (b) महापंडित
 (c) महामूर्ख (d) शत्रु

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

386. ‘जबान पर लगाम न होना’—

- (a) स्पष्टवादी होना
 (b) अनावश्यक रूप से स्पष्टवादी होना
 (c) सदैव कठोर वचन कहना
 (d) सर्वत्र अपनी वामिता दिखाना

जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा (2016)

387. यालों का बैंगन—

- (a) अधिक चिकना (b) चौड़ा होना
 (c) गोल होना (d) सिद्धान्तहीन व्यक्ति
- वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)**
388. तलवार की धार पर चलना
 (a) उकीला होना (b) पराजित कर देना
 (c) ईर्ष्या करना (d) कठिन कार्य करना
- वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)**
389. चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते—
 (a) कंजूसी करना (b) सीमित साधनों से कम चलाना
 (c) छोटा होकर बड़ा काम करना (d) सीमित साधनों से बड़े काम नहीं करते
- वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)**
390. 'कट जाना' मुहावरे का अर्थ क्या होता है?
 (a) शर्मिंदा होना (b) टुकड़ों में बाँटना
 (c) विभाजित करना (d) आँखें चुराना
- असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)**
391. 'आँठ कनौजिया नौ चूल्हे' लोकोक्ति का अर्थ क्या होता है?
 (a) मस्त रहना (b) फँका करना
 (c) अलगाव की स्थिति (d) संपन्नता की स्थिति
- असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट भर्ती परीक्षा (2015)**
392. "खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे"—
 (a) अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ झुङ्झलाना
 (b) अपने से बड़ों पर क्रोध करना
 (c) कायरतापूर्ण व्यवहार करना
 (d) किसी बात पर शर्मिंदा होकर क्रोध करना
- राजस्व लेखपाल (2015)**
393. "ऊँट के मुँह में जीरा"—
 (a) बहुत अधिक खाने वाले को बहुत कम देना
 (b) जानवर को दवाई देना
 (c) बड़े प्राणी को सान्त्वना देना
 (d) बहुत बड़े प्राणी का भोजन बनना
- राजस्व लेखपाल (2015)**
394. पौ वारह होना
 (a) दाँव हाराना (b) कार्य सिद्ध होना
 (c) लाभ ही लाभ होना (d) सुवह हो जाना
- परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)**
395. गंगा नहाना—
 (a) पवित्र होना
 (b) कार्य पूरा कर निश्चित होना

- (c) नदी में स्नान करना (d) प्रशंसा करना
- परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)**
396. आँख लगना
 (a) आशंका होना (b) मृत्यु होना
 (c) नींद आना (d) प्रेम होना
- परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)**
397.के अंधे को हरा ही हरा नजर आता है।
 (a) वचपन (b) सावन
 (c) आँख (d) बात
- परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)**
398. काला अक्षर बराबर।
 (a) उल्लू (b) गाय
 (c) भैंस (d) कोयल
- परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)**
399. शुद्ध वर्तनी वाला शब्द चुनें।
 (a) सूर्पनखा (b) सूर्पनखा
 (c) सूर्पणखा (d) शूर्पणखा
- Lower (2019)**
400. निम्नलिखित में से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है—
 (a) अनुषंगिक (b) आनुषंगिक
 (c) अनुषंगीक (d) अनुसंगिक
- Cane Supervisor (2019)**
401. निम्न में कौन-सा शब्द अशुद्ध है?
 (a) पुष्प (b) पुज्य
 (c) परिस्थिति (d) प्रशंसा
- स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2019)**
402. निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है?
 (a) उत्तरदाई (b) उत्तरदायी
 (c) उत्तरदायी (d) उत्तरदाई
- ग्राम विकास अधिकारी (2018)**
403. निम्न में वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है :
 (a) पुज्य (b) परिक्षण
 (c) प्रान (d) परीक्षा
- ग्राम विकास अधिकारी (2018)**
404. शुद्ध शब्द कौन-सा है?
 (a) चिन्ह (b) कृप्या
 (c) दवाईयाँ (d) निर्भर
405. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द को पहचानिए :
 (a) आर्शीवाद (b) आजीविका

(c) अध्यन

(d) उनी

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

406. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?

(a) स्वतंत्र्य

(b) स्वातंत्र्य

(c) स्वतंत्र्य

(d) स्वातंत्र्य

लोअर-II भर्ती परीक्षा (2018)

407. मानव मात्र को गीता के माहात्म्य से परिचित होना अनिवार्य है। रेखांकित शब्द को शुद्ध करें—

(a) माहात्म्य

(b) माहात्म्य

(c) महात्म्य

(d) महात्म्य

अमीन परीक्षा (2016)

408. शुद्ध वर्तनी चुनिए।

(a) आशीर्वाद

(b) आशीर्वाद

(c) आशिर्वाद

(d) आर्शिर्वाद

गन्ना पर्यावरण परीक्षा (2016)

409. शुद्ध शब्द छाँटए—

(a) अभ्यस्य

(b) अभियस्त

(c) अभ्यस्त

(d) अभ्यस्त

लोअर-III भर्ती परीक्षा (2016)

410. उस 'कवित्री' की कविताएँ बहुत पसंद की गईं।

(a) कवियित्री

(b) कवीत्री

(c) कवयित्री

(d) कवयित्री

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

411. भगू सेठ तो बहुत ही दुश्चरित्र व्यक्ति है।

(a) दुश्चरित्र

(b) दुस्चरित्र

(c) दुच्चरित्र

(d) दुच्चरित्र

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

412. दिन रात अध्यन करके भी वह प्रथम स्थान न प्राप्त कर सका। नीचे दिए गए विकल्पों में से इस वाक्य में रेखांकित शब्द की वर्तनी शुद्ध कीजिये।

(a) आध्यन

(b) अध्ययन

(c) अध्यन

(d) अद्यन

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

413. रेखांकित शब्द की वर्तनी शुद्ध के लिये एक विकल्प चुनिए—

विश्लेषण करने पर जात हुआ कि वह उसकी अपनी रचना नहीं थी।

(a) विश्लेषण

(b) विश्लेषण

(c) विश्लेषण

(d) वीश्लेषण

कम्बाइंड मैडिकल सर्विसेस कम्पटेटिव परीक्षा (2016)

414. (a) प्रिष्ठी

(b) पृष्ठी

(c) पृथकी

(d) प्रिथकी

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

415. (a) कौतहल

(c) कौतोहल

(b) कौतूहल

(d) कोतोहल

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

416. (a) त्रिदोष

(c) तुदोष

(b) तिरदोष

(d) त्रिदोष

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

417. शुद्ध शब्द चुनिए—

(a) घनिष्ठ

(c) घनीष्ठ

(b) घनिष्ठ

(d) घनीष्ठ

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

418. शुद्ध शब्द चुनिए—

(a) रामायन

(c) रमायन

(b) रामायण

(d) रामायङ

UDA/LDA भर्ती परीक्षा (2015)

419. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?

(a) प्रतिनिधि

(c) प्रतिनीधि

(b) प्रतिनीधी

(d) प्रतिनिधी

राजस्व लेखपात्र (2015)

420. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्द की शुद्ध वर्तनी कौन सी है?

अत्याधिक व्यस्तता से जीवन में नीरसता आ जाती है।

(a) अत्यधिक

(c) अत्यधीक

(b) अत्याधिक

(d) अत्याधिक

राजस्व लेखपात्र (2015)

421. सही वर्तनी वाला शब्द है—

(a) सूहद

(c) शुश्रूपा

(b) शुश्रूपा

(d) शसीम

वन रक्षक परीक्षा (2015)

422. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।

(a) कृपया करके खुले पैसे दें।

(b) कृपया खुले पैसे देने की कृपा करें।

(c) कृपया खुले पैसे दें।

(d) कृपया करके खुले पैसे देने की कृपा करें।

क्रिएटिव सहायक परीक्षा (2015)

423. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।

(a) भारत में चंद्रयान-2 लॉन्च किए हैं।

(b) भारत में चंद्रयान-2 लॉन्च की है।

(c) भारत ने चंद्रयान-2 लॉन्च किए हैं।

(d) भारत ने चंद्रयान-2 लॉन्च किया है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

424. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।

- (a) नदियों के पानियों से सिंचाई की जाती है।
- (b) नदियों के पानियों से सिंचाइयाँ की जाती हैं।
- (c) नदियों के पानी से सिंचाइयाँ की जाती हैं।
- (d) नदियों के पानी से सिंचाई की जाती है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

425. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) गन्दा पानी उबालकर पियें।
- (b) पड़ोसी ने मुझे स्वतंत्रता दिवस की बधाई दिया।
- (c) यमुना का पानी गन्दा और प्रदूषित है।
- (d) बच्चा लोग क्रिकेट खेलता है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)**कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)**

426. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) ऑफिस में हर एक और प्रत्येक की चर्चा हो रही थी।
- (b) भूस्खलन से सैकड़ों घर तबाह हो गए।
- (c) यह आदमी सबकी राज जानता है।
- (d) बीज अंकुरित होने वाली है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

427. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) चाय ठंडा हो गया।
- (b) हलवा गरम गरम अच्छी लगती है।
- (c) पकने से पहले जामुन हरी होती है।
- (d) पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

428. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) मनुष्य के शरीर में स्थित आलस्य उसका सबसे बड़ा दुश्मन है।
- (b) वो जा रहे हैं।
- (c) सुवह की हवा स्वास्थ के लिए अच्छी होती है।
- (d) उन्होंने छक कर पेट भर खाना खाया।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

429. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?

- (a) यह एक गंभीर समस्या है।
- (b) मुझे बड़ी भूख लगी है।
- (c) मैंने राम से पूछा।
- (d) वह घर गया।

लोअर II (2019)

(d) भारत ने चंद्रयान-2 लॉन्च किया है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

424. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।

- (a) नदियों के पानियों से सिंचाई की जाती है।
- (b) नदियों के पानियों से सिंचाइयाँ की जाती हैं।
- (c) नदियों के पानी से सिंचाइयाँ की जाती हैं।
- (d) नदियों के पानी से सिंचाई की जाती है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

425. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) गन्दा पानी उबालकर पियें।
- (b) पड़ोसी ने मुझे स्वतंत्रता दिवस की बधाई दिया।
- (c) यमुना का पानी गन्दा और प्रदूषित है।
- (d) बच्चा लोग क्रिकेट खेलता है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)**कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)**

426. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) ऑफिस में हर एक और प्रत्येक की चर्चा हो रही थी।
- (b) भूस्खलन से सैकड़ों घर तबाह हो गए।
- (c) यह आदमी सबकी राज जानता है।
- (d) बीज अंकुरित होने वाली है।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

427. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) चाय ठंडा हो गया।
- (b) हलवा गरम गरम अच्छी लगती है।
- (c) पकने से पहले जामुन हरी होती है।
- (d) पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

428. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) मनुष्य के शरीर में स्थित आलस्य उसका सबसे बड़ा दुश्मन है।
- (b) वो जा रहे हैं।
- (c) सुवह की हवा स्वास्थ के लिए अच्छी होती है।
- (d) उन्होंने छक कर पेट भर खाना खाया।

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2020)

429. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?

- (a) यह एक गंभीर समस्या है।
- (b) मुझे बड़ी भूख लगी है।
- (c) मैंने राम से पूछा।
- (d) वह घर गया।

लोअर II (2019)

430. निम्नलिखित प्रश्न में चार विकल्पों में से, उस सही विकल्प का चयन करें जो शुद्ध वाक्य का सबसे अच्छा विकल्प है।

- (a) हम आप से कहा था।
- (b) हमने आपसे कहाँ था।
- (c) हमने आपसे कहा था।
- (d) हम आप से कहे थे।

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

431. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से, उस सही विकल्प का चयन करें जो शुद्ध वाक्य का सबसे अच्छा विकल्प है।

- (a) एक कविताओं की पुस्तक मुझे दीजिए।
- (b) एक कविता की एक पुस्तक मुझे दे।
- (c) कविताओं की एक पुस्तक मुझे दीजिए।
- (d) कविता की एक पुस्तक मुझे दे दो।

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

432. सही विकल्प का चयनकरें जो शुद्ध वाक्य है।

- (a) वह सारी रात भर पढ़ता रहा।
- (b) वह सारी रात पढ़ता रहा।
- (c) रात भर पढ़ता रहा वह।
- (d) पढ़ता रहा वह सारी रात भर।

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

433. सही विकल्प का चयन करें जो शुद्ध वाक्य है।

- (a) मैंने गुरुजी का दर्शन किया।
- (b) मैंने गुरुजी को दर्शन किया।
- (c) मैंने गुरुजी को दर्शन किए।
- (d) मैंने गुरुजी के दर्शन किए।

राज्य मण्डी परिषद् परीक्षा (2019)

434. निम्न में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?

- (a) मैं घर जाना है।
- (b) मैंने घर जाना है।
- (c) मुझे घर जाना है।
- (d) मैंने घर जाने हैं।

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2019)

435. निम्नलिखित में से अनुपयुक्त शब्द प्रयोग संबंधी अशुद्धि किस वाक्य में है?

- (a) उसने आसन ग्रहण किया।
- (b) पूज्यनीय पिताजी आ गए।
- (c) आज बेहद गर्मी है।
- (d) उसकी जन्मतिथि क्या है?

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

436. तुमको मुझे पढ़ाना है।

अशुद्ध अंश को पहचानिए :

- (a) तुमको
- (b) मुझे
- (c) पढ़ाना
- (d) है।

437. शुद्ध वाक्य है :

- (a) गाय के पूँछ होती है।
- (b) उसकी बेटी हुई।
- (c) गोपाल को लड़का हुआ
- (d) मर्द की दाढ़ी होती है।

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

438. शुद्ध वाक्य छाँटिए :

- (a) हम तो अवश्य ही जाएंगे।
- (b) यह कहना आपकी भूल है।
- (c) मुझसे यह काम संभव नहीं हो सकता।
- (d) शास्त्रीजी मृत्यु से हमें बड़ा दुख हुआ।

वन रक्षक परीक्षा (2018)

439. 'मैंने यह काम कर लेना चाहिए' वाक्य में अशुद्ध अंश है—

- (a) मैंने
- (b) यह काम
- (c) कर लेना
- (d) चाहिए

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

440. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य को पहचानिए।

- (a) मैं तुमको कुछ कहता हूँ।
- (b) मैं और मेरी माँ घूमने जाने वाली हैं।
- (c) प्रत्येक को पाँच-पाँच रुपये दिए जाएँ।
- (d) तुम्हारे को जाना है।

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

441. शुद्ध वाक्य चुनिए—

- (a) वाह! कितना सुंदर दृश्य हैं!
- (b) वाह! कितना सुंदर दृश्य है।
- (c) 'वाह' कितना सुंदर दृश्य है।
- (d) वाह? कितना सुंदर दृश्य है।

लोअर -II भर्ती परीक्षा (2018)

442. अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।

- (a) कामायनी उच्च कोटि का काव्य है
- (b) माता-पिता पुज्यनीय हैं
- (c) आपका भविष्य उज्ज्वल हो
- (d) इस पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

- (a) 'रामचरितमानस' भक्तिकाल
- (b) की सबसे श्रेष्ठतम

(c) रचना मानी जाती है

(d) कोई त्रुटि नहीं

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

444. (a) जब मोहन सभा स्थल

(c) विसर्जन हो चुकी थी

(b) पर पहुँचा तब सभा

(d) कोई त्रुटि नहीं

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

445. (a) पल्स-पोलियो से बचाव के लिए

(b) सबसे सरलतम उपाय

(c) शिशुओं को निरोधक खुराक देना है

(d) कोई त्रुटि नहीं

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

446. (a) भारतवर्ष के पर्वतीय क्षेत्र की

(b) सुन्दरता, सारे विश्व में

(c) सबसे सर्वोत्तम है

(d) कोई त्रुटि नहीं

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

447. (a) कई रेलवे के कर्मचारी भी

(b) इस विराट प्रदर्शन में

(c) भाग लेने के लिए पहुँचे

(d) कोई त्रुटि नहीं

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2016)

448. वाक्यों का वर्गीकरण मुख्यतः कितने प्रकार से होता है?

(a) 2

(b) 3

(c) 6

(d) 8

लोअर 2 भर्ती परीक्षा (2016)

449. "ईश्वर तुम्हें दीर्घायु दे"। अर्थ के आधार पर वाक्य का प्रेद

(a) प्रश्नवाचक वाक्य

(b) विस्मयवाचक वाक्य

(c) इच्छावाचक वाक्य

(d) निषेधवाचक वाक्य

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

450. (a) तुमने अपनी

(b) स्वेच्छा से

(c) यह काम किया है

(d) कोई त्रुटि नहीं

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2016)

451. (a) उसे अनुत्तीर्ण होने का संशय है।

(b) उसे अनुत्तीर्ण होने का शक है।

(c) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशा है।

(d) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशंका है।

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2016)

452. (a) माँ को अपने पुत्र में ममता होती है।

(b) माँ को अपने पुत्र पर ममता होती है।

(c) माँ को अपने पुत्र से ममता होती है।

(d) माँ को अपने पुत्र की ममता होती है।

चकबन्दी लेखपाल (2015)

453. (a) पल्स पोलियो से बचाव के लिए

(b) शिशुओं को निरोधक खुराक देना है।

(c) सबसे सरलतम उपाय

(d) कोई त्रुटि नहीं।

चकबन्दी लेखपाल (2015)

454. मुझे/ रेलगाड़ी में यात्रा करना/अच्छी लगती है/ कोई त्रुटि नहीं।

(a) मुझे

(b) रेलगाड़ी में यात्रा करना

(c) अच्छी लगती है

(d) कोई त्रुटि नहीं।

राजस्व लेखपाल (2015)

455. (a) वह एक महिला विद्वान थी।

(b) वह एक विद्वानी महिला थी।

(c) एक विद्वानी महिला थी वह।

(d) वह एक विद्वाना महिला थी।

राजस्व लेखपाल (2015)

456. मेरा भाई जिसका शादी कल घर गया।

(a)

(b)

(c)

कोई त्रुटि नहीं

(d)

परिचालक भर्ती परीक्षा (2015)

457. (a) गीतों की पुस्तक एक ला दीजिए।

(b) गीतों की एक पुस्तक ला दीजिए।

(c) एक गीतों की पुस्तक ला दीजिए।

(d) एक गीत की पुस्तक ला दीजिए।

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2015)

458. (a) यह काम में आसानी सहित कर सकता हूँ।

(b) यह काम में आसानी से कर सकता हूँ।

(c) यह काम मैं आसानीपूर्वक कर सकता हूँ।

(d) यह काम मैं आसानी के साथ कर सकता हूँ।

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2015)

459. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक प्रेमचन्द द्वारा लिखित नहीं है?

(a) कायाकल्प

(b) जय पराजय

(c) रंगभूमि

(d) प्रेमाश्रय

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

460. निम्नलिखित में से कौन सी रचना तुलसीदास की नहीं है?

(a) रामचरितमानस

(b) गीतावली

(c) श्रीकृष्णगीतावली

(d) भक्तमाल

Lower (2019)

461. हिन्दी का प्रथम समाचार-पत्र कौन-सा था?

(a) कवि वचन सुधा

(b) उदंत मार्त्तण्ड

(c) हिरशचंद्र पत्रिका

(d) सरस्वती

Lower (2019)

462. 'कामायनी' के रचनाकार कौन है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त

(b) रामनरेश त्रिपाठी

(c) रामधारी सिंह दिनकर

(d) जयशंकर प्रसाद

Lower (2019)

463. रचनाकार और रचना का कौन-सा युग सही नहीं है?

(a) तुलसी — रामचरितमानस

(b) कुतबन — मिरगावत

(c) जायसी — पद्मावत

(d) मंडन — चित्रावली

Lower (2019)

464. 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लेखक कौन है?

(a) रामचंद्र शुक्रल

(b) डॉ रामकुमार वर्मा

(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी

(d) रामविलास शर्मा

Lower (2019)

465. 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी साहित्य के किस काल में लिखा गया?

(a) आदिकाल

(b) भक्तिकाल

(c) रीतिकाल

(d) आधुनिक भारत

Lower (2019)

466. 'हुंकार' काव्य संग्रह के रचयिता कौन हैं?

(a) मैथिलीशरण गुप्त

(b) माखन लाल चतुर्वेदी

(c) नागार्जुन

(d) रामधारी सिंह दिनकर

Cane Supervisor (2019)

467. निम्नलिखित में किशोरी लाल गोस्वामी रचित कहानी कौन-सी है?

(a) प्लेग की चुड़ैल

(b) पंडित और पंडितानी

(c) इन्दुमती

(d) ग्यारह वर्ष का समय

लोअर II (2019)

468. हिमतरंगिनी किसका काव्य-संग्रह है?

(a) दिनकर

(b) रामकुमार वर्मा

(c) माखनलाल चतुर्वेदी

(d) भगवतीचरण वर्मा

राज्य मण्डी परिषद भर्ती परीक्षा (2019)

469. केशवदास द्वारा रचित आध्यात्मिक ग्रंथ का नाम क्या था?

(a) रामचंद्रिका

(b) विज्ञान गीता

(c) कविप्रिया

(d) रसिकप्रिया

राज्य मण्डी परिषद भर्ती परीक्षा (2019)

470. ज्ञानदीप किसकी रचना है?

(a) वृद्ध

(b) भूषण

- (c) शेखनबी (d) रहीम

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

471. जयशंकर प्रसाद जी की पहली कहानी कौन-सी थी?

- (a) गुंडा (b) सालवती

- (c) ग्राम (d) मछुआ

राज्य मण्डी परिषद् भर्ती परीक्षा (2019)

472. हिन्दी का प्रथम समाचार-पत्र 1826 ईस्वी में कहाँ से प्रकाशित हुआ था?

- (a) दिल्ली (b) मुंबई

- (c) कलकत्ता (d) मद्रास

कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा (2019)

473. 'आधे-अधूरे' किस विधा की रचना है?

- (a) कविता (b) कहानी

- (c) नाटक (d) उपन्यास

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

474. 'जयद्रथ वध' किस की रचना है?

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

- (c) मैथिलीशरण गुप्त (d) महादेवी

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

475. निम्नलिखित में से छायावादी रचनाकार कौन हैं?

- (a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध

- (c) सुमित्रानन्दन पंत (d) त्रिलोचन

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

476. 'सूरसागर' के रचयिता कौन हैं?

- (a) विद्यापति (b) जयदेव

- (c) तुलसीदास (d) सूरदास

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

477. 'उसने कहा था' कहानी के लेखक हैं :

- (a) किशारीलाल गोस्वामी (b) चंद्रघर शर्मा गुलेरी

- (c) प्रेमचन्द (d) भगवान दास

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

478. 'उर्वशी' किसका काव्य है?

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) मैथिलीशरण गुप्त

- (c) रामधारी सिंह दिनकर (d) महादेवी वर्मा

ग्राम विकास अधिकारी (2018)

479. कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास आदि कौन से काल के संत कवि हैं?

- (a) आदिकाल (b) भक्तिकाल

- (c) रीतिकाल (d) आधुनिककाल

क्षेत्रीय युवा कल्याण परीक्षा (2018)

780. निम्नलिखित में से कौन अष्टछाप का कवि है?

- (a) मीराबाई

- (b) सूरदास

- (c) रसखान

- (d) विद्यापति

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

481. निम्नलिखित में से किसको 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला?

- (a) नामबर सिंह

- (b) प्रेमचन्द

- (c) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

- (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराल'

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

482. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' किस भाषा से सम्बन्धित है?

- (a) हिन्दी से

- (b) संस्कृत से

- (c) तमिल से

- (d) संविधान की आठवीं अनुसूची की सभी भाषाओं से

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

483. 'जूही की कली' कविता के कवि कौन है?

- (a) निराला

- (b) प्रसाद

- (c) महादेवी वर्मा

- (d) पन्त

ग्राम पंचायत अधिकारी (2016)

484. कबीर की भक्ति का स्वरूप क्या है?

- (a) सगुण

- (b) सूफीमतवादी

- (c) वैष्णवमतवादी

- (d) निर्णुण

आबकारी सिपाही भर्ती परीक्षा (2016)

485. महादेवी वर्मा को किस पुस्तक पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

- (a) नीरजा

- (b) निहार

- (c) रश्मि

- (d) यामा

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

486. 'साकेत' महाकाव्य के रचयिता हैं—

- (a) जयशंकर प्रसाद

- (b) सुमित्रानंदन पंत

- (c) मैथिलीशरण गुप्त

- (d) नागार्जुन

राजस्व निरीक्षक परीक्षा (2016)

487. कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित पद्मावत की भाषा है—

- (a) ब्रज

- (b) अवधी

- (c) भोजपुरी

- (d) खड़ीबोली

गन्ना पर्यवेक्षक परीक्षा (2016)

488. 'रत्नावली दोहा संग्रह' किसके द्वारा रचा गया?

- (a) रत्नावली

- (b) तुलसीदास

- (c) विहारी

- (d) रामानंद

लोअर III भर्ती परीक्षा (2016)

489. 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' किसकी रचना है?

- (a) ज्योतिरीश्वर ठाकुर

(b) अयोध्यासिंह उपाध्याय “हरिऔदै”

(c) किशोरीदास बाजपेयी

(d) चंद्रधर शर्मा गुलेरी

लोअर III भर्ती परीक्षा (2016)

490. निम में से कौन जीवनी है?

(a) अतीत के चलचित्र (b) चिन्तामणि

(c) आवारा मसीहा (d) नीड़ का निर्माण फिर

लोअर तृतीय भर्ती परीक्षा (2016)

491. सुमित्रानन्दन पंत को किस कृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

(a) स्वर्णधूलि (b) लोकायतन

(c) युगवाणी (d) चिदम्बरा

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

492. हिन्दी भाषा का प्रथम प्रामाणिक ग्रंथ कौन-सा है?

(a) सतसई (b) रामलला नहचू

(c) पृथ्वीराज रासो (d) आल्हा उदल

कनिष्ठ सहायक परीक्षा (2016)

493. प्रेमचन्द के अधूरे उपन्यास का नाम है—

(a) गबन (b) रंगभूमि

(c) मंगलसूत्र (d) सेवासदन

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

494. “कामायनी” महाकाव्य के रचयिता कौन हैं?

(a) सूरदास (b) प्रेमचंद

(c) जयशंकर (d) कबीरदास

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती परीक्षा (2016)

495. “ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होया।” इन पंक्तियों के रचयिता का नाम बताएँ।

(a) मीराबाई (b) कबीरदास

(c) तुलसीदास (d) जायसी

वन रक्षक भर्ती परीक्षा (2015)

496. खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य कौन-सा था?

(a) कामायनी (b) प्रिय प्रवास

(c) साकेत (d) नीरजा

असिस्टेंट एकाउन्टेंट भर्ती परीक्षा (2015)

497. ‘ठिरुता हुआ गणतंत्र’ इस व्यंग्य संग्रह के व्यंग्यकार हैं—

(a) मैथिलीशरण गुप्त

(b) भवानीप्रसाद मिश्र

(c) धर्मवीर भारती

(d) हरिशंकर परसाई

चकबन्दी लेखपाल (2015)

498. निम्नलिखित रचनाओं को उनके साहित्य की विधा के साथ सुमेलित करके सही उत्तर चिन्हित करे :

- | | |
|----------------|------------|
| A. निर्मला | 1. नाटक |
| B. चिता के फूल | 2. कहानी |
| C. वरदान | 3. निबंध |
| D. भारतदुर्दशा | 4. उपन्यास |

A	B	C	D
---	---	---	---

(a) 1	2	3	4
-------	---	---	---

(b) 4	2	1	3
-------	---	---	---

(c) 4	1	2	3
-------	---	---	---

(d) 4	3	2	1
-------	---	---	---

चकबन्दी लेखपाल (2015)

499. भारतेन्दु हरिश्चंद्र का कौन-सा नाटक बंगला भाषा से अनूदित है?

- | | |
|---------------------|----------------|
| (a) विद्यासुन्दर | (b) चंद्रावली |
| (c) नयी चाल में ढली | (d) कविवचनसुधा |

चकबन्दी लेखपाल (2015)

500. पुरस्कृत पुस्तक ‘हवा में हस्ताक्षर’ किस साहित्यकार की रचना है?

- | |
|----------------------|
| (a) डॉ कैलाश बाजपेयी |
| (b) डॉ रघवंश |
| (c) मृदुला गर्ग |
| (d) निर्मल वर्मा |

चकबन्दी लेखपाल (2015)

501. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना मैथिलीशरण गुप्त-कृत नहीं है?

- | | |
|--------------|------------|
| (a) जयद्रथवध | (b) यशोधरा |
| (c) नीलदेवी | (d) साकेत |

चकबन्दी लेखपाल (2015)

502. साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद’ निबन्ध के लेखक हैं—

- | |
|---------------------------|
| (a) आचार्य शुक्ल |
| (b) डॉ नगेन्द्र |
| (c) हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| (d) महावीर प्रसाद |

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

503. छायावाद को प्रतिबिम्बवाद किसने कहा?

- | |
|-----------------------|
| (a) नन्दुलारे बाजपेयी |
| (b) रामचन्द्र शुक्ल |
| (c) रामविलास शर्मा |
| (d) हजारी प्रसाद |

स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा (2015)

उत्तरमाला

1.	a	2.	d	3.	a	4.	d	5.	b	6.	a	7.	c	8.	a	9.	c	10.	b
11.	d	12.	d	13.	c	14.	b	15.	b	16.	a	17.	c	18.	c	19.	c	20.	c
21.	a	22.	a	23.	d	24.	b	25.	d	26.	c	27.	c	28.	c	29.	a	30.	c
31.	c	32.	b	33.	d	34.	a	35.	a	36.	c	37.	d	38.	a	39.	c	40.	b
41.	c	42.	c	43.	c	44.	c	45.	c	46.	b	47.	a	48.	c	49.	d	50.	a
51.	a	52.	c	53.	d	54.	a	55.	c	56.	d	57.	d	58.	a	59.	d	60.	c
61.	c	62.	b	63.	c	64.	a	65.	c	66.	a	67.	b	68.	a	69.	a	70.	a
71.	d	72.	a	73.	c	74.	d	75.	a	76.	b	77.	b	78.	b	79.	c	80.	a
81.	d	82.	b	83.	b	84.	c	85.	b	86.	b	87.	c	88.	b	89.	b	90.	a
91.	a	92.	b	93.	d	94.	c	95.	b	96.	c	97.	d	98.	b	99.	a	100.	b
101.	d	102.	a	103.	b	104.	c	105.	d	106.	c	107.	d	108.	d	109.	c	110.	b
111.	a	112.	d	113.	a	114.	b	115.	c	116.	b	117.	b	118.	b	119.	b	120.	d
121.	c	122.	d	123.	a	124.	d	125.	b	126.	d	127.	a	128.	c	129.	a	130.	d
131.	a	132.	c	133.	b	134.	d	135.	b	136.	c	137.	c	138.	b	139.	b	140.	a
141.	c	142.	c	143.	c	144.	c	145.	d	146.	c	147.	a	148.	c	149.	a	150.	b
151.	a	152.	c	153.	c	154.	c	155.	d	156.	a	157.	c	158.	a	159.	c	160.	d
161.	b	162.	b	163.	b	164.	c	165.	c	166.	b	167.	c	168.	a	169.	d	170.	a
171.	c	172.	d	173.	c	174.	b	175.	c	176.	c	177.	d	178.	d	179.	d	180.	a
181.	a	182.	c	183.	b	184.	a	185.	a	186.	a	187.	b	188.	b	189.	c	190.	i
191.	a	192.	c	193.	a	194.	b	195.	c	196.	b	197.	a	198.	b	199.	c	200.	d
201.	b	202.	c	203.	d	204.	d	205.	c	206.	b	207.	d	208.	c	209.	a	210.	c
211.	a	212.	d	213.	c	214.	c	215.	c	216.	c	217.	c	218.	d	219.	a	220.	d
221.	a	222.	b	223.	c	224.	b	225.	a	226.	b	227.	b	228.	c	229.	c	230.	d
231.	b	232.	a	233.	c	234.	a	235.	c	236.	b	237.	a	238.	b	239.	c	240.	b
241.	c	242.	b	243.	a	244.	a	245.	b	246.	a	247.	b	248.	a	249.	a	250.	i
251.	d	252.	d	253.	a	254.	b	255.	c	256.	d	257.	d	258.	c	259.	d	260.	c
261.	c	262.	a	263.	b	264.	b	265.	b	266.	b	267.	b	268.	c	269.	c	270.	b
271.	d	272.	c	273.	b	274.	a	275.	b	276.	d	277.	c	278.	a	279.	b	280.	i
281.	a	282.	a	283.	c	284.	c	285.	b	286.	a	287.	b	288.	b	289.	b	290.	c
291.	a	292.	d	293.	d	294.	c	295.	d	296.	b	297.	b	298.	d	299.	d	300.	i
301.	d	302.	d	303.	b	304.	d	305.	b	306.	a	307.	d	308.	b	309.	a	310.	i
311.	a	312.	a	313.	c	314.	d	315.	c	316.	a	317.	a	318.	a	319.	a	320.	i
321.	d	322.	a	323.	c	324.	a	325.	a	326.	c	327.	d	328.	a	329.	d	330.	i
331.	a	332.	b	333.	d	334.	b	335.	a	336.	d	337.	c	338.	a	339.	b	340.	i
341.	b	342.	d	343.	c	344.	d	345.	a	346.	c	347.	c	348.	c	349.	d	350.	c
351.	d	352.	a	353.	b	354.	b	355.	c	356.	a	357.	d	358.	c	359.	d	360.	i
361.	b	362.	d	363.	c	364.	b	365.	a	366.	d	367.	c	368.	c	369.	d	370.	i

371.	a	372.	a	373.	b	374.	b	375.	b	376.	b	377.	c	378.	d	379.	d	380.	c
381.	d	382.	c	383.	d	384.	d	385.	c	386.	b	387.	d	388.	d	389.	d	390.	d
391.	c	392.	a	393.	a	394.	c	395.	b	396.	c	397.	b	398.	c	399.	d	400.	b
401.	b	402.	b	403.	d	404.	d	405.	b	406.	b	407.	b	408.	a	409.	c	410.	d
411.	a	412.	b	413.	b	414.	b	415.	b	416.	d	417.	b	418.	b	419.	a	420.	a
421.	b	422.	c	423.	d	424.	d	425.	a	426.	b	427.	d	428.	a	429.	b	430.	c
431.	c	432.	b	433.	d	434.	c	435.	b	436.	a	437.	a	438.	d	439.	a	440.	c
441.	b	442.	b	443.	b	444.	c	445.	c	446.	c	447.	a	448.	a	449.	c	450.	a
451.	d	452.	c	453.	c	454.	c	455.	b	456.	b	457.	b	458.	b	459.	b	460.	d
461.	b	462.	d	463.	d	464.	c	465.	a	466.	d	467.	c	468.	c	469.	b	470.	c
471.	c	472.	c	473.	c	474.	c	475.	c	476.	d	477.	b	478.	a	479.	b	480.	b
481.	a	482.	d	483.	a	484.	d	485.	d	486.	c	487.	ba	488.	a	489.	b	490.	c
491.	d	492.	c	493.	c	494.	c	495.	b	496.	b	497.	d	498.	d	499.	a	500.	a
501.	c	502.	b	503.	c														